सहस्त्रबाढ़नि

(उपन्यास)

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in) पेटारसँ

ISSN 2229-547X VIDEHA *सम्पादक:* गजेन्द्र ठाकुर।



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
 विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.
रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).
ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॊयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

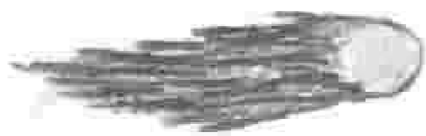
Gajendra Thakur's Sahasrabadhani [KuruKshetram-Antarmanak (Vol.II)] - Maithili Novel from Videha www.videha.co.in Archive.

सहस्त्रबाढ़नि

उपन्यास

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक (खण्ड-२)

सहस्रबाढ़नि 2.3



गजेन्द्र ठाकुर

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

Ist Hardbound edition as part of Kurukshetram Antarmanak (single volume) 2009

Ist paperback edition 2009

2nd paperback edition 2012 of Gajendra Thakur's Sahasrabadhani (KuruKshetram-Antarmanak (Vol.II)- Maithili Novel-published by Shruti Publication, 8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi -110008 Tel.: 25889656, 25889658 Fax: 011-25889657

ISBN:978-93-80538-16-7
Price: Rs. 100/- (INR)-for individual buyers
US $ 40 for libraries/ institutions (India & abroad).

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002
Distributor : Pallavi Distributors, nirmali. Ph. 09572450405

समर्पण

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे
तहिये बुझने रही जे
त्याग नहि कएल होएत
रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

-पिताक प्रिय-अप्रिय सभटा स्मृतिकेँ समर्पित

आमुख

गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डमे विभाजित *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मे एकहि संग कठिनसँ कठिन विषयपर सुचिन्तित विश्लेषण भेटत आ उपन्यासक जटिल कथा केर गुत्थी सेहो भेटत सुलझाएल आ संगहि प्रेमक कविता आ प्रकृतिक गीत सेहो। सात खण्ड एहि प्रकार छन्हि-

खण्ड-१ प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना
खण्ड-२ उपन्यास-(सहस्रबाढ़नि)
खण्ड-३ पद्य-संग्रह-(सहस्त्राब्दीक चौपड़पर)
खण्ड-४ कथा-गल्प संग्रह (गल्प गुच्छ)
खण्ड-५ नाटक-(संकर्षण)
खण्ड-६ महाकाव्य- (१. *त्वञ्चाहञ्च* आ २. *असञ्जाति मन*)
खण्ड-७ *बालमंडली* किशोर-जगत

सभसँ महत्वपूर्ण बात ई जे सभ विषयक पाठकक आ पाठिकाक लेल एतए किछु ने किछु भेटबे करत । पुछलियन्हि जे एहन संरचना किएक तँ जे किछु कहलन्हि ताहिसँ लागल जे ई हिन्दी केर *तार-सप्तक* आ तमिलक *कुरुक्षेत्रम्* केर बीच मे कतहु अपन जगह बनेबाक प्रयास कऽ रहल छथि । फराक एतबे जे हिन्दी आ तमिल मे कएक गोटे मिलि कए संकलित भेल छथि एकटा जिल्दमे, आ एतए कएक लेखकक द्वारा विभिन्न विधा केर रचना नहि रहि हिनके अपन रचना पोथीमे उपलब्ध कराओल गेल अछि ।

कतेको पंक्ति भरिसक पाठकक मोनमे ग्रंथित-मुद्रित भऽ जएतन्हि, जेना कि

''ढहैत भावनाक देबाल
खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

आकांक्षाक बखारी अछि भरल
प्रतीक बनि ठाढ़
घरमे राखल हिमाल-लकड़ीक मन्दिर आकि
ओसारापर राखल तुलसीक गाछ

प्रतीक सहृदयताक मात्र''
अथवा , निम्नोक्त पंक्ति-येकेँ लऽ लिअ :

''सुनैत शून्यक दृश्य
प्रकृतिक कैनवासक
हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द
क्यो देखत नहि हमर ई चित्र अन्हार मे
तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर''

मिथिलेक नहि अपितु भारतक कतेको संस्कृतिक प्रभाव देखल जा सकैछ हिनक कथा-कवितामे। एहिसँ मैथिली क्रियाशील रचनाक परिदृश्य आर बढ़ि जाइछ, आ नव-नव चित्र, ध्वनि आ कथानक सामने आबि जाइत अछि ।

कवि कोन *मन्दाकिनी* केर खोजमे छथि जे कहैत छथि-

''मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
देखल आइ पृथ्वीक ऊपर...''

अपन विशाल भ्रमणक छाप लगैछ रचनामे नीक जकाँ प्रतीत होइत अछि । आ आर एकटा बात स्पष्ट अछि कोषकार गजेन्द्र ठाकुर आ रचनाकार गजेन्द्र ठाकुर भिन्न व्यक्ति छथि, व्यक्तित्वमे सेहो फराक... जतए कोशकारितामे सम्पादकत्व तथा *टेक्नोलोजी* सँ सम्बन्धित व्यक्तिक छाया भेटिते अछि, मुदा सृजनक मुहुर्तमे से सभटा हेरा जाइत छथि ।

एहिमे सँ कतेको *टेक्स्ट* ओ रखने छथि इन्टरनेटमे मैथिलीक बढ़ैत पाठककेँ ध्यानमे राखि, जेना कि *विदेह-सदेह* अछि http://videha123.wordpress.com/ मे, आ देवनागरी आ तिरहुता दुन्नु लिपिमे । जे क्यो मिथिलाक्षरक प्रेमी छथि तनिका सब लेखेँ तँ ई विरल उपहारे रहत ।

अनेको रचनामे मात्र गोल-मटोल कथे नहि, राजनीतिक भाष्य सेहो लखा दैत अछि। ताहिमे हिनका कोनो हिचकिचाहटि नहि छन्हि। ओना देखल जाए तँ *कुरुक्षेत्र* क कतेको महारथी छलाह = प्रत्येक वीर-योद्धा अपन-अपन क्षेत्र आ विधाक प्रसिद्ध पारंगद व्यक्ति छलाह, क्यो कतेको अक्षौहिणी सेनाक संचालनमे, तँ

क्यो तीरन्दाजीमे, आदि आदि । सभ जनैत छलाह जे धर्म आ अधर्मक भेद की होइछ मुदा तैयो सभ क्यो जेना आसन्न विपर्यायक सामने निरुपाय भऽ गेल छलाह। आजुक सन्दर्भमे सेहो कथा मे तथा व्याख्यामे एहन परिस्थितिक झलक देखल जाइत अछि । सैह एहि *महा-पाठ* क (मेटाटेक्सट) खूबी कहब। नहि तँ ओ कियेक लिखताह-

> ''देखैत देशवासीकेँ पछाड़ैत
> मंत्र-तंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल
> गुन्धुनी बला स्वप्न
> बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक
> अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान
> दमसाइत मालिकक स्वर तोड़ैत छैक ओकर एकान्त
>
> कारिख चित्रित रातिक निन्न
> टुटैत-अबैत-टुटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य
> ...''

एहि महापाठकेँ एकटा *एक्सपेरीमेन्ट* केर रूपमे देखी तँ सेहो ठीक, आ सप्तर्षि-मंडलक निचोड़ अथवा सप्त-काण्डमे विभाजित आधुनिक महा काव्य रूपमे देखी तँ सेहो ठीक हएत। जेना पढ़ी, सामग्री एहिमे भरपूर अछि, भरिसक किछु अत्युच्च मानक लागत, आ किछु किनको तत्तेक नहि पसिन्न पड़तन्हि । मुदा एहि ग्रन्थ निचयकेँ पाठक अवश्य स्वागत करताह, आ नवीन लेखक वर्गकेँ एकटा नव दिशा सेहो भेटतन्हि।

मैसूर, ९ जून २००९

उदय नारायण सिंह ''नचिकेता''
निदेशक,
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

उपन्यास

सहस्त्रबाढ़नि

‘एक दिन कलितकँ देखलहुँ जे ठेहुनियाँ मारने आगू जा रहल छथि । आँगनसँ बाहर भेला पर जतए आँकर-पाथर देखलन्हि ततए ठेहुन उठा कऽ, मात्र हाथ आ पएरपर आगू बढ़ए लगलाह’, पत्नीकँ मोन पड़लन्हि।

“एक दिन हम देखलहुँ जे ओ देबालकँ पकड़ि कऽ खिड़की पर ठाढ़ हेबाक प्रयासमे छथि । हमरो की फूरल जे चलू आइ छोड़ि दैत छियन्हि। स्वयम प्रयास करताह । दू बेर प्रयासमे ऊपर जाइत-जाइत देवालकँ पकड़ने-पकड़ने कोच पर खसि गेलाह । हाथ पहुँचबे नहि करन्हि । फेर तेसर बेर जेना फाँगि गेलाह आ हाथ खिड़की पर पहुँचि गेलन्हि आ एकदम्मे ठाढ़ भऽ गेलाह’, झिंगुर बाबूकँ एकाएकी मोन पड़लन्हि।

“एक दिन हम एक-दू बाजि कऽ हिसाब कऽ रहल छलहुँ । हम बजलहुँ एक तँ ई बजलाह, हूँ । फेर हम बजलहुँ दू तँ ई बजलाह, ऊ । तखन हमरा लागल जे ई तँ हमर नकल उतारि रहल छथि’।

“एक दिन खेत परसँ अएलहुँ आ नहा-सोना भोजन कऽ खखसि रहल छलहुँ। अहाहाऽ केलहुँ तँ लागल जेना कलित सेहो अहाहाऽ केलथि । घुरि कऽ देखलहुँ तँ ओ बैसि कऽ गेंदसँ खेला रहल छलाह । दोसर बेर खखसलहुँ तँ पुनः ई खखसलाह । हम कहलहुँ जे आर किछु नहि, ई हमर नकल कऽ रहल छथि । दलान पर सभ क्यो हँसऽ लागल । फेर तँ जे आबए कहए- कलित ऊहुहूँ, तँ जवाबमे ईहो ऊहूहूँ कहथि, एकटा दोसरे तरीकासँ।”

जाहि बालककँ झिंगुरबाबू पहिल-पहिल अन्यमनस्क पड़ल आ मात्र सपनामे हँसैत देखलखिन्ह से तकर बाद ठेहुनिया मारैत, फेर चलैत आब शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कऽ रहल छन्हि । हुनका अखनो मोन पड़ि रहल छलन्हि जे कोना ठेहुनिया दैत काल नेनाक हाथ आगू नहि बढ़ैक आ ओ बेंग जकाँ पाछूसँ सोझे आगू फाँगि जाइत छल । पूरा बेंग जकाँ- अनायासहि ओ हँसि उठलाह ।

पत्नी पूछि देलखिन्ह “कोन बात पर मुस्की देलहुँ ?”, तँ पहिने तँ ओ ना-नुकुर केलन्हि, फेर सभटा मोनमे सोचल-घुरमल गप कहि देलखिन्ह आ सुनि लेलन्हि । आब तकरा बाद गपसँ गप निकलऽ लागल।

सन् १८८५ ई.। झिंगुर ठाकुरक घरमे एकटा बालकक जन्म भेल रहए ।

ई वर्ष कांग्रेस पार्टीक स्थापनाक कारण बादक समयमे एकटा महत्त्वपूर्ण घटनाक रूपमे वर्णित होमएबला छल । अंग्रेजी राज अपनाकँ पूर्णरूपसँ स्थापित कऽ चुकल रहए । राजा-रजवाड़ासभ अपनाकँ अंग्रेजक मित्र बुझवामे गौरवक अनुभव करैत छलाह । शैक्षिक जगतमे कांग्रेस शीघ्रहि उपद्रवी तत्वक रूपमे प्रचारित भए गेल रहए । संस्कृतक रटन्त विद्याक स्वरूप खतम होअएबला छल । सरकारी पद बिना आङ्ल सिखने भेटब असंभव छल । सरकारी पदक तात्पर्य राजा-रजवाड़ाक वसूली कार्यसँ संबंधित आ ओतबहि धरि सीमित छल ।

तखन बालककेँ संस्कृत शिक्षाक मोहसँ दूर राखल गेल । परिवारमे अंग्रेजीक प्रवेश प्रायः नहियेक बराबर छल आ ताहि कारणसँ परिवार एक पीढ़ी पाछू चलि गेल रहए । मुदा झिंगुर बाबू अपन पुत्रक लेल एकटा कलकतियाबाबू मास्टरकेँ राखि शिक्षाक व्यवस्था कएलन्हि । तदुपरांत दरिभङ्गामे एकटा दोसर बंगालीबाबू बालककेँ अंग्रेजीक शिक्षा देलखिन्ह । बालक कलित शनैः शनैः अपन चातुर्यसँ मंत्रमुग्ध करबाक कलामे पारंगत भऽ गेलाह।

"हम जे सुनेलहुँ तखन हिनकर वयस होएतन्हि, छह आकि सात मास"।

"हम जे सुनेलहुँ तखन उमरि कतेक हेतन्हि, बड़ बेसी तँ नौ आकि दस मासक"।

पत्नी सासु-ससुर वा बाहरी सदस्य नहि रहला पर सोझे -'गप सुनलहुँ आकि ई करू वा ओ करू बजैत छलीह । मुदा सासु-ससुरक सोझाँ बजैत रहथि-सुनैत छथिन्ह, फलना कहैत छलैक । आ फेर झिंगुर बाबू की कम छलाह. ओहो ओहिना गीताक दर्शन-काजक लेल काजक अनुकरणमे उत्तर देथि । मुदा एकांतमे फेर सभ ठीक ।

पुनः मुस्कुरा उठलाह झिंगुर बाबू, ई प्रण मोने-मोन लेलथि जे कलितकेँ एहि जंजालसँ मुक्त करेतथि, ओहो तँ बूझथु जे पिता कोनो पुरान-धुरान लोक नहि छथिन ।

पत्नी पुनः पुछलथिन्ह जे आब कोन बात पर मुस्की छूटल । मुदा एहि बेर झिंगुर बाबू कन्नी काटि गेलाह । मुस्की दैत दलान दिस बहरा गेलाह, ओतए किछु गोटे अखड़ाहाक रख-रखाबक बात कऽ रहल छलाह । भोरहा कातक अखड़ाहाक गपे किछु आर छल । भोरे-भोर सभ तुरियाक बच्चा सभ, जवान -सभ पहुँचि जाइत छल । एकदम गद्दा सन अखड़ाहा, माटि कऽ कोरि आ चूड़ि कऽ बनाएल । बालक कलितकेँ छोड़ि सभ बच्चा ओतए पहुँचैत छल । झिंगुर बाबूकेँ एहि गपपर कचोट होइन्हि तँ आन लोक सभ कहथिन्ह, जे से की कहैत छी । अहाँ हुनका कोनो उद्देश्यक प्राप्ति लेल अपनासँ दूर रखने छी तँ एहिमे कचोट कथीक । एकौरसँ ठाकुर परिवारक मात्र एक घर मेंहथ आएल आ आब ओहिसँ पाँचटा परिवार भऽ गेल अछि । डकही माँछक हिस्सामे एकटा टोलक बराबरी ठकुरपट्टीकेँ भेटि गेल छैक। कलितक तुरियाक बच्चाकेँ लऽ कऽ आठटा परिवार अछि ठकुरपट्टीमे । अखनेसँ बच्चा सभकेँ मान्यता दऽ देल गेल छैक ।

तखने एकौरसँ एकटा समादी अएलाह आ भोजपत्रपर तिरहुतामे लिखल संदेश देलखिन्ह । झिंगुर बाबू अँगनासँ लोटा आ एक डोल पानि हुनका देलखिन्ह आ पत्र पढ़ए लगलाह । प्रायः कोनो उपनयनक हकार छलन्हि ।

'परतापुरक सभागाछी देखि कऽ जाएब, ई आदेशपूर्ण आग्रह झिंगुर बाबू समादीकेँ देलखिन्ह । एकटा पूर्वजसँ मूल-गोत्रक माध्यमसँ जुड़ल दियादक प्रति अनायासहि एकत्त्वक प्रेरणा भेलन्हि । फेर आँगनमे पत्र पढ़ब प्रारंभ कएलन्हि।

॥श्रीः॥

स्वस्ति हरिवदराध्यश्रीमस्तु झिंगुर ठाकुर पितृचरण कमलेषु इतः श्री गुलाबस्य कोटिशः प्रणामाः संतु । शतं कुशलम् । आगाँ समाचार जे हमर सुपुत्र श्री गड़ेस आ चन्द्रमोहनक उपनयन संस्कारक समाचार सुनबैत हर्षित छी । अहाँक प्रपितामह आ हमर प्रपितामह संगहि पढ़लन्हि । अपन गोत्रीयक समाचार लैत-दैत रहबाक निर्देश हमर पितामह देने गेल छलाह । हर्षक वा शोकक कोनो घटनाक सूचना हमरा गामसँ अहाँक गाम आ अहाँक गामसँ हमरा गाम नहि अएने आ विशेष कऽ अशोचक विचार नहि कएने भविष्यमे अनिष्टक डर अछि । संप्रति अपने पाँचो ठाकुर गुरुजनक तुल्य पाँच पांडवक समान समारोहमे आबि कृतार्थ करी । अहींकेँ अपन ज्येष्ठ पुत्रक आचार्य बनेबाक विचार कएने छी । परतापुरक सभागाछीक पंचकोशीमे अपने सभ गेल छी, तेँ बहुत रास लोक गप-शपक लेल लालायित सेहो छथि । अगला महिनाक प्रथम सोमकेँ ज्योँ आबि जाइ तँ सभ कार्य निरन्तर चलैत रहत । बुधसँ प्रायः प्रारम्भिक कार्य सभ शुरु भऽ जएत। इति शुभम् ।

बलान धारक कातमे परतापुरक चतरल-चतरल गाछ सभ आ तकर नीचाँ सभागाछी । बलानक धार खूब गहींर आ पूर्ण शांत । ई तँ बादमे हिमालयसँ कोनो पैघ गाछ बलानमे खसल आ पिपराघाट लग सोझ रहलाक बदला टेढ़ भऽ धारकेँ रोकि देलक आ एकटा नव धार कमलाक उत्पत्ति भेल । बलान झंझारपुर दिस आ कमला- मेंहथ, गढ़िया आ नरुआर दिस । बलान गहींर आ शांत, रेतक कतहु पता नहि; मुदा कमला फेनिल, विनाशकारी । बाढ़िक संग रेत कमला आनए लगलीह । ग्रीष्म ऋतुमे बलान अपन पूर्व रूप धेने रहैत छथि, बिना नाहक पार केनाइ कठिन । किंतु एहि मासमे कमलामहारानीकेँ पएरे लोक पार करैत छथि । सभागाछीक सभटा चतरल गाछ बाढ़िक प्रकोपमे सुखा गेल । चारू दिस रेत । आ सभागाछी उपटि गेल । चलि गेल सभटा वैभव सौराठ । झिंगुर बाबूक कालमे परतोपुरक ध्रुवसँ पंचकोशी नापल जाइत छल ।

कलित दरिभङ्गासँ परसू आबि जएताह, तखन हुनका लऽ कऽ एकौर जाएब । बेचारे बहुत दिन तपस्या कएलन्हि । एहि बेर मामा गाम, दीदी गाम सभ ठाम घुमा देबन्हि । सभकेँ मोन लागल छैक।

पिता-पुत्र एकौर पहुँचलाह । ई गाम कोनो तरहेँ आन जकाँ नहि लगलन्हि । जेना जमघट लगला पर शास्त्रार्थक परम्परा रहल अछि, तहिना विद्वतमण्डलीमे विभिन्न विषय पर चर्चा हुअए लागल । चर्चामे अंग्रेजी शासन आ भारतवासीक सैन्य अभियान सेहो रहल । मँगरूबाबू लाल कोट पहिरि कए कतेक लड़ाइ लड़ल छलाह । १८६७-६८ क अबीसीनिया युद्धमे सर चार्ल्स नेपियरक संग कोनाकेँ अभियानमे ओ गेल छलाह, तकर वर्णन विस्तृत रूपमे देबए लगलाह मँगरूबाबू । द्वितीय अफगान-युद्धमे कोना समयक अभावमे सेनाकेँ लालक बदला

मलिछह वर्दी लगाबए पड़लैक तकर वर्णन सेहो देलन्हि । यैह वर्दी बादमे खाकी रंगक रूपमे प्रसिद्ध भऽ गेल । एनफील्ड रायफलक खिस्सा जे १८५७ क स्वतंत्रता संग्राममे परिणत भेल, केर बदलामे बेश नमगर स्नाइडर रायफल जे १८८७ मे देल गेल । मँगरू बाबू कांग्रेसक चर्चा सेहो केलन्हि ।ओम्हर झिंगुर बाबू भोज-भातक फेहरिस्ट आ एस्टीमेट बनबए लगलाह । कलित सेहो अपन तुरियाक विद्यार्थी सभक संग मगन भऽ गेलाह । ओहि भीड़मे राजे गामक फन्नू बाबू सेहो आएल छलाह । एकौरमे हुनकर बहिन-बहिनोइ रहैत छलखिन्ह । ताहि द्वारे एतए एनाइ-गेनाइ ओ किछु बेशी करैत छलाह । कलितकेँ एहिसँ पहिने ओ नहि देखने रहथि । एकाएक उत्सुकता भेलन्हि आ कलितक विषयमे पूछपाछ केलन्हि । ई जानि जे कलित झिंगुरबाबूक सुपुत्र छथि, क्षणहिमे झिंगुरबाबू लग घुसकि कऽ चलि अएलाह । वार्त्तालापक क्रममे झिंगुर बाबू सँ ईहो पता लगलन्हि जे जमीन्दारीक पर्मानेन्ट सेटलमेन्टक बाद दरिभङ्गा राजकेँ वसूलीक लेल परगनाक आधारपर मिथिला क्षेत्रसँ कर वसूलीक अधिकार प्राप्त भेल आ पढ़ाइक बाद कलित कटिहारमे कर वसूलीक कार्यक हेतु जएताह । एम्हर अंग्रेजीक शिक्षा कलित पूर्ण कऽ लेने छलाह । पता लागल जे फन्नू बाबू अपन बचियाक हेतु योग्य वरक ताकिमे छथि । तखन विचार भेल जे परतापुरक सभागाछीमे अगिला महिनामे फन्नू बाबू आबथि आ झिंगुर बाबूकें आतिथ्यक अवसर भेटन्हि । मुदा बीचहिमे दियाद सभ झिंगुर बाबूकँ तेना ने घेरलकन्हि जे कलितक विवाह फन्नू बाबूक बचियासँ ठीक करैत आ भराममे सिद्धांत करेनहि ओ गाम पहुँचलाह । डरो होइन्हि जे कनियाँ ने कतहु रपटा दऽ देथि । मुदा विवाहक बात सुनितहि कनियाँ खुशीसँ बताहि जकाँ भऽ गेलीह । पछिला चारि दिनसँ जतेक गुनधुनी लागल रहन्हि सभटा खतम भऽ गेलन्हि।

पाँव-पैदल किंवा कटही गाड़ी यैह छल यातायातक साधन । महफा सेहो सबारी छल सेहो बेश नक्काशीवला आ भरिगर । वर महफा पर आ बरियातीमे जे युवा रहथि से पएरे । आ जे कनेक उमरिगर रहथि से कटही गाड़ीपर विदा भेलाह । दरबज्जापर स्वागत भेलन्हि । सुगन्धि, फूल, जलपान । ई सभ बरियातीमे किछु गोटेकेँ अनसोहाँत लगलन्हि । बरियाती लोकनिक गप्प सरक्का चलैत रहल । शास्त्रार्थ आ चुटुक्का । अँगनामे परिछनि आ विधि-व्यवहार तँ दलान पर गप्पक फूहारि । बीच-बीचमे क्यो आबि कऽ किछु ताकथि-बाजथि आ फेर कतहु जाथि । गहना कतए छैक । घोघट के देथिन्ह । घोघटाही नूआ नहि भेटि रहल अछि । एहिसँ विवाहक क्रम आ प्रगतिक विषयमे बरियाती लोकनिकेँ सेहो पता चलैत रहैत छलन्हि। एवम् प्रकारे आँगन आ दरबज्जा दुनू ठाम विवाहक कार्यक्रम भोरक पाँच बजे धरि चलैत रहल । वर आ कनियाँक हाथमे ब्रह्मचारी डोरी बान्हि देल गेल, जे चारि दिन धरि रहत । तकर बाद विवाह पूर्ण भेल ।

विदाइक दिन तका कए झिंगुर बाबू पठेलखिन्ह आ कलित अपन गाम आबि गेलाह । आब हुनकर कटिहार जएबाक तैयारी कएल गेलन्हि । अश्रुपूरित नेत्रसँ माए आ ग्रामीणसँ विदा लेलाक बाद कलित अपन रोजगार पर गेलाह।

कोशीक विभीषिकासँ त्रस्त क्षेत्र होइत कटिहार पहुँचि कऽ कलित अपन काजमे शीघ्रहि पारंगत भऽ गेलाह । काजक अधिकता भेलापर अपन पितियौत भाए आ भातिजकेँ सेहो बजा लेलन्हि। एहि क्षेत्रक लोकक बीचमे थोड़बेक दिनमे अपन प्रतिष्ठा बढ़ा लेलथि कलित । एतए जमीन्दारीक परमानेंट सेटलमेन्टक विषयमे पुरान अनुभव बड़ खराप छल । वसूली पदाधिकारीक भ्रष्ट तरीका सभकेँ कलित बदलि देलखिन्ह । मुदा कालक लग किछु आरे लिखल रहए । कलितक द्विरागमनक पहिनहि हुनकर माए गुजरि गेलखिन्ह । बड़ड रास सौख-मनोरथ लेने चलि गेलीह माए । कखनो कलितकेँ कहैत छलखिन्ह जे तोरा कनियाँसँ खूब झगड़ा करबौक तखन देखबौक जे तूँ हमर पक्ष लैत छँह आकि कनियाँक। आब झिंगुर बाबू सेहो अन्यमनस्क रहए लगलाह । कलित कहबो केलखिन्ह जे सँगहि चलू, मुदा भरि जन्म जतए रहलाह ओहि ठामकेँ छोड़थु कोना ?

तेसर साल कलितक द्विरागमन भेलन्हि आ तकरा बादे झिंगुर बाबू निश्चिंत भऽ सकलाह । जाइत-जाइत कलितकेँ कहैत गेलखिन्ह जे तोँ तँ बेशीकाल गामसँ बाहरे रहलह । हमरा सबहक सेवा तँ ई बुचिया केलक । अपन बहिनक भार आब तोहीँ उठाबह । हम सोचने छलहुँ जे एकर विवाह दान करबाइए कऽ निश्चिंत हएब । मुदा तोहर माए हमरा तोड़ि देलन्हि । आब तूँ अपना जोगर भइए गेल छह । पाँच बरखक बेटा रहैत छैक तखनो लोक कँ लोक कहैत छैक जे अहाँ कँ कोन बातक चिंता अछि, पाँच बरखक बेटा अछि । तूँ तँ आब पढ़ि लिखि कऽ अपन जीवन यापन करैत छह । फेर पुतोहुकेँ बुचियाक हाथ पकड़ा कऽ एहि लोकसँ छुट्टी लेलन्हि झिँगुर बाबू । कलित हुनका एतेक हरबड़ीमे कहियो नहि देखने छलखिन्ह । स्थिर, शांतचित्त आ फलक चिंता केनिहार किसान सेहो अपन जीवन-संगीक संग छुटलाक बाद अधीर भऽ गेल छल ।

कलितकेँ कटिहार घुरलाक बादो एकेटा चिन्ता लागल रहैत छलन्हि । से छल बुचियाक विवाहक । पिताक रहैत ओ कोनो परेशानीसँ चिन्तित नहि होइत छलाह । मुदा हुनका गेलाक बाद आब लोकोकेँ देखेबाक छलन्हि जे क्यो ई नहि

कहए जे बापक गेलाक बाद बहिन पर ध्यान नहि देलन्हि कलित । पिताक बरखी धरि विवाहक प्रश्न उठेबो कोना करितथि । मुदा समय बितबामे कतेक देरी लगैत छैक । पूरा गामक भोज कऽ कलित बुचियाक विवाहक लेल वर ताकएमे लागि गेलाह । परतापुरक सभागाछीमे गेलाह मुदा कोनो वर पसिन्न नहि पड़लन्हि जे बुचियाक हेतु सुयोग्य होअए । पन्द्रह दिनक छुट्टी बेकार गेलन्हि । पुनः कटिहार पहुँचि गेलाह । कार्यक क्रममे गिद्धौर, बाढ़ इत्यादि गंगाक दक्षिण दिसक परिवार सभसँ सेहो परिचय भेलन्हि । ओहिसँ हुनका बाढ़ नगरक लगक गामक एकटा लड़काक विषयमे पता चललन्हि जे गिद्धौर स्टेटमे कार्य कऽ रहल छलाह । चोट्टहि ओ लड़कासँ भेँट करबाक लेल गिद्धौर पहुँचि गेलाह । बालक अत्यंत दिव्य छलाह । पता लऽ बाढ़ पहुँचि कऽ बालकक पितासँ गप केलन्हि । पंचकोशीक कथा कतबा दिनक बाद बाढ़ नगरक लगक एहि क्षेत्रमे आएल छल से एहि कथाकेँ काटब कठिन रहए । सभटा गपशप कऽ पुनः भराममे सिद्धांत करेने मेंहथ पहुँचलाह । बूढ़- पुरान जे क्यो सुनलन्हि से आश्चर्यचकित रहि गेलाह । बढ़ए पूत पिताक धरमे- झिंगुर बाबू जेना कलितक सिद्धांत करेनहि पहुँचल छलाह तहिना कलित केलन्हि, वाह ... । कथा ओनातँ दूरगर भेलन्हि, मुदा कलित स्वयम् नेनेसँ दूरदेशक बासी छलाह, ताहि द्वारे हुनका सभ चीजक अनुभव छलन्हि, यैह सोचि सभ संतोष कएलक । पूरा टोल विवाहक तैयारीमे लागि गेल । बुचियाकेँ कोनो दिक्कत नहि होएतैक । सर्वगुण संपन्न अछि बुचिया । गीत-नाद लिअ आकि सराय-कटोरा, दसो हजार महादेव सुगढ़ पातर-पातर छनहिमे बना दैत अछि । जाहि घरमे जएत तकरा चमका देत ।

विवाह विधि-विधानसँ संपन्न भऽ गेल । वरपक्ष संगहि द्विरागमनक प्रस्ताव राखलन्हि, मुदा कलित तैयार नहि भेलाह, तखन बुचियाक हाथक छाप लऽ कऽ वरपक्षकेँ जाए पड़लन्हि ।

कलितक पत्नी छलीह पूर्ण शुद्धा । बुचियासँ बहिनापा छलन्हि । बुचियो भौजी-भौजी कहैत नहि थकैत छलीह । तेसर साल द्विरागमनक दिन भेलैक । बुचियाक संग जे खबासनी गेल छलीह से आबि कऽ गंगा आ गंगा पारक दृश्यक वर्णन करए लगलीह तँ भाउजक आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबए लगलन्हि । कलितसँ कतेक बेर पुछलथिन्ह जे ई बाढ़ छैक कतए । समयक संग सभ किछु सामान्य भऽ जाइत अछि । बुचिया जखन एक-दू बेर अएलथि-गेलथि तखन भाउज आरो निश्चिन्त भऽ गेलीह । एवम् क्रमे कलित पुनः एकाकी भऽ गेलाह । फेर आएल भूकम्प । सन् चौंतीसक भूकम्पमे महादेव पोखरिपर पत्नी आ दुहु पुत्री आ एकटा पुत्रक संग बिताओल रातिक बाद परिवार सहित किछु दिनुका लेल कटिहार गेलाह । कारण छल महिना भरि चलल छोट-छोट भूकंपक तरंग । मुदा पत्नीकेँ घरक पीड़ा सतबए लगलन्हि । घर तँ भूकम्पमे ढहि गेल छलन्हि, से कलित भूमिक ओहि टुकड़ाकेँ छोड़ि गामक फुलवारीक कातमे नव घरक निर्माण

केलन्हि । अपन पुरान डीह अप्न दियादकेँ दऽ एहि नबका डीहपर घरहट कएलन्हि । तकरा बाद एकटा पुत्र एवम् एकटा पुत्रीक प्राप्ति आओर भेलन्हि । पुनः एकटा पारिवारिक चक्रक प्रारंभ भऽ गेल ।

अपन बचिया सभ सेहो आब विवाह योग्य लागए लगलन्हि । अप्न बच्चा तँ सदिखन बच्चे लगैत छैक मुदा तँ की । पहिल बचियाक विवाह कछबी आ दोसरक खररख करेलखिन्ह । कछबीक परिवार सेहो राज-दरबारक कर्मचारी छलाह । घोड़ा, महफा, चास-बास....। मुदा बच्चा होएबाक क्रममे कलितक प्रथम पुत्रीक देहांत भऽ गेलन्हि मुदा ओकर ननकिरबी बचि गेल आ ओ मातृके मे रहए लागल । मुदा ओहो पाँचे वर्षक होएत आकि एक दिन पेटमे दर्दक शिकाइत भेलैक आ ओहो भगवानक घर माएक सेवामे चलि गेल । कलित जीवन आ मृत्युक एहि संग्रामकेँ देखैत रहलाह । कहियो गाममे हैजाक प्रकोप पड़ए लागल छल तँ कहियो प्लेग आ की की ? एक गोटाकेँ लोक जरा कऽ आबए तँ दोसर गोटाक मृत्युक समाचार भेटए । मुदा कलितक परिवार अक्षुण्ण रहलन्हि।

कलितक कटिहारमे पदोन्नत्ति आ प्रतिष्ठा बढ़ैत रहलन्हि । भातिज सभ पूर्व रूपेण ओतए रहैत छलन्हि । दुहू पुत्र केजरीवाल हाई स्कूल, झंझारपुरमे पढ़ए लागल छलथिन्ह । कालक मंथर गतिमे कखनो काल गति आबि जाइत अछि । अपन तेसर पुत्रीक विवाह तमुरिया लग आमारूपी गाममे करबा कए कलित जेना निश्चिंत भऽ गेलाह । अप्न पैघ पुत्रक विवाह करेलन्हि आ छोट पुत्रक अकादमिक प्रतिभाक प्रति निश्चिन्त भेलाह । मुदा छोट पुत्रक अंधविश्वासी होएबामे सेहो हुनका कोनो संदेह नहि छलन्हि । आ एकर कारण छल जे एक दिन हल्ला उठलैक, जे घनगर चन्ना-गाछीमे, जतए दिनोमे अन्हार रहैत छैक, कोनो गाछक नीचाँ चाटी उठैत छैक । तखन हुनकर ई पुत्र चाटी उठाबए ओतए पहुँचि गेल छलन्हि । से जखन आठम वर्गमे विज्ञान वा कला चुनबाक बेर अएलैक, तखन पुत्रक विज्ञान विषय लेबाक निर्णयमे हाँ मे हाँ मिला देलखिन्ह कलित बाबू । कतेक गोटे कहलखिन्ह जे सत्यनारायण बाबू आ के-के साइंस लऽ फैल कऽ गेलाह, बादमे पुनः आर्ट्स विषय लेबए पड़लन्हि । मुदा नन्द नहि मानलथि । साइंसोमे गणित लेलन्हि । कलित सोचलथि जे विज्ञान विषय पढ़ि अदृश्यक प्रति स्नेहमे नन्दक रुचि कम हेतन्हि । पता नहि किएक एकर बाद कलित निश्चिंत जकाँ भऽ गेलाह । कटिहारसँ एक बेर गाम आएले रहथि । भोरमे नित्यक्रियासँ निवृत्त भऽ कलित हाथ मटियाबए लेल चिक्नी माटिक ढ़ेर दिशि बढ़ि रहल छलाह आकि पता नहि की भेलन्हि, हाथक लोटा दूर फेका गेलन्हि । ओ नीचाँ खसि पड़लाह । कनियाँ दौगल अएलीह । मुदा जीवनक खेल एक बेर भेटैछ आ एक्के बेर चलियो जाइछ । नन्द पिताक मृत्युक साक्षी छलाह । मृत्युक ई प्रकार हुनका लेल सर्वथा नवीन आ सर्वथा रहस्यमयी छल । अदृश्यक शक्ति विज्ञानक सर्वोच्चताकेँ नन्दक जीवनमे दबाबए लागल।

वृत्तक गोलाकार आकृति केंद्रक परिधिमे घुमैत एकटा चक्र पूरा केलक । अदृश्य केंद्रक फाँसमे फँसल । नन्द अपन यशोदा माएक छत्रछायामे बढ़ए लगलाह, उमरियोमे आ पढ़ाइयोमे । अप्न शिक्षक लोकनिक प्रिय पात्र भऽ गेलाह नन्द । हुनकर प्रैक्टिकलक कॉपीक साफ-सुथरा रूपक चर्चा सर्वत्र शिकक्षहु वर्गमे होमए लागल । फूल-सन अक्षर हुनकर शारीरिक सौन्दर्यसँ मेल खाइत छल ।

एहि बीच एकटा आर घटना घटित भेल । यशोदा माएक दुहु पुत्र भगवत्ती घरक सोझाँमे नीचाँमे सुतल छलाह । भोरमे माए देखलन्हि जे गहुमन साँप चारि टुकड़ा भेल पड़ल अछि आ बिज्जी बच्चा सभक माथ लग ठाढ़ पहरा दऽ रहल अछि । प्रायः बिज्जीक मारि पड़लैक गहुमनकेँ आ दुहु पुत्र सुरक्षित रहलन्हि यशोदा माएक । नन्द एहि घटनाक स्मृतिक संग आगू बढ़ए लगलाह । बीचमे बँटवारा भेल । घरारी सभ, निकहा खेत सभ सभटा दू-दू टुकड़ा होमए लागल । बाहरी लोक सभ कहैत छल जे दुनू भाएक संग अन्याय भऽ रहल अछि । स्कॉलरशिप प्राप्त कऽ नन्द आर.के.कॉलेज मधुबनीमे अंतर-स्नातक विज्ञानक गणित शाखामे नामांकन लेलन्हि। शुरूमे गणित बुझबामे दिक्कत भेलन्हि तँ रटए लगलाह । गणितकेँ रटबाक बुद्धि ई सोचिकेँ लगेलथि जे बादमे लोक ई नहि कहए, जे की सोचि कऽ विज्ञानक चयन कएलक । मुदा किछु दिनका बाद रटैत क्रममे बुझबामे सेहो आबए लगलन्हि। गामक फुटबॉल मैदानक स्मृतिए शेष रहलन्हि, खेलेबाक अवसरे नहि भेटन्हि । गणितक शिक्षक तीन सए प्रश्नक सेट परीक्षाक पहिने दैत छलखिन्ह आ कहैत छलखिन्ह जे, जे क्यो साठि प्रतिशत प्रश्नक सही-सही उत्तर बना लेताह ओ प्रथम श्रेणीमे निश्चित रूपसँ उत्तीर्ण होएताह । नन्द सत्तरि प्रतिशत प्रश्नक उत्तर तैयार कऽ शिक्षककेँ देखा देलखिन्ह । आशानुरूप बादमे परीक्षाक परिणाम अएलापर प्रथम श्रेणी भेटलन्हि । १९५९ मे इंजीनियरिंगमे नामांकनक हेतु आवेदन दऽ देलखिन्ह । अंकक आधार पर सर्वोच्च अंक अएला उत्तर मुजफ्फरपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजीमे नामांकन लऽ लेलथि । ओहि समय मात्र सिविल इंजीनियरिंग शाखाक पढ़ाई ओहि संस्थानमे होइत छलैक, से ओहि शाखामे नामांकन लऽ धोती-कुर्त्ता पहिरि कऽ ओतए पहुँचि गेलाह । प्रोफेसर दीक्षित साहेब वर्कशॉपक मशीन देखा कहलखिन्ह जे एहिमे धोती फँसि जएत । से फुलपैंट आ शर्ट पहिरि कऽ आऊ । दू टा फुलपैन्ट आ शर्ट कीनए पड़लन्हि नन्दकेँ । कपड़ा कीनि सिएबितथि तँ ढ़ेर दिन लागि जएतन्हि से रेडीमेड कीनए पड़लन्हि । मुदा गाम जाथि तँ गामसँ दूर बिदेसरे स्थानमे फुलपैन्ट-शर्ट बदलि कऽ धोती कुर्त्ता पहिरि लैत छलाह । कहियो गाम फुलपैंट पहिरि कऽ नहि गेल छलाह । सन् १९५९ सँ १९६३ धरि इंजीनियरिंगक पढ़ाइ चललन्हि आ तखन बिहार सरकारमे इंजीनियरिंग असिसटेंन्ट आ एक सालक बाद १९६४ सँ सहायक अभियन्ताक रूपमे बहाली भेलन्हि ।

इंजीनियरिंग पढ़ाइ विशेष खर्च बला छल से एहि शर्त्तनामाक संग विवाह भेलन्हि जे पढ़ाइक खर्चा ससुर उठेथिन्ह । मुदा गर्मी तातिलमे एक मास आ दुर्गापूजामे पंद्रह दिनक छुट्टी कॉलेजमे रहैत छलैक से एतेक दिनुका पाइ ससुर काटि लैत छलथिन्ह आ सालमे बारह मासक बदला मात्र साढ़े दस महिनाक खर्चा दैत रहथिन्ह । बादमे ज्यों सासुरक लोक कहियो ई उपराग दैत छलन्हि जे हमही सभ इंजीनियरिंग करबेलहुँ अछि तँ नन्द सेहो हँसि कऽ उपर्युक्त बातक खुलासा कऽ दैत छलखिन्ह । वृत्तक परिधि जेना पैघ भेल जा रहल छल । कालक परिधि पहिने पूर्ण चक्र पूरा कएलक आ आब परिधिक विस्तार शुरु भऽ गेल । दुःख-सुख आ उत्थान-पतनक खिस्सा ।

स्वतंत्रता दिवसक दिनक उमंग, झंडा लऽ कऽ स्कूलक बच्चाक संग १५ अगस्त १९४७ कें घुमैत छलाह । कांग्रेसक भक्ति संगमे रहलन्हि । मुदा १९६२ क चीनी आक्रमणक बाद भारतीय सेनाक पाछू हटबाक दुःस्वप्न । वायुसेनाक उपयोग नहि करबाक भारतक आश्चर्यजनक निर्णयक बादक मनःस्थिति छल पलायनक आ हारिक । ऑल इंडिया रेडियोक घोषणा जे हमर सेना गर्वसँ पाछू हटि रहल अछि - सुनि नन्दक हृदय रुकि सन जाइन्हि । से जखन १९६५ क युद्धक बेर इंजीनियरक भर्त्ती सेनामे कैप्टनक रूपमे शुरु भेल तखन नन्द आ साहा साहेब आवेदन दऽ देलखिन्ह । साहा साहेबक कनियाँ तँ कानए लगलीह आ साहा साहेबकेँ रुकि जाए पड़लन्हि । नन्दक पत्नी एको बेर प्रतिरोध नहि कएलन्हि । मुदा ओजनमे बेशी भेलासँ छँटा गेलाह नन्द । मसोसि कऽ रहि गेलाह । तकर बाद जे शरीर घटेबाक सूर चढ़लन्हि, से बढ़िते गेलन्हि । एकेटा सपना छलन्हि - गाममे कोठाक घर । से सभटा सर्वे सभक नक्शा ऊपर कऽ घरक कुर्सी देलन्हि जे सड़कमे घरक कोनो भाग नहि जाए । मकानक डिजाइनक मात्र आधे भाग पूरा भऽ सकलन्हि । जतए-जतए ट्रांसफर होइन्हि एकटा नव अनुभव भेटन्हि । ओहि समय कनियाँकेँ तृतीय पुरुषक रूपमे संबोधित करबाक प्रचलन छलैक, मुदा नन्द द्वितीय पुरुषमे संबोधन शुरु केलन्हि । एकर आलोचना होएबाक बदला गाममे आनो लोक सभ ई संबोधन अपना घरमे शुरु करैत जाइत गेलाह । स्थानान्तरणक क्रममे डेहरी-ऑन-सोनमे विकास कार्यमे ग्रामीण आदिवासीक पूर्ण सहयोग भेटलन्हि । कहियो पाइ देखि कऽ अंतरात्मा नहि डिगलन्हि । जी-जानसँ जीप उठा कऽ अपन कार्यकेँ पूर्ण करथि । कखनो जीप तेज होइन्हि तँ मोन पड़न्हि जे कोनो बच्चा ने पिचा जाए । मुदा कहियो कोनो दुर्घटना नहि भेलन्हि । गामक सभ जातिक लोककेँ कतहु ने कतहु मस्टरे रॉल पर नोकरी देलन्हि । स्थानीय लोककेँ सेहो नोकरी करबाक हेतु प्रोत्साहित करैत छलाह । स्थानीय गरीब आदिवासी नन्दकेँ देवता बुझैत छलाह । एतहि दमाक पहिल बेर अटैक भेलन्हि नन्द पर । स्थानीय वैद्य दिन-राति एक कऽ जंगलसँ बीट आनि कऽ देलकन्हि । दमाक इलाज एलोपैथीमे नहि अछि मुदा एहि बूटीक एकमात्र खोराकी सँ अगिला कतेक साल धरि नन्द दमासँ दूर रहलाह । सँगी

सभ भोलेनाथ नाम राखि देलथिन्ह । कतेक कमाइ-धमाइक तरीका सभ सिखेबाक प्रयास सेहो केलखिन्ह । मुदा ग्रामीण जनक लाचारीकेँ ततेक लगसँ देखने छलाह नन्द जे एहि सभ गप दिस ध्यानो नहि जाइत छलन्हि । ताहुमे गरीबीक बादो जे आपकता स्थानीय जनसँ भेटैत छलन्हि, तकरा बाद ? एहि बीच एक पुत्रीक प्राप्ति सेहो भेलन्हि । दोसर बेर पुत्रक प्राप्ति भेलन्हि । पुत्री मामा गाममे जन्म लेलथिन्ह आ पुत्र अपन गाममे । बच्चा सभक स्थितप्रज्ञ भाव, फेर हँसब फेर ठेहुनिया...... बच्चाक बढ़बाक प्रक्रियाक दर्शन ओहिना अछि जेना विश्वक निर्माण ओ ओकर चेतनाक विकास । हुनकर एकटा भातिजक देहांत नेनेमे भऽ गेल रहन्हि आ तकर बाद एहि दुनू बच्चाक प्रति स्थितप्रज्ञताक भाव, सुखमे सुखी नहि आ दु:खमे दुखी नहि क अवतरण भेल नन्दमे । नन्द दिल्ली कोनो ट्रेनिंगमे गेल छलाह । एक राति सपना देखलन्हि जे हुनकर भातिज *नवीन* गाममे फूसक घरक ओसारा पर बैसल छथि । ओ नेना जकरासँ नन्दकेँ बड्ड आपकता छलन्हि, उठि कए खेलाइ लेल जाइत अछि । कनेक कालक बाद पेटमे दर्दक शिकाइत करैत अछि । सभ क्यो जमा भऽ जाइत छथि । बूढ़-पुरान अपन-अपन नुस्खा देबए लगैत छथि । मुदा कनिए कालक बाद बच्चाक मृत्यु भऽ जाइत अछि । नन्दक आँखि खुजि गेलन्हि । हुनका अपन बड़की बहिनक बचिया मोन पड़लन्हि । एहने घटना छल ओहो । बचियाकेँ क्यो बूढ़ी पेट पर हाथ दऽ देने छल आ ओ कनेक कालक बाद संयोगवश पेट दर्दसँ काल कवलित भऽ गेल छलीह । नन्दकेँ अदृश्य, भूत-प्रेत, राकश आ डाइन जोगिन एहि सभपर असीम विश्वास छलन्हि । ई सभ सोचिते ओ जोर-जोरसँ कानए लगलाह । संगी सभ हड़बड़ा कऽ उठैत जाइत गेलाह । जखन सभ समाचार ज्ञात होइत गेलन्हि तँ किछु गोटे कहलखिन्ह जे भातिजक अउरदा बढ़ि गेल । नन्दक मुँह लटकल देखि कऽ क्यो-क्यो हुनक अभियंताक वैज्ञानिक दृष्टिकोणकेँ मोन पाड़ए कहलखिन्ह । मुदा नन्दकेँ बोल-भरोस क्यो नहि दऽ सकलाह । नन्द ट्रेनिंग छोड़ि कऽ सपनेक गपपर गाम बिदा भऽ गेलाह । तेसर दिन गाम पहुँचलाह तँ भैयाकेँ केश कटेने देखि कऽ सशंकित भऽ गेलाह । गामक सीमांतेसँ जे क्यो भेटन्हि से कनेक दु:खी स्वरमे गप करन्हि । आँगन पहुँचलाह तँ माय जोर-जोरसँ कानए लगलीह । सपनाक सभटा गप सत्य बुझेलन्हि, अक्षरशः सत्य । भातिज हुनका केश कटाबए लेल सही समय पर बजा लेलखिन्ह । नवीनक फोटोक पाछाँमे अंग्रेजीमे ओकर जन्मक आ मृत्युक तिथिक संग ओकर तोतरायल बोलीमे काका-कका कहबाक बात फाउंटेन पेनक सियाहीसँ नन्द लिखलन्हि । कोठाक घर बनबाक पहिनहि ओ चल गेलाह, गेलाक बादो मुदा स्वप्नमे काकाकेँ नहकेशक दिन बजा कए ।

पुत्रीक जन्मक बाद कोठाक घरो बननाए शुरु भऽ गेलन्हि । पुत्री जखन पैघ भेलन्हि तँ मोन पाड़बाक क्रममे कहैत छलीह जे घरक कुर्सी पड़बाक लेल जे

खधाइ खुनल गेल छल से बड़ड गँहीर छल । मुदा पिता मोन पाड़थिन्हि जे काका अहाँकेँ हाथसँ पकड़ि कऽ खधाइमे पात सभ साफ करबाक लेल नीचाँ कऽ दैत छलाह, तखन खधाइ बहुत गँहीर कोना भेल । पुत्री बा केर कोरामे एकर समाधानक हेतु पहुँचि जाइत छलीह जे खधाइ तँ बहुत गँहीर बुझाइत छल, तखन ईहो बात सही जे काका हाथेसँ खधाइमे उतारि दैत छलाह । नन्दक माए बच्चा सभक बा भऽ गेलीह । नन्दक पुत्रकेँ बा नन्दक नन्द कहैत छलीह । कखनो गोपाल तँ कखनो राजकुमार कहैत छलीह, ओकर हँसी, आँठिया कारी घनगर केश । बा क कोठाक घर बनि गेलन्हि तँ पेटक दर्द शुरु भेलन्हि । मुदा नन्द एहि बेर अपन घरक पेटक दर्दक दू टा मृत्युकेँ अदृश्यक निर्देशपर होइत देखलाक उत्तर माएकेँ इलाजक हेतु कैक ठाम, एलोपैथिक डाक्टरक लग पैघ-पैघ नगरमे, लऽ गेलाह । डायगनोस भेलन्हि कैंसर नामक दु:खदायी रोग । एहि बीमारीक इलाज रोगोसँ बेशी दु:खदायी छल । रेडियमसँ ट्यूमरकेँ जरेनाइ । बा टूटि गेलीह । पटनेमे मृत्यु भऽ गेलन्हि । ओतहि दाह संस्कार गंगा-तट पर भेलन्हि कारण ओतए मान्यता छल जे गंगा तटपर गाएक बोली जतेक दूर धरि सुनाइ पड़ैत अछि ततेक दूर मगहक क्षेत्र नहि मानल जाइत अछि । तदंतर श्राद्ध कर्म गाममे भेल । बा चलि गेलीह, नन्दक द्वितीय पुत्रक जन्मक पहिनहि । मुदा बा क चरचा घरमे होइते रहल । बा केर फोटो बा केर नाति सभक प्रेरणा श्रोत बनल रहल । जे सपेताक गाछ बा केर श्राद्धमे उसरगल गेल छल तकर आम हुनकर नाति-नातिन नहि खाइत छलन्हि । जे आम खसैत छल से बाबाक सारा पर राखि देल जाइत छल । गोदान आ वैतरणी पार करेबाक विधिमे जे गाएकेँ दागल गेलैक तकरा देखि बा केर दुहु पुत्र प्रण लेलन्हि जे आब ई काज भविष्यमे कहियो नहि कएल जएत । अपन धैर्यसँ मृत्युसँ पहिने बा अपन परिवारकेँ पुनः अपन पूर्व प्रतिष्ठा आ सरस्वतीक भक्तक रूपमे प्रतिष्ठित करबामे सक्षम भेलीह ।

मृत्युसँ पहिने बुचिया सेहो बाढ़सँ अपन भौजीकेँ भेंट करए लेल पटना अएलीह । दुनू ननदि आ भौजी पुरान-पुरान गपशपमे अपना- अपनाकेँ बिसरबैत गेलीह । भौजी भऽ गेल छलीह बच्चा सभक बा आ ननदि भऽ गेल छलीह बच्चा सभक बुढ़िया दीदी । बुढिया दीदीक खिस्सा बच्चा सभक मध्य बड़ड लोकप्रिय भऽ गेल छल । बृहत्कथाक खिस्सा सन नमगर-कैक रातिमे खतम होअएबला । खिस्सा सुनबाक क्रममे एक बच्चा सुति जाइत छल, फेर ओहिसँ पैघ बच्चा सुतैत रहए आ सभसँ पाछाँ सभसँ पैघ बच्चा सुतैत छल । अगिला राति मारि शुरु, सभसँ पैघ बच्चा कहन्हि जे जतए सँ खतम केलहुँ ततए सँ शुरु करू । ई सभ पहिने सुति गेलथि तँ ई सभ अपन बुझथु । मुदा बुढ़ियो दीदी कम नहि छलीह । अपन खिस्सा कनेक आओर आगूसँ शुरू करैत छलीह । जखन सभसँ पैघ बच्चा कहए जे एकर पहिनेक खिस्सा हम कहाँ सुनलहुँ, तँ बुढ़िया दीदी

कहथिन्ह जे हम बताहि जकाँ खिस्सा कहिते रहि गेलहुँ आ अहूँ सुति गेल छलहुँ । तखन हम खिस्सा कहब बन्द कए देलहुँ । तखन निर्णय भेल जे जतएसँ सभसँ छोट बच्चा चाहैत अछि, ततहिसँ खिस्सा शुरु कएल जाए ।

बड़का कोला बला खेतमे नन्द बोरिंग गरबेलन्हि जाहिसँ पानिक लेल ललाएल ई बाध सिंचित भऽ जाए । मुदा कतेको दिनुका जोन मजदूर- मिस्त्री-कारीगर सभक परिश्रमक बाद ई पता लागल जे नीचाँमे पानिक अभाव रहए । लेएर नहि भेटबाक कारणसँ पाइप खेतेमे लागल रहल आ सुखाएल बिन पानिक ओतहि गाड़ल रहल । बच्चा सभक लेल ई खेत बोरिंग बला खेतक नामसँ प्रसिद्ध भेल । बादमे ओहि गाममे सरकारी बोरिंग गाममे लगबाक घोषना भेल । मुदा नन्दक भैयाकेँ पता लगलन्हि जे ई बोरिंग ओहि पानि विहीन बाधमे नहि गड़ाएत वरन् ओहि बाधमे गड़ाएत जाहिमे बारहोमास पानि लागल रहैत अछि । ओ किछु गोटेकेँ लऽ कऽ पटना पहुँचि मुख्यमंत्रीकेँ आवेदन देलन्हि । तखन जा कऽ ओहि सुखाएल बाधक जीर्णोद्धार भेल । सात हाथक उज्जर अंग्रेज इंजीनियर कोन-कोन मशीन लऽ कऽ आएल आ दुइये दिनमे बोरिंग गारि कऽ चलि गेल । मुदा बादमे क्यो कहलन्हि जे ओ अमेरिकन छल आ कारण सेहो देलन्हि जे सभटा उज्जर लोक अंग्रेज होअए से जरूरी नहि । फेर कमला बलानक दुनु कात छहरक निर्माण भेल । किछु दिन धरि ठीक रहल मुदा किछु दिनुका बाद स्थिति ई भेल जे दुनु छहरक बीचमे बालु भरैत गेल आ जतेक छहरकेँ ऊँच करू ततेक कम । झंझारपुर पुलक नीचाँ धरि बालु भरि गेल । कनियो पानि आबए तँ पानि खतराक चेन्हसँ पार भऽ जाइत रहए आ फाटकसँ बाहा बाटे पानि पोखरि-खेतकेँ डुमा दैत छल । जे खेत बहुत ऊँच आ दू पाइ मोलक छल से नीक भऽ गेल आ निकहा खेतमे खेती बन्द भऽ गेल । दुनू छहरक बीचक बलुआही जमीनमे तीन-तीन बेर रोपनी करए पड़ैत छल । लोककेँ आब परोर आ अल्हुआक खेती एहि बलुआही जमीनमे शुरू करए पड़ल । डकही पोखरिक चारू कातक बढ़मोतरमे छिट्टुआ धानक खेती करए पड़ल कारण रोपनी उपजक हिसाबसँ महग भऽ गेल । पूर्णाहा बाध पानिसँ भरल रहैत छल । कोठिया-मेहथक बीचमे एकटा भोरहा छल-गँहीर पट्टी- प्रायः कोशीक कोनो पुरनका छिटकल धार । मुदा अखुनका कोशीक भौगोलिक दूरीक कारण एहि पर संदेह कएनिहारक संख्या सेहो बेश । एहि भोरहा कातमे मेहथक आ कोठियाक बीच भेल पुरान संघर्षक खिस्सा….पछिमा-भुमिहार टोलक एकटा आन्हर बूढ़क करतब । बूढ़केँ सभ बान्हि कऽ रखलकन्हि जे ओ मारि करए नहि पहुँचि जाथि । मुदा केबाड़ी तोड़ि आ बड़का बाँसमे फरसा-भाला लगा कऽ ओ पहुँचि गेलाह लड़बाक लेल । सवा मोन चूड़ी कोठियामे फूटल ओहि मारिमे । आ मारि कोन गप पर..सूगरक सीराक लेल ।… …एकटा आर कथा - बूढ़ा काकाक झठहाक कथा, सभटा बानर सभ डरक लेल कलम-गाछी छोड़ि पड़ा गेल छल । आइ

काल्हिक छौरा सभकेँ देखियौक, झठहा कियो मारि कऽ देखाबय जे जोमक फुनगीकेँ छूबि लए । सभटा अखराहा लोक सभ जोति लेलक, तखन शरीर कोना बनैत जएतन्हि ।

नन्दक डेरा पर बुढ़िया दीदी एक बेर बाढ़सँ अपन बेटाकेँ लऽ कऽ अएलीह, बेटाक नोकरीक लेल । बाढ़क लाइ केर स्वाद बच्चा सभ बुढ़िया दीदीक पटना आकि गाम अएले पर चिखैत जाइत छल । जमीन्दारी प्रथाक समाप्तिक बाद नौकरीक चलती भऽ गेल छल आ दिक्कत सेहो । ताहिमे सरकारी नोकरीक । जयराम नौआ तखन ने कहैत छथि जे नन्द सभ जातिकेँ सरकारी नोकरी देलखिन्ह मुदा नौआ-ठाकुर टा बचि गेल । से नन्द नहि तँ हुनकर बेटेसँ अपन बेटाक लेल नोकरी माँगताह । सभकेँ नोकरी भेटलैक मुदा बुढ़िया दीदीक बेटाकेँ नोकरी नहि भेटलन्हि । किछु समय-साल सेहो बदलल, नहि तँ पहिने तँ लोक नोकरी करैयो नहि चाहैत छल । पुबाइ टोलक गुलाब झा कहैत छलाह जे नोकरीक माने भेल नहि करी आ करी तँ की पाबी-वेतन माने बिना तन आ तनखा माने तनकेँ खा । बुढ़िया दीदीक आनल बाढ़क लाइ आ कतेक राति धरि चलए बला खिस्सा । गाम घरमे कखनो काल शुरु भऽ गेल आन आन प्रकारांतरक खिस्सा, इनार, पोखरि,करीन,बाहा,खत्ता,गाछी-पोखरिक बीच आ एहि सभक लेल होबएबला छोट-मोट झगरा-झाँटी आकि रमण-चमनक मध्य नन्दक नन्द सभ बढ़ए लगलाह । नन्द अपन बच्चा सभकेँ गामसँ दूर नहि कएलन्हि। गर्मी तातिल, होली आ दुर्गापूजा, तीन बेर कमसँ कम साल भरिमे समस्त परिवार जएबेटा करैत छल । बच्चा सभ आम खएबाक हेतु दीदीक गाम जाइत छल । पएरे-पएर दूर-दूर धरि, कहियो कमलाक रेतक बीच तँ कहियो आमक गाछीक मध्य चलैत चलबाक अनुभवे किछु भिन्न छल । आमक मासमे आमक कलममे रात्रिक माछ-भातक बनभोज, खुरचनसँ आमक खोइचा हटएबाक अनुभव, ती-ती, ‘जकरे नाम लाल छड़ी आ सतघरिया खेलेबाक अनुभव, संठीमे आगि लगा कए धुँआ निकालबाक अनुभव आकि काँच आममे चून लगाकए खएबाक उपरांत ओकर मीठ भऽ जएबाक अनुभव, ई सभ अनुभव आइ काल्हिक बच्चाकेँ कोना भेटतैक यावत ओकरा सभकेँ गाम एनाइ जेनाइ नहि कराएब । नन्द तँ एकबेर अपन जमायकेँ कहनहियो रहथि जे आगाँक सात जन्म शहर दिशि घुरि कय नहि आएब । सन् १९७५ क पटनाक बाढ़िक समय नन्द गंगाक उत्तर गंगा पुल परियोजनामे आबि गेल छलाह। नन्द दुइ पुत्र आ एक पुत्रीक संग अपन परिवार चला रहल छलाह । तीनू बच्चा स्कूलमे पढ़ाइ-लिखाइ करैत जाइत छलाह । तखन ककरा बुझल छलैक जे ई बरख नन्द आ हुनकर बच्चा सभक जीवनक एकटा विभाजन रेखा बनत आ जीवनक धारकेँ बदलि देत।

आरुणिक वृत्तांतक सारांश यैह अछि जे हुनक जन्मक समय हुनकर पिताकेँ क्यो कहि देलकन्हि जे बचिया भेल अछि । दू-तीन दिन धरि हुनका दिमागमे छलन्हि जे बेटिये भेल अछि । छठिहारिक एक दिन पहिने हुनका पता चललन्हि जे बेटा भेल छन्हि । एहि अनिश्चितताक उपरांत यैह सिद्ध भेल जे यावत सत्यक जे रूप बूझल अछि सैह तावत धरि सत्य रहत । सत्यक विभिन्न रूप, जे असत्य तँ नहि अछि, तकरे प्रतिकीर्तिक रूपमे आरुणिक व्यक्तित्वक प्रादुर्भाव भेलैक। जन्मेसँ एहि आभाषित सत्यक विभिन्न रूपक साक्षी रहलाह आरुणि । आरुणिक जन्मक पहिनहि बा केर देहांत भऽ गेलन्हि। बादो मे जखन-जखन बा केर चर्चा अबैत छल, आरुणि ध्यानसँ सुनैत छलाह आ अपन जिज्ञासा बढबैत छलाह। एवम क्रमे बा हुनकर जीवनक अंग भऽ गेलीह । बा हुनकर जन्मक पहिनहि सँ शरीररूपे नहि छलीह, मुदा हुनकर अवस्थिति एहि घरमे सदिखन छलन्हि । आरुणिक कथा आ नन्दक कथाक बीचक तारतम्य पहिने तँ नहि बुझि पड़ि रहल छल । मुदा प्रकृतिक संगहि आरुणि सेहो अपन प्रतिभा देखाबए लगलाह । मनुष्यक प्रवृत्तिये होइछ समानता आ तुलना करबाक, साम्य आ वैषम्यक समालोचना आ विवेचनमे कतेक गोटे अपन जिनगी बिता दैत छथि । आरुणि आ नन्दक बीच सेहो अनायासहि साम्य देखल जा सकैत अछि । दुहु गोटेक ऊपरी प्रतिभा आ तथाकथित वैचारिक मतभेदक रहितहु जे मूल व्यक्तित्वक साम्य होइत छैक, से दुनू गोटेमे वर्त्तमान अछि । एहन सन बुझना जाइत छल । मध्य वर्गक बच्चाक लालन-पालन आ पोषण जाहि आशा ओ आकांक्षासँ होइत अछि, तकर अपवाद आरुणि नहि छलाह । जेना सभ माता-पिता अपन नेनाक छोटो छोट बातमे प्रतिभाक छाप देखैत छथि तहिना आरुणिक माता-पिता विशेष कए पिता नन्द, आरुणिक व्यक्तित्वमे विशेष प्रतिभा देखए लगलाह । आरुणि केँ खूब स्वप्नसभ अबैत छलन्हि । तहिना दाँत सेहो सूतलमे कटकटाइत छलन्हि । सपनामे नीक आ अधलाह दुनू प्रकारक तत्त्व रहैत छलन्हि मुदा डराओन तत्त्व विशेष रहैत छलन्हि । बहुत दिन धरि आरुणि एहि प्रयासमे रहथि जे कोना कए सपना आकि दुःस्वप्न अएनाइ बन्द भए जएत । बीच रातिमे ओ घामे-पसीने भए जाइत रहथि आ जखन निन्न खुजनि तऽ देखथि जे माता-पिता पंखा होँकि रहल छथिन्ह । सभसँ पहिने ककर जन्म भेल आ तकर पहिने ककर, आ सभकेँ भगवान बनओलन्हि तँ भगवानकेँ के बनोलकन्हि । ई सभ सोचि-सोचि कए आरुणि चिंतित भए जाइत छलाह। रातिमे स्वप्नमे हुनका होइत छलन्हि जे इनाररूपी प्रकृतिमे ओ गामक छातपर घूमि रहल छथि । फेर ओ छतक कातमे जाए लगैत छथि । फेर जेना पोखरिक कछेर अछि, तहिना छतक काते कात बिन इच्छेक जाइत रहैत छथि, फेर चाहैत छथि, जे कातसँ हटि कए बीच छतपर आबि जाइ । किंतु इनार रूपी प्रकृतिक गुरुत्वमे ओ खिचाइत चलि जाइत छथि । आ खसि जाइत छथि । अनायासहि निन्न खुजैत छन्हि तँ खुशी आ दुःख दुनू प्रकारक भावना मोनमे अबैत छन्हि । खुशी एहि बातक जे स्वप्ने

छल ई, यथार्थ नहि । दुःख एहि बातक जे फेर ने कतहु एहि प्रकारक दुःस्वप्न फेर आबए । पितासँ पूछथि जे अहाँ सेहो एहन सपना सुनैत छी, नहि नहि देखैत छी तँ ओ कहथि जे नहि आब नहि। हँ जखन ओ बच्चा रहथि तँ सपना देखथि, बड़का झोटाबला सहस्त्रबाढ़निक । आगि बोकरैत तमसाएल, जेना पृथ्वीकेँ गीरि लेत । सपना तँ सपने छी जे अहाँ सोचब से रातिमे अएत। नहि जानि के बूढ़-पुरान सहस्त्रबाढ़निक खिस्सा हमरा सुना देलन्हि। की सभ कहि देलन्हि जे सहस्त्रबाढ़निक आगमन अनिष्टक संकेत अछि जे ई जाहि बरख आएल ताहि बरखसँ कैक साल धरि बीमारी अकाल पड़िते रहल। यैह सभ हमर सपनामे अबैत छल। मुदा से बच्चामे आब तँ निन्नो कम अबैत अछि तँ सपना कतएसँ अएत। आ आरुणि सोचथि जे कतेक नीक होइत जे हुनको निन्न कम्म अबितन्हि। एहि बीच आरुणि कखन निन्न अबैत अछि आ कखन स्वप्न एहि सभ पर जेना शोध करए लगलाह। फेर अगिला दिन मोन पाड़थि, जे नौ बजे धरि जागल छलहुँ, दसो बजे यावत जागले छलहुँ, तखन कखन सुतलहुँ । फेर किछुए दिनमे ओ अपना मोनके बहटारि लेलन्हि, जे ज्यौँ हुनका ई मोन पड़ि जाइन्हि जे निन्न कखन आएल तखन तँ ओ जागले रहि जएताह । हुनकर नाम कतेक बेर बदलल गेल । पुरातन ग्रंथ सभक अध्ययन नंद एहि हेतु कएलन्हि । फेर हुनक पढ़ाइ-लिखाइक कार्य शुरु भेलन्हि। श्री गणेशजीक अंकुश छह ढ़ंगसँ लिखनाइ सिखाओल गेलन्हि आरुणिकेँ आ एहि आकृतिक संग गौरीशंकरक अभ्यर्थना-सिद्धिरस्तु।

> साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी
> उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।
> सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादांतस्य धूर्जटेः
> जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला ॥

पशुपतिः पतिः कहि आरुणि खूब हँसथि । एहिसँ हुनकर तोतरेनाइ सेहो समाप्त भए गेलन्हि । एक सँ सए धरिक पाठमे आरुणिकेँ पशुपतिःपतिः बला तारतम्य मोन पड़ैत छलन्हि । दस सँ ऊन्नैस आ फेर बीस सँ उन्तीस । नन्दक छोट पुत्र आरुणि शुरुअहिसँ नन्दक आशा आ आकांक्षाक प्रतीक बनए लागल छलाह । एकर किछु कारण सेहो छलैक । एकसँ सए धरि लिखब नन्द हुनका सिखा रहल छलाह । नन्द हुनका एकसँ दस धरि लिखनाइ आ बजनाइ सिखेलखिन्ह आ एगारहसँ आगाँ सेहो सिखाबए लागलखिन्ह । पुनः ई सोचि कए जे बालक पर एतेक बोझ लदनाइ ठीक नहि अछि ओ रुकि गेलाह । परंतु बालककेँ एगारहसँ बीस, फेर एक्कैससँ तीस जएबा धरि एहि बातक पता भऽ गेलन्हि जे ई तँ एक सँ दस तकक पुनरावृत्ति मात्र छैक । ओ एकर औचित्यक अपन पितासँ चर्चा केलन्हि तँ पिता हुनका एकसँ सए धरि लिखबाक चुनौती दऽ देलखिन्ह । बालक से लिखि कए जखन देखा देलखिन्ह तकरा बाद प्रत्येक

शब्दकँ कोन नाम देल जाए तकर समस्या आएल । नन्द एगारह, एक्कैस, उन्नासी आ नबासीक विशेष रूपसँ चर्चा केलन्हि । माँ जखन आधा घंटाक प्रातिक समीक्षाक हेतु अएलीह तखन हुनका पता लगलन्हि जे पाठ्यक्रम तँ पिता-पुत्रक बीच पूर्ण भऽ चुकल अछि । पिता गदगद भए गेलाह आ माँ एहि घटनाक चर्चा बहुत कम गोटेसँ केलन्हि जे कतहु ककरो नजरि नहि लागि जाए । एहने-एहन ढेर रास उदाहरण पिताक हृदयमे पुत्रक कोनो गलती नहि केनिहारक छवि अंकित करबामे सक्षम भऽ गेल।

आरुणिकेँ अप्पन पुरना बात सभकेँ मोन रखबाक धुनि जेकाँ छलन्हि । कोन ईस्वी मे की भेल, कोन ईस्वी सँ की-की भेल से कोना यादि होएत । हम बच्चामे की सभ करएलहुँ अप्पन पिता-माता आकि आनो बूढ़-पुरान सभक जीवनक घटनाक्रमक सभ गप बुझबाक लालसा हुनकामे छलन्हि। कखनोकालकेँ हुनका एहि गपक छगुंता होइत रहन्हि जे बिना हुनकर देखनो, एहि विश्वमे सभ गोटे सभ काज कोना करए रहल अछि । माने ई जे जखन आरुणि सुतल छथि तखनो विश्व चलि कोना रहल अछि । हुनका बच्चाक दुइ-चारिटा घटना मात्र मोन रहन्हि । जेना कि सिनेमा हॉलमे बॉबी सिनेमाक स्मरण, स्टुडियोमे माता-पिताक संग मुंडनक पहिने केशबला फोटो खिचेबाक स्मृति । फेर कोनो गप पर माँ द्वारा ध्यान नहि देलाक उपरांत भरि घरक चाभीक झाबाकेँ साँझाक डबरामे फेंकि देबाक स्मृति । गाममे कोनो काज-उद्यमक भीड़क दृश्य । फेर आरुणि एहि सभपर सोचलाक बाद यैह निष्कर्ष निकाललन्हि जे १९७६ ई.सँ हुनका सभ किछु मोन छन्हि, कारण तखन ओ ५-६ बरखक होएताह आ एहि वर्षसँ माँ हुनका अखबार पढ़बाक हिस्सक धरा देने छलखिन्ह । बहुत दिनुका बाद एक दिन नन्दकेँ आरुणिक डायरी हाथ लागि गेलन्हि जाहिमे आरुणि अपन स्मृतिक घटनाक्रमक इतिहासकार जेकाँ वर्णन देने रहथि।

हम, आरुणि, सन् १९७६ ई.केँ अपन जीवनक विभाजन रेखा मानैत छी । कारण एहिसँ पहिने हमरा अपन जीवनक घटनाक्रम किछु टूटल कड़ीक रूपमे बिना तारतम्यक बुझना जाइत अछि । कखनोकेँ हमरा ईहो होइत अछि जे एहि मे सँ किछु पूर्व जन्मक कोनो घटनाक्रम तँ नहि अछि ? सन् १९७६ ई.। हम गंगाब्रिज प्रोजेक्टक गंगाक उतरबारी कातमे हाजीपुरमे बनाएल कॉलोनीमे अपन माता-पिता आ पैघ भाए-बहिनक संग रहि रहल छी । पिताजी व्यवसायसँ सरकारी अभियंता छथि मुदा होम्योपैथिक चिकित्सामे सेहो एम.डी.(गोल्ड मेडेलिस्ट) छथि आ हुनकर ई एक तरह सँ हॉबी छन्हि । भरि कॉलोनीक लोक चंदा एकत्र कए होम्योपैथिक दबाइ कानपुरसँ मँगबैत छथि । बाबूजीक संग एकाध गोटे कानपुर

जा कए दवाइ सभ लेने अबैत छथि । हमरा सभक सरकारी क्वार्टरक ड्रॉइंग रूममे एकटा अलमीरा, दू टा कुर्सी आ एकटा टेबुल चिकित्सकीय कार्यक हेतु समर्पित अछि । हमर एकटा छोटका टेबुल सेहो एहि रूममे रहैत अछि, जाहिमे तीस पाइक आर्यावर्त्त अखबार हम अप्पन माँकेँ पढ़ि कए सुनबैत छियन्हि । जतए धरि हमरा मोन अछि, एहि कॉलोनीक दूटा भाग छल । चारू दिशि चहरदिवारी छल, एहि कॉलोनीक बीचमे सेहो एकटा दिबारि छल जे एहि कॉलोनीकेँ 'रहएबला' आ 'गोदामबला' एहि दू हीसमे बँटैत छल । गोदामबला इलाकामे मारि रास लोहाक छड़, जोखय बला मशीन आ ट्रक सभक संग एकटा कदम्बक गाछक स्मृति हमरा अछि । जोखय बला एकटा मशीन ततेक पैघ छल जाहि पर हम जखन ठाढ़ होइत छलहुँ तँ ओकर काँटा हिलबो धरि नहि करैत छल । हमरा बताओल गेल छल जे एहि पर भरिगर चीज सभ मात्र जोखल जा सकैत अछि । पन्द्रह-सत्रह किलोक पाँच सात बर्षक बच्चाक भार एकरा हेतु नोँसिक समान अछि । एहि गङ्गा-ब्रिज कॉलोनीक रहएबला क्षेत्रमे एकटा पैघ आ एकटा छोट मैदान छल । दुनूक बीच एकटा पैघ पानिक टंकी आ पम्प हाउस छल । पम्प हाउसमे पानि जाहि बाटे अबैत छलैक से बेस मोटगर पाइप छलैक आ हमरा अखनो मोन अछि जे ओ ओहिना खुजल रहैत छलैक । हम ओहिमे आँखि दए कऽ तकनहियो रही मुदा दोसर बेर डरसँ पाछू हँटि गेलहुँ, जे कतहु खसि पड़लहुँ तखन की होएत । ओ पाइप एकटा बोरासँ झाँपल रहैत छल । पैघ क्रीडांगणक उतरबारी कातमे एकटा कोटाबला दोकान रहैक । ओहिसँ पछबारी कातमे एकटा हनुमानजीक मूर्त्ति आ मंदिर बनि रहल छल जे बहुत पहिनहि बनि गेल रहैत मुदा कारीगर हनुमानजीक नाक ठीकसँ नहि लगा पाबि रहल छल । हनुमानजीक नाक चाहे तँ सामग्रीक समुचित मत्राक अनुपात नहि रहलाक कारण वा ककरो बदमाशीक कारण टूटि जाइत रहए किंतु किछु दिनुका बाद हनुमानजीक मूर्त्ति बनि कए तैयार भऽ गेल रहए । मंगल दिनकेँ आरती होमए लागल छल, पूरा कॉलोनी जेना भक्ति-भावसँ भरि उठल रहए । किछु दिनुका बाद सभक उत्साहमे कनेक कमी आबए लागल, जेना आन संस्थाक संग होइत अछि, प्रारम्भिक उत्साह क्रमशः कम होइत गेल आ मंदिरक संग जुटल सभटा सामाजिक कार्यक्रमक योजना योजने रहि गेल । हम कॉलोनीसँ दूर एकटा स्कूलमे पढ़बाक हेतु जाए लागल छलहुँ । हमर पैघ भाइ आ बहिन सेहो ओहि स्कूलमे पढ़ैत रहथि । एक दिनका गप्प अछि जे स्कूलमे हमरा कोनो दोसर बच्चाक संग झगड़ा भए गेल । दुनु गोटेक संग स्लेट रहए । हम आ ओ दोसर बच्चा एकरा हथियारक रूपमे प्रयोग करए लागलहुँ । हम सोचए लगलहुँ जे ज्योँ स्लेटकेँ दोसर बच्चाक माथ पर मारबैक तँ शोनित निकलए लगतैक । ताहि द्वारे हम स्लेटकेँ रक्षात्मक रूपेँ प्रयोग केलहुँ । मुदा ओ दोसर बच्चा मचंड छल... ....खच्च.....हमर माथसँ शोनितक धार निकलए लागल । टीचर सभ हमरा प्रिंसपलक रूममे लए गेलथि । रुइयामे सेवलोन वा डिटॉल नहि किछु दोसरे

छल, ओकर रंग आ सुगंध हमरा अखन धरि मोन अछि, फर्स्ट-एडक बाद साँझ होएबाक आ छुट्टीक बेर नहि ताकल गेल । स्कूलक रिक्शा जाहि पर ''सावधान बच्चे'' लिखल छल केर बाट नहि जोहि एकटा दोसर रिक्शामे हमरा दीदीक (बहिनक) संग घर पठा देल गेल । हम दीदीकेँ पुछलियैक, जे ''सावधान बच्चे'' केर अर्थ की भेल । हमरा लगैत छल जे एकर अर्थ छल जे सभटा बच्चा जे ओहि रिक्शामे बैसल अछि, से सभ सावधान अछि, आ एहि बातसँ ओ दोसर छौड़ा असहमति देखा रहल छल आ ताहि गप्प पर झगड़ा बजरि गेल छल । दीदीक उत्तर रहए जे ई लिखबाक उद्देश्य चेतावनी छैक, जे कोनो दोसर गाड़ी पाछू सँ ठोकर नहि मारि दैक आ सम्हरि कए चलए ।

''मुदा किएक''- हम संतुष्ट नहि होइत पुछलियन्हि । एहने प्रश्न आ उत्तरक संग हम बढ़ए लागल छलहुँ । आ बढ़ैत- बढ़ैत कहियो काल खिसियेला पर माँ कहथि, जे सोचैत रही जे कहिया पैघ होएत आ पैघ भेल तँ नाकमे दम कए देने अछि।

कॉलोनीक बाहरक क्रिश्चियन संतक नाम पर बनल स्कूलमे हम सभ भाइ-बहिन जाइत रही । स्लेटसँ कपार फोड़बएलाक बाद बाबूजी कॉलोनीमे ऑफिसर सभक मीटिंग करबओलन्हि । फैसला भेल जे खेलाक मैदान आ उत्तरबरिया सीमंतक देबालसँ सटल कोटाक दोकान (सार्वजनिक वितरण प्रणालीक दोकानकेँ कोटाक दोकान कहल जाइत छल) अपन आवश्यकतासँ बेशी पैघ घरमे छल । ओहि कोटाबलाक लाइसेंस सेहो कोनो कारणसँ समाप्त भए गेल छलैक, से ओहि एसबेस्टस बला ३-४ कोठलीक घरकेँ प्राथमिक विद्यालय बनएबाक निर्णय लेल गेल आ दू-चारिटा शिक्षकक बहाली कए, दू चारिटा लोकक कमेटी बनाए स्कूल शुरु कए देल गेल । पड़ोसक गंडक कॉलोनीकेँ सेहो छह महीना बाद नोत देल गेल जे अहूँ अप्पन कॉलोनीक बच्चा सभकेँ एतए पढ़ा सकैत छी । उत्तरबरिया देबाल पर बाहर दिशिसँ स्कूलक नाम लिखल गेल जे किछु दिनक बाद मलिछौंह होइत गेल । मुदा स्कूलक प्रतिष्ठा बढ़ैत गेल । क्यो गोटे ज्योँ अप्पन बच्चाक नाम लिखाबए अबैत छलाह तँ हुनकर बच्चाकेँ एक किंवा कखनो कालकेँ दुइ वर्ग नीचाँ नामांकन लेल जएबाक गप्प शिक्षकगण करैत छलाह । अप्पन स्कूलक स्तर कतेक ऊँच होएबाक गप्प करैत छलाह । बेशी जिद्द केला पर हमरा बजा कए टेस्ट लैत छलाह आ जाहि प्रश्नक उत्तर तेसर वर्गक नामांकनक अभिलाषी नहि दए पाओल छलाह से प्रश्न हमरा सँ पुछैत छलाह आ हम्मर सही उत्तर पर ओ कुटिल मुस्कान दैत नामांकनक हेतु आएल बालकक अभिभावक दिशि मुँह करैत छलाह । मोटा-मोटी बुझु जे ओहि स्कूलक हम सभसँ उज्जवल विद्यार्थी छलहुँ-जकर सोझाँमे, ओहि गामसँ आएल विद्यार्थीक अएलाक पहिने, क्यो ठाढ़ नहि भए सकल छल । पढ़ाइक प्रति एकटा विशिष्ट लगाव छल हमरामे, जे बादमे क्रमशः उदासीनतामे बदलए लागल । से एक बेर जखन बोखारसँ बड़बड़ाइत

छलहुँ तहिया परीक्षाक दिन रहैक । बड़बड़ा रहल छलहुँ जे परीक्षा ने छूटि जाए । घरपर प्रश्न आ कॉपी आएल आ तखन अप्पन परीक्षा दऽ सकलहुँ हम । स्कूल छल छोट-छीन मुदा ओकर सभ गतिविधिमे कॉलोनीक निवासीगण सोत्साह भाग लैत छलाह । क्रीडाक्रिया होअए आकि सांस्कृतिक । क्रीड़ामे दू विद्यार्थी एक-एक पएर डोरीसँ बान्हि कए तीन टाँग बनाए दौगैत छलाह । दौगि कए मैदानक दोसर छोड़पर राखल ब्लैक बोर्डपर लिखल हिसाबकेँ बनाए दौगि कए आपस अएबाक खेलमे शारीरिक आ मानसिक दुहुक परीक्षा होइत छल जाहिमे हम अग्रणी अबैत छलहुँ । हमरा दू गोट घटना आर मोन पड़ि रहल अछि । पहिल घटना एक गोट बच्चाक गामसँ आएब । ओ हमरा हेतु किछु दिन पढ़ाईमे चुनौतीक रूपमे रहल कारण ओकर गाम बला किताबमे किछु नवीन जानकारी रहैक मुदा तकर कोटा पूरा भेलाक बाद हम ओकर चुनौतीकेँ खतम कए देलहुँ । दोसर घटना छल एक गोट बच्चाक एक्सीडेंट जकर बाद हम सभ खेलाइ कालमे टाइम निकालि ओकरा खिड़कीसँ देखि अबैत रहियैक । बादमे कहियो काल ओकर रूम मे जा कए ओकर डायरी सेहो देखि अबैत रही । ओकर किछु अंश हमरा मोन अछि से एना अछि ।

''अप्पन सभक गप्प करबा लेल हमरा लगमे समयक अभाव रहए लागल । किछु तँ एकर कारण रहल हम्मर अप्पन आदति आ किछु एकर कारण रहल हमर एक्सीडेंट, जकर कारण हम्मर जीवनक डेढ साल बुझा पड़ल जेना डेढ दिन जेकाँ बीति गेल । किछु एहि बातक दिस सेहो हमर ध्यान गेल जे डेढ सालमे जतेक समयक नुकसान भेल तकर क्षतिपूर्ति कोना कए होएत । किछु तँ भोरमे उठि कए समय बचेबाक विचार आएल मुदा आँखिक निन्न ताहि मे बाधक बनि गेल । तखन सामजिक संबंधकेँ सीमित करबाक विचार आएल । एहिमे हमरा बिन प्रयासक सफलता भेटि गेल छल । एकर कारण छल हमर नहि खतम प्रतीत होमएबला बीमारी । एहिमे विभिन्न डॉक्टरक ओपिनियन, किछु गलत ऑपरेशन आ एकर सम्मिलित इम्प्रेसन ई जे आब हमरा अपाहिजक जीवन जीबए पड़त । आनक बात तँ छोड़ू हमरा अपनो मोनमे ई बात आबए लागल छल । लगैत छल जे डॉक्टर सभ फूसियाहिँक आश्वासन दए रहल अछि । एहि क्रममे फोन सँ लऽ कए हाल समाचार पुछनहारक संख्या सेहो घटि गेल छल । से जखन अचानके बैशाखी आ फेर छड़ीपर अएलाक बाद हम कार चलाबए लगलहुँ तँ बहुत गोटेकेँ फेर सँ हमरा संग सामान्य संबंध बनाबएमे असुविधा होमए लगलन्हि । जे हमरासँ दूर नहि गेल रहथि तनिकासँ तँ हम जबर्दस्तीयो संबंध रखलहुँ मुदा दोसर दिशि गेल लोकसँ हमर व्यवहार निरपेक्ष रहैत छल से पुनःसंबंध बनेबासँ लोक हतोत्साहित रहए लगलाह । दुर्दिनमे जे हमरापर हँसथि तनिकर प्रति ई व्यवहार सहानभूतिप्रदहि मानल जएत । एहिसँ समयधरि खूब बचए लागल। शुरुमे तँ लागल जेना ऑफिसमे क्यो चिन्हत आकि नहि । मुदा जखन हम ऑफिस पहुँचलहुँ तँ लागल जेना हीरो जेकाँ स्वागत भेल होअए ।

मुदा एहिमे ई बात संगी-साथी सभ नुका लेलक जे हमर छड़ीसँ चलनाइ हुनका सभक भीतर हाहाकार मचा रहल छलन्हि । सभ मात्र हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहैत छलाह । जखन हम छड़ी छोड़ि कए चलए लगलहुँ आ जीन्स शर्ट-पैंट पहिरि कए अएलहुँ तखन एक गोटे संगी कहलक जे आब अहाँ पुरनका रूपमे घुरि रहल छी । एहि बातकेँ हम घरपर आबि कऽ सोचए लगलहुँ । अपन चलए कालक फोटोकेँ पत्नीक मदति सँ हैण्डीकैम द्वारा वीयोडीग्राफी करबएलहुँ । एकबेर तँ सन्न रहि गेलहुँ । चलबाक तरीका आबो नैँगड़ा कए दौगबा सन लागल छल । पहिने तँ आर बेशी होएत मुदा संगी सभ एको रत्ती पता धरि नहि चलए देलक । बादमे घरक लोक कहलक जे ई तँ बड़ड कम अछि, पहिने तँ आर बेसी छल । तखन हमरा बुझबामे आएल जे संगीसभ आ ओ सभ जे हमरासँ लगाव अनुभव करैत छलाह, तनिका कतेक खराब लगैत होएतन्हि । तकरा बाद हमरा हुनकर सभक प्रोत्साहन आ हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहबाक रहस्यक पता चलल । अपन प्रारम्भिक जीवनक एकाकीपन आ नौकरी-चाकरी पकड़लाक बाद सार्वजनिक जीवनमे अलग-थलग पड़ि जएबाक संदेह, आशा, अपेक्षा किंवा अहसास-फीलिंगक बाद जे एहि तरहक अनुभव भेल से हमर व्यक्तित्वक भिन्न विकासकेँ आर दृढ़ता प्रदान केलक''।

ओ तँ छल हमरे संगी मुदा कल्पना कऽ रहल छल जेना कोनो पैघ वियाहल व्यक्ति होअए आ काल्पनिक रूपसँ ठीक भेलाक बादक वर्णन अपन डायरीमे कएने छल । मजदूरक टोल आ साँझमे ठेलागाड़ी पर हुनका लोकनि द्वारा अपन कपड़ा सुखाएब, एहि सभकेँ देखि कऽ हम विचलित भऽ जाइत छलहुँ । ई देखलाक बादो जे हुनका लोकनिक मुँहपर हँसी छन्हि, बिन घर रहलो उत्तर । छोट-छोट बच्चा सभकेँ भीख मँगैत देखब, हम सभ जखन खेलाइत रही तँ ओकरा सभक हमरा सभक दिशि कातर दृष्टिए देखब । लोक सभक दुत्कार, कहियो हमरो पर ई विपत्ति आबि जाए तखन ? फेर दोसर क्यो हुनका लोकनिक दिशि तकबो नहि करन्हि, तँ की हमही टा आन बच्चासँ भिन्न छी आ ई सभ सोचनी लागल रहैत छल । हम ई सोचैत रही जे जखन हम कोनो स्थान पर नहि रहैत छी तखनो तँ सभ कार्य गतिसँ चलैत अछि । किताबमे हम पढ़ने रही जे किछु जीव जंतु मात्र दू डाइमेंसनमे देखैत अछि । हमरा सभ तीन डाइमेंसनमे जिबैत छी, तँ ई जे भूकंपक आ आन-आन विपत्ति सभ अबैत अछि से कोनो चारि डाइमेंसनमे कार्य करए बलातँ नहि कऽ रहल अछि जे कल्पनातीत अछि ।

पाँच पाइमे लालछड़ी बलाकेँ देखा कऽ बाबूजी कहैत रहथि जे देखू ईहो लोकनि अपन परिवारक गुजर पाँच-पाँच पाइक ई लालछड़ी बेचि कए कऽ रहल छथि । पाइक महत्व आ ओकर आवश्यकता जतेक बढ़ाऊ ततेक बढ़त । अपन-अपन वातावरणक आ जीवनक बादक जीवनक - एहि सभक संग जीनाइ,

रातिमे बड़बड़ेनाइ ई सभ गोट कार्यक संग पढ़ाइ आ पिताक नौकरीक परेशानी सभ चलैत रहल । हमरा मोन पड़ैत अछि जे एक दिन भोरे-भोर एक गोट ठीकेदारक सूटकेशपर हमर बाबूजी जोरसँ लात मारने छलाह । सूटकेश जा कऽ दूर खसल आ ओहिमे राखल रुपैय्या सौँसे छिड़िया गेल । हमर एक गोट पितियौत भाइ छलाह जे सभटा पाइकेँ उठा सूटकेशमे राखि वापस ठीकेदारकेँ दऽ वापस कए देलखिन्ह आ ईहो कहलखिन्ह जे जल्दीसँ भागि जाऊ नहि तँ पुलिसकेँ पकड़बा देताह । माँ हमरा भीतरका कोठली लऽ गेलीह । हम बच्चा छलहुँ मुदा हमरा बुझबामे आबि गेल छल जे ई पाइ हमरा बाबूजीकेँ गंगा-ब्रिजक ठीकेदारक दिशिसँ अपन इंजीनियरिंग छोड़ि कऽ बिना कोनो भाङठक कार्य होमए देबा लऽ देल जएबाक प्रयास छल । बाबूजी बहुत काल धरि बड़बड़ाइत रहलाह । कखनो दालिमे नून कम रहला उत्तर आकि आन कोनो कारणसँ बर्त्तनकेँ फेंकबाक स्वरसँ देह सिहरि जाइत छल । फेर किछु क्षणक चुप्पीक बाद सभ बच्चाकेँ बजाओल जाइत छल आ दुलार मलार होइत छल । हम वर्गमे प्रथम अबैत छलहुँ आ परिणाम निकलबाक दिन एकटा कॉलोनीक सिन्हा चाची सभ बेर लड्डा खोआबैत रहथि । प्रायः गुर आ आटासँ बनल एहि लड्डाक स्वाद हम बिसरि नहि सकल छी । ओहि चाचीक एकटा अर्द्ध-पागल दिअर छलन्हि जे सितार बजबैत रहैत छल । एक बेर गंगामे स्टीमरसँ हमरा सभ ओहि पार जाए रहल छलहुँ तँ ओ ओहि स्टीमर परसँ अपन भाएकेँ फेंकबा लेल ओ उद्यत भऽ गेल छल । ओहि चाचीकेँ एकटा बेटी रहन्हि रजनी । पता नहि कोन बिमारी भेलैक, बेचारी एलोपैथिक दवाइक फेरमे ओछाओन धऽ लेलक । हम सभ कताक बेर हुनका देखबा लेल जाइत रही । हमरा दोसराक अहिठाम जाएमे धाख होइत रहए मुदा ओतए ककरो संगे पहुँचि जाइत रही । हुनका सभ क्यो दीदी कहैत रहियन्हि । हमरा सभसँ बड्ड पैघ रहथि । मुदा किछु दिनक बाद हुनकर मृत्यु भऽ गेलन्हि । मृत्युसँ हमर मानसिक द्वंद, एहि घटनाक बाद आब आर लग बुझाए लागल । हुनकर मृत्युक बादो ओ चाची अपन बेटा सभकेँ अगिला दिन स्कूलक हेतु तैयार कए पठेलन्हि जे कॉलोनीक एकगोट दोसर दबंग चाचीकेँ पसिन्न नहि पड़लन्हि आ एकर चर्चा बहुत दिन धरि कॉलोनीमे होइत रहल । चाचीक भाइ मुजफ्फरपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजीमे व्याख्याता रहथि। एहि कॉलेजसँ हमर बाबूजी सेहो इंजीनियरिंग पास कएने रहथि । ओ हाजीपुरमे गंगा-ब्रिज कॉलोनी स्थित हमर सभक घर पर आएल रहथि आ अपन बहनोइकेँ बड्ड फझ्झति कएने रहथिन्ह । पटना जा कए नीक इलाज करेबामे असफल रहबाक कारण पाइकेँ बतेने रहथिन्ह । हमरा मोनमे ई विचार आएल रहए जे पटनामे पैघ डॉक्टर रहैत अछि जे मृत्युकेँ जीति सकैत अछि । मुदा एक दिन हमरा सभक संग रहएबला गामक पितियौत भाए जखन परमाणु युद्धक चर्चा कए रहल छलाह आ ईहो जे ओहि समयमे पृथ्वी पर एतेक परमाणु अस्त्र-शस्त्र विद्यमान रहए जाहिसँ पृथ्वीकेँ

कताक बेर नष्ट कएल जा सकैत अछि, तखन हमर ईहो रक्षा कवच टूटि गेल छल ।

हमर पुरान जीवनक ई एकटा नीक अनुभव छल। बादमे दुर्घटना तँ हँसी-खेल भऽ गेल । नहि तँ एकरासँ कोनो दुःख होइत छल नहियेे कोनो लक्ष्यक प्रति तेना भऽ कए पड़ैत छलहुँ । खेल सेहो वैह नीक लागए जाहिमे टीम नहि वरन व्यक्तिगत स्पर्धा रहैत छल कारण टीममे दोसराक प्रदर्शन हारिक स्थितिमे बहन्ना बनि जाइत अछि । एकर कारण सेहो छल, किएक तँ एहिमे टीमक प्रदर्शन पर व्यक्तिगत प्रदर्शन निर्भर नहि करैत छल आ जे बड़ाइ आकि बुराइ भेटैत छल से व्यक्तियेकेँ भेटैत छल । अहाँ ई नहि कहि सकैत छी जे ओकरा कारण हम हारलहुँ, हम तँ नीक प्रदर्शन कएने रही । स्कूल आ पढ़ाइक अतिरिक्त ओना क्रीड़ाक स्थान न्यूने छल । लक्ष्यक प्रति जे निरपेक्षता बादमे हमरामे आएल छल से ओहि समयमे नहि छल । ओहि समयमे तँ जगतकेँ जितबाक धुनि छल । द्वितीय स्थानक तँ कोनो प्रश्ने नहि छल । द्वितीय स्थानक माने छल अनुत्तीर्ण भेनाइ । खेलोमे, पढ़ाइयोमे, मारि-पीटमे सेहो । गाम आन-जान खूब होइत रहए । गाम जाइत रही तँ महादेव पोखरि परका स्कूलमे काका शिक्षककेँ कहि अबैत छलाह आ हम छुट्टीयो मे स्कूल जाइत रही । कबड्डी, सतघरिया, लाल-छड़ी ई सभ खेलक नामो तँ शहरक बच्चाकेँ बूझल नहि होएतैक । अस्तु ओतुक्का पढ़ाइक सभ प्रणाली अलग छल । प्रतिदिन करची कलमसँ लिखना लिखएमे देह सिहरि जाइत छल आ रोजनामचा सेहो एहि प्रकारे लिखैत रही-भोरे-सकाले उठलहुँ नित्य कार्यक उपरांत जलखइ कऽ पढबाक लेल बैसलहुँ, फेर स्कूल गेलहुँ, ओतए सँ एलहुँ, पुनः खेनाइ खेलहुँ । फेर स्कूल गेलहुँ, फेर गाम पर एलहुँ आ फेर जलखै कएलहुँ । फेर खेलाइ लेल गेलहुँ । फेर आबि कऽ लालटेनक शीशाकेँ साफ केलहुँ, फेर पढ़लहुँ आ फेर भगवानक नाम लऽ सूति गेलहुँ । रवि दिनक छुट्टीक बदला सोम दिन दू दिनक रोजनामचा लिखि कए लऽ जाए पड़ैत छल । ओतए १५ अगस्तक उत्साह सेहो दोसरे तरहक छल । साँझ-आ भोरमे १५ अगस्त- स्वतंत्रता दिवस, भारत माताक जय केर संग सभ महापुरुष लोकनिक जय करैत जाइत छलहुँ । मुदा मास्टर साहेबक ई गप नहि बुझना गेल छल जे मारि-पीट नहि करैत जइहऽ । मुदा जखन भोरमे जयक नाद गामक सीमान पर सँ जाए काल सुनलहुँ तखन पता चलल जे ई गप मास्टर साहब किएक कहने छलाह । महिनाथपुरक स्कूलक बच्चा सभ जखने ओम्हरसँ अबैत रहए आकि तखने मारि बजरि गेल । कोनहुना झोप-ताप कएल गेल । फेर गामपर जे अएलहुँ तखन पुरनका बैचक विद्यार्थी सभ अपन खिस्सा शुरू कएलक जे कोना पोखरिमे पैसा-पैसाकेँ केराक थम पानिमे दऽ कए स्वतंत्रता दिवस दिन मारने रहए गेल छलथिन्ह अनगौआँ केँ । फेर ओहो सभ दोसर साल बदला लेबाक ताकिमे छल मुदा ताहू बेर...। दोसर

साल फेर वैह मीटिंग, दुनू गामक स्कूलक मध्य मुदा एहि बेर दोसर गाम बला टीम रस्ता बदलि लेलक ।

मारि बझब गाममे एकटा पर्व जेकाँ छल । दुर्गास्थानमे चॉकलेटक बुइयामक फूटब आ कोनो कटघरा किंवा टाटक खुट्टा उखाड़ि कए मारि-पीट शुरू करब । आ बादक जे गप्प होइत छल से मनोरंजक । एक बेर एकटा अधवयसू एक गोट नव-नौतारकेँ दू-चारि चमेटा मारि देलन्हि । बादक घटनाक हेतु हम कान पथने रही तँ हमर पितियौत ओहि गौआँकेँ पुछलखिन्ह जे वैह बात रहए ने । सभ क्यो एकमत रहथि जे वैह बात रहए । एहि बेर हम हारि कऽ पुछलियन्हि जे वैह कोन बात अछि जे सभकेँ बूझल अछि मुदा हमरा नहि बूझल अछि । ओ कहलन्हि जे एहि युवापर अपन बचियाक घटकैतीक हेतु ओ अधवयसू गेल रहथि मुदा कथा नहि सुतरलन्हि । ओहि युवकक विवाह दोसर ठाम भए गेलन्हि, से तकरे कैन लऽ कए कोनो फुसियाहीक लाथ लऽ आइ ओकरा कुटलन्हि अछि । हम पुछलियन्हि जे ज्योँ विवाह भऽ जाइत तँ ससुर जमाएक संबंध रहैत । तखन एहि फुसियाही गप पर मारि बजरैत ? सभ कहथि जे अहाँ तँ तेसरे गप पर चलि गेलहुँ । रातिमे नाटक देखैत अकासमे डंडी-तराजू देखब, खाली डंडी छैक तँ तराजू कियैक कहैत छियैक? फेर ओहि नाटकोमे अनगौँआ सँ मारि बझेबाक हमर संगीक एकटा चालि । भेल ई जे नाटक देखए काल ओ एकटा अनगौँआकेँ खौँझा रहल छलाह । मारि अंट-शंट बकैत छलाह । आ ओ किछु बाजए तँ कहैत छलाह जे अखने नरेण भैयाकेँ बजाएब । ताहिपर ओ कहलन्हि जे जाऊ अहाँक नरेण भैयाक डर हमरा नहि अछि । आब आगू सुनू । हमर मित्र अनायासहि जोरसँ कानए लगलाह, दहो-बहो नोर खसए लगलन्हि । भोकारि पाड़ैत नरेण लग पहुँचलाह जे एकटा अनगौँआ मारलक अछि आ कहैत अछि जे के नरेण ओकर हमरा कोनो डर नहि अछि, आरो अण्ट-शण्ट । आब नरेण भैया पहुँचलाह जे बता तँ ओ के छी ? जखने टॉर्च ओहि व्यक्तिपर देलन्हि, बजलाह, भजार यौ । अहाँ छी । जरूर अही छौड़ाक गल्ती छी । अनका विषयमे कहैत तँ पतिया जइतहुँ । मुदा अहाँक विषयमे । आ ईहो नहि कहलक ई छौड़ा जे अहाँ तमसेलियैक वरन् ई जे मारलन्हि अछि । आ नेप की चुआ रहल छल जेना कतेक मारि पड़ल होअए । हमरा सँ नरेण पुछलन्हि जे भाए किछु एकरा कहबो करएलन्हि तँ हम कहलियन्हि जे नहि । एहि पर हमर मित्रक नोर जतएसँ आएल छलन्हि, ततहि चलि गेलन्हि । फज्झति मूड़ी झुका कए सुनलन्हि आ नरेण भाइक गेला पर सभकेँ कहलन्हि, जे ई नरेण काकाक संगी छथिन्ह, क्यो हिनका किछु कहबहुन्ह तँ बेजाए भऽ जाइत जएतह । आ आस्तेसँ कहलथि जे बचि गेल आइ ई ।

गामक प्राइमरी स्कूलमे सभ क्लाक परीक्षा होइत छल । संगीत, चित्र, नाटक । गाममे हारमोनियम, ढ़ोलक बजेनहार खूब रहथि । पहिने दुर्गा पूजाटामे नाटक होइत छल मुदा पछाति जा कऽ कृष्णाष्टमी, काली पूजा इत्यादिमे सेहो

नाटक खेलेनाइ शुरू भऽ गेल । हरखा रामलीला पार्टी सेहो एक महिना खेला कऽ गेल छल । अह्मे दू चारि दिनपर रामलीलाक बीचमे नाटक होइत छल । खेल शुरू भेल रामलीला पार्टीक बिना बजेनहि । मुदा दू चारि दिन धरि माला क्यो ने क्यो उठबैत गेलाह । रामलीला पार्टीक सभ कलाकारक एक दिनक खेनाइक खरचाकेँ माला उठेनाइ कहल जाइत छल । दू-चारि दिन तँ माइक पर क्यो न क्यो जोशमे जा कऽ हम माला उठाएब तँ हम उठाएब कहैत गेलाह मुदा दू चारि दिनुका बाद रामलीला पार्टीक आर्द्र अनुरोधकेँ देखैत गाँँआ सभ टोलक अनुसार माला उठेबाक एकटा क्रम बना देलखिन्ह । ओहि समयमे अभिनय देखनाइ एकटा चमत्कार सन बुझाइत छल आ हम अपन कैरियर बादमे अभिनेताक रूपमे बनेबाक मोने-मोन इच्छा रखैत छलहुँ । ओहि समय एक शनि स्कूलमे नाटक खेलेबाक प्लान शिक्षकगणक स्वीकृतिसँ बनल । नाटकक किताब कतएसँ अएत ताहि द्वारे हम एकटा नाटक दानवीर दधीची लिखलहुँ । स्कूलक कलाकार सभकेँ एकत्र कएलहुँ । आब कलाकार सभक नाम तँ सुनू । पोटहा, लुल्हा, नेँगड़ा, पोटसुड़का, लेलहा, ढ़हीबला, कनहा, अन्हरा, तोतराहा, बौका, बहिरा ई सभ हमर बाल कलाकार रहथि । कारण जे अपनाकेँ शुभ्र-शाभ्र बुझथि से किएक नाटक खेलेताह । दहीकेँ तोतराकेँ कहियो क्यो ढ़ही बाजल तँ ओकर नाम ढ़हीबला भऽ गेलैक। सर्दीमे कहियो पोटा चुबैत रहि गेलैक तँ पोटहा भऽ गेल आ दोसर एहन भेल तँ दुनूमे अन्तर कोना करी । से ओ जे पोटा खसैत काल सुरकितो अछि से तकर नाम भऽ गेल पोटसुरका । आगाँ आऊ । ककरो अन्हरिया रातिमे ठेस लागि गेलैक तँ कोन अतत्तः भेलैक ? हँ ओकर नाम अन्हरा भऽ गेलैक । बच्चामे देरीसँ बजनाइ शुरू कएने छलहुँ तँ अहाँ भऽ गेलहुँ बौका । सोझगर छी तँ लेलहा । गपकेँ अनठबैत छी तँ भेलहुँ बहिरा । नव घड़ी पहिरलाक बाद (घड़ी पाबनि दिन वनस्पतिक घड़ी) हाथ कनेक सोझ राखि लेलहुँ तँ भेलहुँ लुल्हा । तोतराइत तँ सभ अछि मुदा कबियाठी टोलक छी तँ लोक नाम राखि देलक तोतराहा । कनेक डेढ़ भऽ ताकि देलहुँ आकि पिपनीकेँ उनटा कऽ ककरो डरेलहुँ तँ भेलहुँ कनहा । ठेस लगलाक बाद कनेक झखा कऽ चललहुँ तँ भेलहुँ नेंगड़ा । आ ज्योँ कनेक पाइ बलाक बेटा छी आकि माए कनेक दबंग छथि तँ कनाह रहलो उत्तर क्यो कनहा कहि कऽ देखओ !

अस्तु एहि बाल कलाकार सभक संग शनि दिन होएत हमर नाटक दानवीर दधीची।

आ नियत तिथिकेँ शुरू भेल दानवीर दधीची नाटक । स्कूल खुजबासँ किछु काल पहिनहि हम सभ पहुँचि गेलहुँ स्कूल । बरण्डाक एक कोनमे गाम परसँ आनल चद्दरिक पर्दा बनल । रस्सी ठीकसँ नहि लागि सकल से ईएह निर्णय भेल जे चद्दरिकेँ ऊपर उठा-खसा कए काज निकालल जएत । तकरा बाद कलाकार सभ अपन-अपन ड्रेस पहिरए लगलाह । ड्रेस की छल मात्र पाउडर लगा कए आ गमछा-धोती पहिरि कए, सभ सभ तरहक ड्रेस पहिरि लेलक । जाहि

मास्टरसाहेबक ड्यूटी लागल छल नाटकक संचालनक हेतु, हुनका कोनो आवश्यक कार्य मोन पड़ि गेलन्हि से ओ ओहि दिन छुट्टी मारि देलन्हि । गामक पैघ तुरियाकेँ तावत बुझबामे आबि गेलैक जे प्राइमरी स्कूलक छौड़ा सभ नाटक कऽ रहल अछि । से तुरत्तेमे दस टा पैघ बच्चा सभ जूटि गेल आ पिहकारी देनाइ शुरू कऽ देलक । हम सभ कलाकारकेँ कहलियन्हि जे ई सभ उत्तेजित कऽ कए हमर सभक नाटककेँ दूरि करत । मुदा छोटे भाइ भीड़ि गेलाह ।कहए लगलाह जे हे बौआ सभ, हम नाटकक ड्रेसमे छी तँ ई नहि बुझू जे मारि नहि करब। एखने ड्रेस फेकि-फाइक कऽ हम सभ कर्म कऽ दइ जाएब अहाँ सभक। मुदा पिहकी पाड़नहारक संख्यामे घटती नहि भेल । आ छोटे भाइ बाजि उठलाह जे छोड़ू आइ एहि नाटककेँ । हिनका सभक बदमस्ती हम एखने ठीक करैत छी। आ खुट्टा उखाड़ि कऽ दौगलाह । तावत थाम्ह-थोम्ह करए बलाक जुमान भऽ गेलैक आ तकरा संगहि नाटक दानवीर दधीची जे हमर लिखल छल आ जकर मंचनक निर्देशन हम करए बला छलहुँ, बीचहिमे खतम भऽ गेल । किछु दिन धरि छोटे भाइसँ मूहा-फुल्ली रहल । ओ आबथि आ कहथि जे की करू, तामस उठि गेल छल । ओहो सभ अतत्तह कऽ देने छल । फेर किछु दिनुका बाद सभटा सामान्य भऽ गेल । रामलीलाक आ नाटकक भूत सेहो एहि घटनाक बाद हमरा परसँ उतरि गेल ।

गणित आ विज्ञानक अतिरिक्त कोनो आन विषयकेँ नहि तँ हम एक बेरसँ दोसर बेर पढ़ैत छलहुँ आ नहिये एहि हेतु मास्टर साहेबे कहैत छलाह । कोनो विद्यार्थीकेँ मास्टर साहेब इतिहास आ नागरिक शास्त्रक किताबकेँ एकसँ दोसर-तेसर बेर पढ़ैत देखि जाइत छलाह तखन तँ ओहि विद्यार्थीक नामे ओहि विषयसँ पड़ि जाइत छल । आब ओ गणितो पढ़त तँ ओकरा सुनए पड़तैक जे बाबू ई इतिहास नहि छियैक जे कंठस्थ कए रहल छी । सैया-निनानबे अनठानबे-सन्तानबे-छियानबे-पनचानबे कहैत-कहैत आ बोराक आसनीकेँ बरखाक समयमे छत्ता बनओने पाँच-चारि-तीन-दू-एक-एक-एक करैत भागैत विद्यार्थी सभ । कहियो छुट्टीक दिन ज्योँ कबड्डी खेलाइ काल मास्टर साहेब साइकिल पर चढ़ल देखा पड़थि तँ कबड्डी-कबड्डी, मास्टर साहेब प्रणाम, कबड्डी-कबड्डी कहैत भागैत रहथि विद्यार्थी । आ एहने एकटा घटनामे हम मास्टर साहेबकेँ ठाढ़ भऽ कए साँस तोड़ि कए प्रणाम कएने रहियन्हि आ एहि क्रममे विपक्षी पार्टी द्वारा लोकि लेल गेल छलहुँ तँ एहि पर कोइलख बला मास्टर साहेब प्रसन्न भेल रहथि आ तकर चर्चा स्कूलमे सभक समक्ष कएने रहथि । बुझु जे गामक प्रवास, बादक समयमे एकटा पैघ संबल सिद्ध भेल छल । खड़ाम पहिरि कए गतिसँ दौगैत रही फेर बर्षामे आरि पर पिच्छड़ पर खड़ाम पहिरि कए दौगैत रही । पिच्छड़ पर खड़ाम नहि पिछड़ैत छल । बादमे हवाइ चप्पलक आगमन भेलाक बाद कतेक गोटे खसि-खसि कए डाँरपर गरम पानिक भाप लैत छलाह । अगिलही, किरासन

तेलक लाइन, रोशनाइक गोटी, लबनचूस, रबड़क बॉल, ओधिक गेंद, पसीधक रसक विषसँ पोखरिमे माछ मरलाक बाद भेल दू टोलक बीचमे बाझल मारि, बाढ़िक दृश्य देखबाक लेल जुटल भीड़, छोट-छोट गप पर होइत पंचैती, आमक मासमे आमक जाबीसँ बहराइत गछपक्कू आमक छटा, ई सभ टा अलोपित तँ नहि भऽ जएत ।

''काका यौ, हम नहि लगेलिअन्हि कबकबाउछ''। ई गप कहैत हमर आँखिमे नोर आबि गेल छल । बनाइकेँ किछु गोटे छौड़ा सभ दलान पर सुतलमे कबकबाउछ लगा देने छलन्हि । कलम दिशिसँ खेला-कुदा कए सभ आबि रहल छल । महारक कातमे कबकबाउछक पात तोड़लक आ एकर पातकेँ चमड़ा पर रगड़लासँ होअएबला परिणामपर चर्चा होमए लागल । क्यो अपन चमड़ा पर लगेबाक हेतु तैयार नहि छल से दलान पर बनाइकेँ सुतल देखि हुनके देह पर पात रगड़ि देलकन्हि । पाछाँसँ हम अबैत छलहुँ आ सभ छौड़ा तँ निपत्ता भए गेल, बनाइक नजरि हमरा पर पड़लन्हि । से ओ काकाकेँ कहि देलखिन्ह । काका हमर कोनो गप नहि सुनलन्हि आ दस बेर कान पकड़ि कए उट्ठा-बैसी करबाक सजा भेटल । संगहि साँझमे संगी सभक संग खेलेबाक बदला काका आ हुनक भजार सभक संग खेत पथारक दिशि घूमबाक निर्णय भेल जाहिसँ हमर बदमस्ती कम होअए । बाढ़िक समय छल, नाओपर बाढिक दृश्य आ सिल्लीक शिकार । बादमे तँ एकर शिकारपर सरकार प्रतिबंध लगा देलक । मुदा मोन हमर टाँगल रहल गाम परक कल्पित खेल सभक दिस, जे हमर सभक संगी सभ खेलाइत होएताह । ई छल पहिल दिन । दोसर दिन बेरू पहर धरि हम एहि प्रत्याशामे छलहुँ, जे आइ फेरसँ काकाक संग जाए पड़त । ओना संगी सभकेँ हम ई भास नहि होमए देलियैक जे हम एको रत्ती चिन्तित छी आ ओ सभ नाओ आ सिल्लीक खिस्सा तन्मयतासँ सुनैत रहलाह । मुदा हमर मुखाकृति देखि कए काका पुछलन्हि, जे आइ हमरा सभक संग जएबाक मोन नहि अछि ? तँ हम नञि नहि कहि सकलियन्हि । मुदा फेर अपनाकेँ सम्हारैत कहलियन्हि जे मोन तँ गामे पर लगैत अछि । तखन काकाकेँ दया लागि गेलन्हि आ एहि प्रतिबन्धक संग जे हम आब गामपर बदमस्ती नहि करब हमरा गाम पर रहबाक छूटि भेटि गेल ।

गाममे डेढ़ साल धरि रहलहुँ आ जखन बाबूजीक ट्रांसफर पटना भऽ गेलन्हि, तखन बड़का भैयाक संगे पहलेजाघाट आ महेन्द्रूघाट दऽ कए पटना आबि गेलहुँ। ओतए स्कूल सभमे प्रवेश परीक्षा होइत छल आ बाबूजी भाएकेँ छठासँ सतमाक हेतु आ हमरा पचमासँ छठा आ सतमा दुनू वर्गक हेतु प्रवेश परीक्षामे बैसओलन्हि। आ तकर बाद हमरा ई बुझबामे आएल जे किएक हमरा बाबूजी पचमेमे छठाक विज्ञान आ गणित पढ़ि लेबाक हेतु कहने छलाह । प्रवेश परीक्षामे ईएह दुनू विषय पूछल जाइत छल । अस्तु हमर छठा आ सतमा दुनू वर्गक लेल आ भाएकेँ सतमाक लेल चयन जिला स्कूलमे भए गेल । फेर शहरक सरकारीयो स्कूलमे

ड्रेस छलैक, से आश्चर्य । से दुनू गोटे बाबूजीक संग दोकान गेलहुँ आ ड्रेस सियाओल गेल, दू-दू टा हाफ पैंट आ एक-एकटा अंगा । स्कूलक पहिलुके दिन मारि होइत-होइत बचल । एकटा छौड़ा हमरा देहाती कहलक तँ से तँ हमरा कोनो खराप नहि लागल । ओहि उमरिमे देहाती शब्द हमरा नीके लगैत छल, मुदा आइ सोचैत छी तँ लगैत अछि जे ओ ई शब्द व्यंग्यात्मक रूपेँ कहने छल। फेर जखन ओ देखलक जे ई तँ नहि खौँझाएल तखन बंगाली-बंगाली कहनाइ शुरू कएलक । हम दुनू भाइ पातर दुबर आ शुभ्र-शाभ्र चिक्कन-चुनमुन लगैत छलहुँ, ताहि द्वारे ओ हमरा सभकेँ बंगाली बुझि रहल छल। हम ई व्यंग्य नहि सहि सकलहुँ आ ओकरा दिशि मारि-मारि कए छुटलहुँ । भाए बीच-बचाओ कएलक । आब ओ छौड़ा कानय-खीजय लागल आ पैघ वर्गक कोनो बदमाश विद्यार्थीकेँ बजाबए लेल गेल । फेर घुरि कए जे आयल तँ ओकर कानब-खीजब बन्न भए गेल छलैक, हमरा कहलक जे हमर भाग्य नीक अछि जे जकरा ओ बजाबए गेल छल से आइ स्कूल नहि आएल अछि । दू तीन दिन धरि हम ई गुन-धुन करैत रहलहुँ जे ओ ओहि बदमाशकेँ बजा कए नहि आनि लिअए । ओहिना किछु दिनुका बाद ओकरा फेर कोनो दोसर छौड़ासँ झगड़ा भेलैक आ ओहि दिन ओ हीरो छौड़ा स्कूल आएल छल । हमरे सोझाँमे ओ हमर कक्षामे आएल आ दोसर विद्यार्थीकेँ एक फैट पेटमे मारलकैक । क्यो बचबए लेल तँ नहि गेलैक मुदा बादमे जखन एकटा क्लासमे शिक्षक नहि अएलाह आ विद्यार्थी सभ खाली गप-शप कए रहल छल तखन एहि बातक निर्णय भेल जे आब ओहि विद्यार्थीसँ क्यो गप नहि करत आ क्लास टीचरसँ एहि गपक शिकाइत कएल जएत जाहिसँ ओ ओहि बदमाश विद्यार्थीक क्लास टीचरकेँ एहि घटनाक विषयमे बताबथि । आब ओ पिनकाह विद्यार्थी शुक-पाक करए लागल । फेर ओ ओहि विद्यार्थीक लग गेल, ओकरा कान भरि आएल जे सभ ओकरा विरुद्धमे चालि चलि रहल अछि । ओ बदमाश आबि कए सभकेँ उठबाक लेल कहलक मुदा क्यो नहि उठल । तकर ओ हमरा कहलक जे उठू । हम उठि गेलहुँ आ तखन ओहिना एक-एक कऽ कए तीन चारि गोटेकेँ उठेलक आ फेर सभकेँ उठबाक लेल कहलक । सभ उठि गेल । तखन सभकेँ धमकी देमए लागल । मुदा एहि बेर हमर सभक क्लास मोनीटर किछु हिम्मतसँ काज लेलक आ ओकरा ओहि छौड़ाक विषयमे कहए लागल । हमरा देखा कए कहलक जे एकरा देखैत छी? कनियो बदमाश लगैत अछि, एकरो अहाँक नाम लऽ कए दबाड़ि रहल छल । ओ छौड़ा तँ हुण्ड छल से ओकर पारा चढ़ि गेलैक आ हमर वर्गक पिनकाहा छौड़ाकेँ चेतौनी देलकैक जे आइ दिनसँ कनैत-खिजैत ओकरा लग नहि आओत आ ओकर नाम लऽ कए ककरोसँ झगड़ा नहि करत । एहिना स्कूल चलि रहल छल आकि एक दिन एकटा छौड़ा वर्गमे पिहकी मारि देलकैक । ओ छौड़ा बीचहिमे बम्बई भागि गेल छल बाल कलाकार बनबाक लेल । घुरि कए आएल तँ वर्ग शिक्षक पुछलन्हि जे किएक घुरि अएलहुँ । तँ ओ हुनका कहलकन्हि जे सभ ओतए

कहलक जे एतए तँ सभ बी.ए., एम.ए. अछि, अहाँ कमसँ कम मैट्रिको कए लिअह । आब पिहकीक बाद वर्ग शिक्षक पढ़ाइ छोड़ि कए ओकर अन्वेषणमे लागि गेल । पिहकी कोन दिशिसँ आएल । बहुमतक आधार पर एक कातकेँ छाँटि देल गेल । आब आगूसँ आएल आकि पाछूसँ । ताहि आधार पर सेहो एकटा बेंच निर्धारण भए गेल । ओहि बेंच पर छह गोटे छलाह । आब ई निर्धारण होमए लागल जे बाम कातसँ आयल आकि दहिनसँ । फेर छहमे सँ दू गोटेक निर्धारण बहुमतक आधार पर कएल गेल । ओहिमेसँ एकटा हमरा लोकनिक बम्बइया हीरो छलाह, जनिकर बम्बइक खिस्सा टिफिनसँ लऽ कए लेजर क्लास धरि चलैत रहैत छल । मुदा एहि दुनू गोटेमे १:१ केर टाइ भए गेल कारण क्यो मानए हेतु तैयार नहि जे पिहकी के मारलक'' ।

एकर बाद डायरी खाली छल । नन्द बेटाकेँ बजा कए डायरी दए देलन्हि आ मात्र ई कहलन्हि जे पढ़ाई पर ध्यान दिअ । एहि बात पर लज्जित होएबाक कोनो बात नहि छल मुदा आरुणिकेँ हुनकर भाए बहिन एहि गपक लेल बहुत दिन धरि किचकिचाबैत रहलखिन्ह । अस्तु एक दिन ओ डायरीकेँ फाड़ि देलन्हि आ ई आत्मकथात्मक उपन्यास पूर्ण होएबासँ पहिनहि खतम भए गेल ।

नन्दक अव्यवस्थाक विरुद्ध शुरू कएल गेल संघर्ष किछु दिनका विराम लेने छल । गाममे बच्चा सभ डेढ़ साल रहल छलन्हि, दरमाहा बहुत दिन धरि बन्द छलन्हि । गाममे पैघ भाए एकटा भावी राजनीतिज्ञकेँ कहि कए नन्दक पदस्थापन क्षेत्रीय काजसँ हटा कए ऑफिसमे चित्र परियोजना आकि डिजाइनमे करबाए देने छलखिन्ह । संगे ईहो कहने छलखिन्ह जे अपन ऑफिस जाऊ आऊ आ बच्चा सभ पर ध्यान दिअ । सभसँ मिलि जुलि कए रहू । नन्द पटना आबि कए भाएक सभ गप पर ध्यान देने छलाह । पटनामे बेटीक कॉलेजमे नामांकन करबाए महाविद्यालयक पार्श्वमे किरायापर घर ताकलन्हि । दुनू बेटाक नामांकनक हेतु प्रवेश परीक्षा केर फॉर्म सभ भरबाए सभकेँ पटना बजा लेलन्हि । भातिजकेँ कहलखिन्ह जे सभकेँ लए कए आबि जाऊ आ पहलेजाघाटमे बच्चा बाबू बला नहि वरन बिहार सरकारक स्टीमर पकड़बाक आदेश देलखिन्ह । कारण एकटा निजी स्टीमर बच्चा बाबूक सेहो चलैत छल मुदा ओ बेशी पसेन्जर लए कऽ चलैत छल, संगहि सरकारी स्टीमर अपन समयसँ चलैत छल, ओहिमे पैसेंजर रहए वा नहि । सरकारी स्टीमरमे यात्रीक संख्या सीमित छल ताहि हेतु टिकट केर नियमित हिसाब छल आ सभ यात्रीक बीमा होइत छल, ई बात निजी स्टीमरमे नहि छल। भातिजक संग पत्नी आ पुत्र-पुत्री सभ आबि गेलखिन्ह । गंगा ब्रिज कॉलोनीमे नन्द एकाकी रहैत छलाह । परिवारक लोककेँ सेहो आसपड़ोससँ बेशी मेल-जोल करबाक अनुमति नहि देने छलाह । मुदा पटनामे सभटा उनटि गेल छल । पड़ोसमे एकटा रिटायर्ड फौजी छलाह, एकटा बिहार सरकारक पुलिस छलाह आ

एकटा बिहार सचिवालयक कर्मचारी । नन्द दुनू बेटाकेँ लए अगिला दिन तीनू गोटेक घर गेलाह आ सभसँ नमस्कार-पाती करबओलखिन्ह । बेटा-बेटी सभ स्कूल जाए लागल छलन्हि । नन्द पाँच किलोमीटर ऑफिस पएरे जाथि आ घुरती काल घरक काज-उद्यम सेहो करैत आबथि । जेना बृहस्पतिकेँ हाट लगैत छल तँ ओतएसँ हरियर तरकारी, चाउर दालि इत्यादि आनब, ई सभ । हाट रविक छुट्टीक दिन सेहो लगैत छल आ ओहू दिन अपने जा कए सभटा घरक काज करैत छलाह । बच्चा सभक काज मात्र पढ़बा धरि सीमित छल । दूध पैकेट बला अबैत छलन्हि कारण उठाना दुहबा कए अनबामे बच्चा सभक पढ़ाइमे भाँगठ पड़ैत । बड़का बेटा जे गंगा ब्रिज कॉलोनीमे कहियो ककरो फूल उखाड़ि लैत छल आ कहियो ककरो खिड़की पर गिट्टी फेंकि दैत छल, डेढ़ सालक ग्राम प्रवासक बाद शान्त भए गेल छलन्हि । नन्दकेँ मोन छन्हि जे कॉलोनीमे एक बेर बेटाकेँ लए पड़ोसीक ओहिठाम गेल छलाह आ पड़ोसीक पत्नीसँ बेटा क्षमा याचना कएने छलखिन्ह । कारण कार्यालयसँ अएला उत्तर ज्ञात भेल छलन्हि जे बेटा हुनका पर गिट्टी फेंकने छलखिन्ह, जखन ओ बेचारी खिड़की लग ठाढ़ि बाहर दिशि किछु देखि रहल छलीह । आ छोट बेटा एक बेर कोनो पैघ बच्चाकेँ पाथर फेंकि कए मारने छलखिन्ह, जखन ओ बच्चा साइकिल पर चढ़ल छल । भेल ई छल जे ओ पैघ बच्चा कॉलोनीक एक चक्कर काटि कए साइकिल लौटेबाक अपन वचनक पालन नहि कएने छल आ घुरलाक बाद -दोसर चक्कर लगा कए अबैत छी- ई बजैत-बजैत साइकिल लए आगू बढ़ि रहल छल । छोटका बेटा क्षमा याचना करबासँ सेहो मना कए देने छलखिन्ह कारण ओ सोचैत छलाह जे हुनकर कोनो गलती नहि छलन्हि । बेश तखन एहि बेर बच्चा सभकेँ जखन नन्द पड़ोसी सभसँ भेँट करबाबए लेल गेल छलाह तावत धरि बड़का बेटा तँ पूर्णतया अपन चञ्चल स्वभावक विपरीत स्वभावक भए गेल छलाह मुदा छोट बेटा अपन स्वभावपर दुराग्रह करैत स्थिर छलाह । नन्दक दुनू बेटा वर्गमे प्रथम अबैत छलन्हि । किछु दिन धरि सभटा ठीक-ठाक चलैत रहल । पुरनका सभटा चिन्ता-फिकिर लगैत छल जेना खतम भए गेल होअए । गामक एक दू गोटे सेहो पटनामे रहैत छलाह । महिनामे एकटा रवि निश्चित छल, जाहि दिन सभ गोटे कतहु घुमए लेल जाइत छलाह । एक रवि कोनो गाँआक अहिठाम तँ कोनो आन बेर चिड़ियाखानाक यात्रा । एक बेर चिड़ियाखाना गेल रहथि सभ गोटे तँ आरुणि नन्दकेँ पुछलखिन्ह-

“हमरा सभ आएल छी चिड़ियाखाना, बाहरमे बोर्ड लागल अछि बोटेनिकल गार्डेनक आ गेटक ऊपरमे लिखल अछि बायोलोजिकल गार्डेन”।

“पहिने सोनपुरमेला सभमे अस्थायी चिड़ै सभक प्रदर्शन होइत छल आ लोकक जीह पर ओकरा लेल चिड़ियाखाना शब्द आबि गेल । मुदा एतए तँ कताक बीघामे वृक्ष सभ लागल अछि, प्रत्येक वृक्ष पर ओकर नाम आ वनस्पतिशास्त्रीय विवरण सेहो लिखल अछि आ ताहि द्वारे एकर नाम अंग्रेजीमे

वनस्पति उद्यानक लेल बोटेनिकल गार्डन पड़ि गेल । मुदा बादमे अनुभव कएल गेल जे जन्तु आ वनस्पतिक रूपमे दू तरहक जीवविज्ञान अछि । एहि उद्यानमे वनस्पति, चिड़ै आ बाघ-सिंह इत्यादि सेहो प्रदर्शित अछि । ताहि द्वारे एकर नाम बायोलोजिकल गार्डन वा जैविक उद्यान दए देल गेल । पुरनका बोर्ड जतए-ततए रहिये गेल''।

एक बेर सभ गोटे गेल रहथि एकटा गाँआक अहिठाम । ओतए चर्चा चलए लागल जे गंगा पुल केर उद्घाटन दू तीन सालसँ एहि साल होएत- अगिला साल होएत एहि तरहक चरचा अछि । नन्दसँ ओ लोकनि पुछलखिन्ह-

''अहाँक बुझने कहिया धरि एहि पुलक उद्घाटन भए जएतैक । मुख्यमन्त्री तँ कहने छथि जे एहि साल एकर उद्घाटन भए जएतैक''।

''कहियो नहि होएतैक । दू-तीन सालसँ तँ सुनि रहल छियैक। यावत एकटा पाया बनैत छैक तँ ओहिमे ततेक ने बालु देने रहैत छैक जे किछु दिनमे दरारि पड़ि जाइत छैक । फेर राता-राती ओकरा तोड़ि कए फेरसँ नव पाया बनेनाइ शुरू करैत जाइत अछि''।

गंगा पुलक चरचा सुनि नन्दक सोझाँ पाया परसँ गंगाजीमे खसैत जोन-मजदूर सभक चित्र नाचि जाइत छलन्हि । नन्दक विवाद ठिकेदार आ संगी अभियन्ता सभसँ काजक संबंधमे होइत रहैत छलन्हि । एकटा पायाक कार्यक संबंधमे नन्द अपन विरोध प्रकट कएने छलाह, किछु दिनुका बाद ओ पाया फाटि गेल, एकटा पैघ दरारि पड़ि गेल छल बीचो-बीच । राता-राती ठिकेदार-अभियन्ता लोकनि ओकरा तोड़बेलन्हि । राति भरिमे कतहुसँ ओतेक विशाल पाया कोना टूटि सकैत छल, कैक दिन लगैत? से अगिला दिन दरारिक स्थान पर तिरपाल बिछाओल गेल, जे ककरो नजरि नहि पड़ि जाइ । एहि घटनाक चरचा बहुत दिन धरि होइत रहल । नन्दक आदर अपन नीचाँक कर्मचारीक बीच एहि घटनासँ बढ़ि गेल छलन्हि मुदा आब ठिकेदार आ अभियन्ता लोकनिक बीच नन्द रावण बनि गेल छलाह । सभ टा काज ठीक-ठाक चलि रहल छल । नन्दक बच्चा सभ गणित आ विज्ञानक अंकगणितीय प्रश्न सभ जनबरीसँ मार्च धरि बना लैत छलन्हि । मुदा घरक सभ काज किएक तँ नन्द स्वयं कए लैत छलाह, नन्दक बच्चा सभ स्कूल गेनाइ आ घर अएनाइक अतिरिक्त बाहरी दुनियासँ अनभिज्ञ छलाह । कतओ घुमए जाथि तँ नन्दक संगे, एक तरहेँ बुझू जे नन्दक बच्चा सभक व्यक्तित्व एकटा अलगे रीतिसँ निर्मित भए रहल छलन्हि । नन्द सामान्य जीवन व्यतीत कए रहल छलाह मुदा गंगा पुलक कोनो चरचा हुनकर अन्तरमनमे हुलिमालि शुरू कए दैत छलन्हि । आ ताहि द्वारे शनैः-शनैः गाँआ-घरुआक आ दोस्त-महीम लग जएबाक क्रम कम होमए लागल । फेर नञि तँ कोनो दोस्त-महीम, नञि तँ कोनो दोस्तक घर अएनाइ-गेनाइ ।

ओहि समयमे मीडिअम वेभक एकटा जापानी ट्रांजिस्टर नन्दक घरमे छलन्हि, वैह मनोरंजनक एकमात्र साधन छल । हुनकर बच्चा सभ एकरा रेडियो कहैत

जाइ छलाह, आ नन्द बुझबैत छलखिन्ह जे रेडियो बड़ड पैघ होइत अछि, ट्रांजिस्टर आकारमे छोट होइत अछि । नन्द जखन नोकरी शुरू कएने रहथि तँ बुश कम्पनीक एकटा रेडियो गाम लए गेल छलाह । सौँसे टोलबैय्याक भीड़ जुमि गेल छल रेडियो सुनबाक लेल । मुदा ई जापानी मीडिअम वेभ रेडियो मझोला आकारक बैटरीसँ चलैत छल आ खूब बैटरी खाइत छल, माने ई ट्रांजिस्टर । बैटरी प्रायशः महिनाक दस तिथि धरि चलैत छल । बैटरी एक महिनामे एक बेर अबैत छल, महिनबारी किरानाक वस्तुजातक संग । से नन्दक बच्चा लोकनिक मनोरंजनक ओ साधन महिनामे बीस दिन काज नहि करैत छल । आ ताहि द्वारे बच्चा सभ पलंगक दुनू कात दू टा गोल पोस्ट बनबैत छलाह। ई गोल पोस्ट प्लास्टिकक एक-दोसरामे जुड़य बला खेल सामग्रीसँ बनैत छल, ई खेल सामग्री पता नहि कतेक दिनसँ घरमे पड़ल छल, प्रायः गंगा ब्रिज कॉलोनीमे कोनो संगी देने छलखिन्ह । नन्दक दुनू बेटा दुनू दिशि ककबाक स्टिकसँ खेलाइत छलाह। ए बी सी डी क कचकाराक खेल-सामग्री बॉल बनैत छल । खेलक निअम सेहो भिन्न छल। मात्र एक शॉटमे एक गोल पोस्टसँ दोसर गोल पोस्टमे गोल करए पड़ैत छल । एहि तरहक कैकटा नूतन क्रीड़ाक जनक छलाह नन्दक दुनू पुत्र। एहि तरहेँ समय बितैत गेल । बाहर एनाइ-गेनाइ किछु कम भैये गेल छल । तकर बाद दूटा घटना भेल । एक तँ छल गङ्गा पुलक उद्घाटन । आ दोसर छमाही परीक्षामे नन्दक दुनू बेटा पहिल बेर प्रथम स्थान प्राप्त नञि कए सकल छलाह । एकर बाद नन्द असहज होमए लगलाह । ओना एहि दुनू घटनामे कोनो आपसी सम्बन्ध नहि छल मुदा नन्दक अन्तर्मनक जे हुलिमालि छलन्हि से बढ़ए लगलन्हि । आब ओ किएक तँ सरकारी तन्त्रसँ न्याय नञि पाबि सकल छलाह आ पुत्र लोकनि सेहो पढ़ाइमे पिछड़ि गेल छलन्हि, से अदृश्य शक्तिक प्रति हुनक आसक्ति फेरसँ बढ़ए लगलन्हि । सभ परिणामक कारण होइत छैक आ कारणक निदान जखन दृश्य तन्त्र द्वारा नञि होइत अछि, तखन अदृश्यक प्रति लोकक आकर्षण बढ़ि जाइत अछि । आ नन्द तँ अदृश्यक प्रति पहिनहिसँ, बाल्यकालेसँ आकर्षित छलाह ।

"नन्द छथि"?

एक गोट अधवयसू, मुँहक दाँत पान निरन्तर खएलासँ कारी रंगक भेल, पातर दुबर पिण्डश्याम रंगक, नन्दक घरक ग्रील खटखटा कए पुछलन्हि ।

"नहि । ऑफिससँ नहि आएल छथि मुदा आबैये बला छथि । भीतर आउ, बैसू"- नन्दक बालक कहलखिन्ह ।

"हम आबि रहल छी कनेक कालक बाद"।

किछु कालक बाद नन्द सुरसुरायल अपन धुनमे, जेना ओ अबैत छलाह, बिना वाम-दहिन देखने, घर पहुँचलाह । पाछाँ लागल ओहो महाशय घर पहुँचलाह। नन्द हुनका देखि बाजि उठलाह-

"शोभा बाबू। कतेक दिनुका बाद"।

"चिन्हि गेलहुँ"- शोभा बाबू बजलाह ।

आ एकर उत्तरमे नन्द बैसि गेलाह आ हुनकर आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबए लगलन्हि ।

"एह बताह, अखनो धरि बतहपनी गेल नञि अछि"। शोभाबाबूक अन्तर्मन एहि तरहक आदर पाबि गदगद भए रहल छल।

शोभाबाबू छलाह कछबी गामक । नन्दक सभसँ पैघ बहिनक दिअर । बहिन बेचारी तँ मरिए गेल छलीह, भगिनी मामागाममे - नन्दक गाम मेहथमे- पेट दुखएलासँ अकस्माते काल-कवलित भए गेल छलीह । नन्दक बहिनौउ बढ़िया चास-बास बला घोड़ापर चढ़ि लगान वसूली लए निकलैत छलाह । मुदा भगिनीक मुइलाक बाद बहिनौउसँ सम्बन्ध कम होइत गेल छलन्हि । कोनो जानि बुझि कए नहि वरन् अनायासहि । आ आइ पचीस सालक बाद शोभाबाबूसँ पटनामे भेँट भेल छलन्हि ।

"ओझाजी कोना छथि। हमरासभ बहुत कहलिअन्हि जे दोसर विवाह कए लिअ मुदा नहि मानलन्हि"।

"आब ओ पुरान चास-बास खतम भए गेल । जमीन्दारी खतम आ चास-बास सेहो । मुदा खरचा वैह पुरनके । से खेत बेचि-बेचि कतेक दिन काज चलितए। सभ बाहर दिस भागए लागल । मुदा हम कहलिअन्हि जे अहाँ हमरा सभसँ बहुत पैघ छी, बहुत सुख देखने छी, से अहाँ बाहर जाए कोनो छोट काज करब से हमरा सभकेँ नीक नहि लागत"।

शोभा बाबू कंठमे पानक पात आबि जएबाक बहन्ना कए चुप भए गेलाह, मुदा सत्य ई छल जे हुनकर आँखि आ कंठ दुनू भावातिरेकमे अवरुद्ध भए गेल छलन्हि। किछु काल चुप रहि फेर आगाँ बाजए लगलाह-

"से कहि बिना हुनकर औपचारिक अनुमति लेने घरसँ चूड़ा-गूड़ लए निकलि गेलहुँ । रने-बने सिमरिया स्नान कए नाओसँ गंगापार कएलहुँ आ सोहमे पटना पहुँचि गेलहुँ । पहिने एकटा चाहक दोकानपर किछु दिन काज कएलहुँ । ओहि दिनमे पटनामे अपन सभ दिसका लोक ओतेक मात्रामे नहि रहथि । अवस्थो कम छल । फेर कैक साल ओतए रहलहुँ, बादमे पता चलल जे एहि बीच गाममे तरह-तरहक गप उड़ल । जे मरा गेल आकि साधु बनि गेल शोभा । फेर जखन अपन चाहक दोकान खोललहुँ तखन जा कए गाम एकटा पोस्टकार्ड पठेलियैक । आब तँ बीस सालसँ बी.एन.कॉलेजिएट स्कूल लग चाहक दोकान चला रहल छी । ओतहि पानक स्टॉल सेहो लगा देने छियैक"।

"सभटा दाँत टूटि गेल शोभा बाबू"।

''चाहक दोकानमे रहैत-रहैत चाह पीबाक हिस्सक भए गेल । मुदा ताहिसँ कोनो दिक्कत नहि भेल । मुदा जखन पानक दोकान आबि गेल तखन गरम चाह पिबियैक आ ताहिपरसँ ठंढ़ा पान दाँत तरमे धए दियैक से ताहिसँ गरम-सर्द भेलासँ सभटा दाँत टूटि गेल''।

एहि गपपर नन्द आ शोभा बाबू दुनू गोटे हँसि पड़लाह ।

फेर गप-शप चलए लागल । शोभाक भौजी तँ मरि गेल छलीह मुदा ज्योँ भतीजी जिबैत रहितथि तँ मेंहथ कछबीक बीच संबंध जीवित रहैत, मुदा बिपति जे आएल तँ सभटा एके बेर । नन्दकेँ मोन पड़लन्हि जे भगिनी खेलाइत छलीह पड़ोसमे आ आबि कए नन्दक माएकेँ कहलन्हि, जे फलना-अँगनाक फलना गोटे पेटपर हाथ राखि देलकन्हि आ तखने तेहन पेट-दर्द शुरू भेलन्हि जे कतबो ससारल गेलन्हि तैओ नहि ठीक भेलन्हि आ नन्दक आँखिक सोझाँमे बचियाक रहस्यमय मृत्यु भए गेलैक ।

शोभाबाबू कहलन्हि- ''ओ बचियो टा जे जीबति रहितए तँ सम्बन्ध जुड़ल रहितए''।

मुदा नन्द जेना कतहु दोसर ठाम चलि गेल छलाह । अपन ओहि विषयपर जे हुनका प्रितगर छलन्हि, बच्चेसँ । ई जे पारिवारिक जंजाल, हाटसँ तरकारी आनब, बच्चाक परीक्षाक परिणामक चिन्ता करब, ई सभ अपन अग्रजक कहलासँ कुमोनसँ कए रहल रहथि ।

गंगा ब्रिजक उद्घाटन भए गेल आ दुनू पुत्र वर्गमे प्रथम नहि केलकन्हि । फेर पुत्री सेहो विज्ञान लेने छलीह, अन्तर स्नातकमे, ताहूमे जीवविज्ञान । मुदा शनैः-शनैः छमाही आएल, वार्षिक परीक्षा आएल मुदा सभकेँ अंक तँ नीक आबन्हि, मुदा प्रथम स्थान नहि प्राप्त होइत छलन्हि । गंगा-ब्रिज आ परीक्षाक अंकमे तँ कोनो परस्पर संबंध नहि छल । मुदा नन्दक विश्वास माता-पिताक कर्मसँ पुत्र-पुत्रीक आगाँ बढ़बापर छल । गंगा-पुल निर्माणमे जे भ्रष्टाचार छल ओकर विरुद्ध अभियानमे हुनकर विफलता आ अग्रजक कहलापर पारिवारिक उत्तरदायित्व पूरा करबाक प्रयास एकर कारण छल । एहि बीच एक बेर बच्चा सभक काका आ नन्दक अग्रज पटना डेरापर अएलाह। नन्द गोर लागि कए कहलन्हि-

''गंगा पुल देने आएल छी आकि स्टीमरसँ''।

''आएल तँ छी स्टीमरसँ, बुझले नहि छलए जे गंगा पुलक उद्घाटन भए गेल छैक । से घुरब तँ पुलक रस्ते जाएब । सुनैत छियैक जे नबका-नबका डीलक्स कोच सभ ढेरक-ढेर खुजल छैक''।

''नहि कोनो जरूरी नहि अछि पुलसँ जएबाक । बड़ड गड़बरी भेल छैक एकर निर्माणमे । कहियो धसि जएतैक''।

अग्रजकेँ किछु बुझि नहि पड़लन्हि जे की भेल अछि नन्दकेँ ।

“मोन ठीक रहैत छह ने । दमा बेशी तंग तँ नहि कए रहल छह”- दुनू भाँए दमाक रोगी छलाह।

“नञि से सभ ठीक अछि । मुदा अहाँक कहलासँ सभटा पुरान गप बिसरबाक चेष्टा कएलहुँ । ओहि पुल निर्माणमे जे सभ भेल, मजदूर सभक पायापर सँ घुरछाही खा कए खसब देखैत रहलहुँ, सैकड़ामे मजदूरसभ मरि गेल। आ भ्रष्टाचारसँ अपन घर भरलन्हि अभियन्ता लोकनि । आब जखन पुलक उद्घाटन भेल तखन मात्र ३० टा मजदूरक नाम शिलापर लिखि कए टाँगि देलन्हि आ सभ अभियन्ताकेँ पुरस्कारक घोषणा भए गेल । कहिया ई पुल टूटि कए खसि पड़त तकर कोनो ठेकान नहि । हम संघर्ष शुरू कएलहुँ तँ दरमाहा बन्द करा दइ गेल । सभ स्थानांतरणक बाद दरमाहा बन्द भए जाइत अछि आ परिवारकेँ गाममे छोड़ए पड़ैत अछि । अहाँक कहलासँ संघर्षकेँ छोड़ि एहि स्थानांतरणमे अएलहुँ । बिसरए चाहलहुँ सभटा । खसैत लहास, कनैत हुनकर सभक परिवार । सपनामे अबैत रहल ई सभ सहस्त्रबाढ़निक रूप बनि कए । हमरे सन कोनो शापित आत्मा अछि ओ सहस्त्रबाढ़नि जे अपन संघर्ष अधखिज्जू छोड़ि मरि गेल होएत आ आब ब्रह्माण्डमे घुरिआ रहल अछि । आब देखू तीनू बच्चाक परीक्षा परिणाम, सभदिन प्रथम करैत अबैत रहथि, आब की भए गेलन्हि। हम जे संघर्ष बीचेमे छोड़लहुँ तकर छी ई परिणाम”। नन्द हबोढ़कार भए कानए लगलाह ।

“धुर बताह । जे भ्रष्टाचार कएलन्हि से ने जानताह । जे मजदूर लोकनिक अधिकार मारलन्हि तिनका ने फल भेटतन्हि । अहाँ तँ अपना भरिसक संघर्ष करबे कएलहुँ । आ अपन पारिवारिक जीवन के नञि चलबैत अछि । दोसराक गलतीक द्वारे अपन बच्चासभकेँ बिलटऽ देबैक । एहिमे एकर सभक कोन कसूर छैक?”

फेर दुनू भाएँक गाम-घरक गप-शप शुरू भेलन्हि । नन्द बजैत-बजैत कतहु बीचमे गुम भए जाइत छलाह । अग्रजकेँ बुझल छलन्हि जे ई बिहारि आब नहि थम्हत । बोल-भरोस दैत रहलाह मुदा बच्चेसँ देखने छथि नन्दक जिदपना, नहि जानि आब की करत । भाबहुसँ सोझाँ-सोँझी गप नहि होइत छलन्हि । मुदा अपरोक्ष सम्बोधन कए कहलन्हि-

“कनियाँ आब अहींपर अछि । बच्चा सभपर ध्यान राखब”।

नन्द अग्रजकेँ संग लऽ जा कए महेन्द्रूघाटमे स्टीमरपर छोड़ि अएलाह, कारण हुनका डर छलन्हि जे कतहु ई बीचेमे बससँ पुलक रस्ते नहि बिदा भए जाथि आ पुल तँ आइ नहि तँ काल्हि धसबे करत ।

तकर बाद ज्योतिष कुण्डली इत्यादिक खोज-बीन प्रारम्भ केलन्हि नन्द । भिन्न-भिन्न तरहक पाथर सभ, रत्न सभ बच्चा सभक हाथमे देलन्हि आ अपन आँगुरमे पहिरए लगलाह । एक बेर हनुमान चलीसा कीनि कए अनलन्हि तँ जतेक गोटे घरमे छल सभक लेल एक-एकटा आनि लेलन्हि । पाँच-दस टा फाजिले

घरमे रहैत छल, लोक सभक लेल । जे बाहरसँ आबथि हुनका एक-एक टा हनुमान चलीसा पकड़ा देल जाइत छलन्हि । एहि धोखा-धोखीमे एक दिन नन्दकेँ एकटा ठक तान्त्रिकसँ भेँट भए गेलन्हि । नन्दक मनोविज्ञानकेँ ओ तेनाकेँ पकड़लक जे नन्द हुनका भगवानक दूत बुझए लगलाह । ओ तांत्रिक अपना लग सभ वस्तुक समाधान रखने छल, भ्रष्टाचारीकेँ दण्ड दिआ सकबाक, बच्चा सभक रिजल्ट नीक करेबाक, सभकेँ स्वस्थ रखबाक आ आर आर तरहक समस्या सभक । ई सभटा समस्याक समाधानक आधार छल तंत्र विज्ञान, जकर विश्वसनीयतापर कोनो प्रकारक अविश्वास नन्दकेँ कहियो नहि छलन्हि । ओ तान्त्रिक नन्दसँ गुप्त पूजा-पाठ लेल पाइ-कौड़ीक माँग करए लागल । ओ तान्त्रिक कहियो कहन्हि जे माता सपना देलन्हि अछि जे आब दुष्टक नाश होएत। आबए दिऔक आसिन, शारदीय नवरात्रमे सम्पूर्ण सिद्धि भए जएत । फेर मारि रास पूजा पाठक विधि, शवासन-योग आदि बता देलकन्हि नन्दकेँ आ नन्द ओहि सभ विधिक अनुसरण ओहिना करए लगलाह जेना एकटा विद्यार्थी अपन गुरुक पाठक अभ्यास निअमक अनुरूप करैत अछि । आसिन भरि सभ काज छोड़ि नन्द एहि सभमे लागल रहलाह मुदा आसिन आएल आ चलिओ गेल मुदा नञि किछु हेबाक छल आ ने किछु भेल । आसिनमे कहल गेल जे आब भ्रष्ट अभियन्ता सभकेँ सजा भेटबे करतैक, आबए दिऔक बरखा । एहिना साल बीति गेल मुदा सजा दिअएबाक जे समय सीमा छल से आगाँ बढ़ैत रहल । पंडितजीकेँ किछु आर्थिक समस्या सेहो अएलन्हि आ नन्दकेँ तकर भार वहन करए पड़लन्हि । घर-द्वारपर पंडितजीक बच्चा सभ सेहो तांत्रिक विद्या शुरू कए देलक। पलंगक नीचाँ भगवती- ई शब्द पंडितजी वा तांत्रिकजीक बच्चा बाजथि आ नन्द पलंगक नीचाँ भगवतीकेँ ताकए लागथि । फेर पंडितजी विवाह-दानक प्रस्ताव अपन पुत्र-पुत्रीक राखए लगलाह, नन्दक इंजीनियर भातिजसँ अपन पुत्रीक आ अपन पुत्रसँ नन्दक पुत्रीक । आब नन्दक मोन उचटि गेलन्हि, यावत अपना धरि गप सीमित छलन्हि तावत धरि स्वीकार छलन्हि मुदा बाल-बच्चाक अहित हुनका कहियो स्वीकार नहि भेलन्हि । एम्हर गामक एक-दू गोट नन्दक भातिज आ नन्दक भैया सेहो तांत्रिककेँ घरपर जाए रबाड़ि देलखिन्ह, से ओहो अन्तमे स्वीकार कए लेलक जे ओकरा कोनो तंत्र-मंत्र नहि अबैत छैक आ नहिये ओ एहि विधिसँ ककरो सजा दिआ सकैत अछि । नन्दसँ लेल पाइ ओ घुरा देत ओ ई गप सेहो कहलक, मुदा कहियो पाइ घुरा नहि सकल । नन्दक लेल ई एकटा पैघ आघात छलन्हि। भक्षी गामक ओहि तांत्रिकक घरक बगलसँ जाथि मुदा नहि तँ वैह टोकैत छलन्हि आ नहिये नन्द ओकरा टोकैत छलखिन्ह । एम्हर नन्दक पुत्रीक विवाह भए गेलन्हि आ नन्द जेना सभ दिससँ आसरा छोड़ि बिना लक्ष्यक जिनगीक पथपर आगाँ बढ़ए लगलाह ।

पएरे ऑफिस गेनाइ-एनाइ, साँझमे सोचैत रहनाइ । किछु ग्रंथ सभक जे पठन होइत छलन्हि सेहो बन्न भए गेल छलन्हि । बच्चा सभक संग बैसि कए जे पढ़ैत छलाह सेहो आब कहाँ भऽ पबैत छलन्हि । फगुआ आ दुर्गापूजामे गाम जेबाक जे क्रम छलन्हि सेहो आब टूटि रहल छलन्हि । पूरा परिवार आब मात्र दुर्गापूजामे गाम जाइत रहथि । मुदा नन्द फगुआमे असगरे गाम जेनाइ नञि बिसरैत छलाह । एहिना गाम जाइ आबएमे नन्द गाममे एकटा दूरक पीसाक एहिठाम जाए आबए लगलाह । पीसा कालीक भक्त रहथि । हुनकर गाम नन्दक गामक बगलमे छलन्हि । बेचारे नीक लोक । नन्द हुनका लग जाथि आ प्रवचन सुनथि । फेर हुनकासँ दीक्षा सेहो लेलन्हि । काली-सहस्त्रणामक पाठक अतिरिक्त आर किछु नञि, नन्द भरि दिन ओही पाठमे लागल रहथि । नन्दक मोनमे डाइन-जोगिन सभक विचार अबैत रहैत छलन्हि । आस-पड़ोसक लोककेँ शंकाक दृष्टिएँ देखैत रहैत छलाह । बच्चा-सभक संग परीक्षा दिआबय जाइत छलाह, शंकित मोने जे हुनकर कोनो शत्रु हुनकर बच्चा सभकेँ हानि नञि पहुँचाबए । मुदा पीसाजीसँ दीक्षा लेलाक बाद हुनकामे विरक्तिजनित आत्मविश्वास आएल छलन्हि । फेर सभटा काज मन्थर गतिसँ होमए लागल । बच्चा सभक पढ़ाइ-लिखाइ, ओकर सभक नोकरी-चाकरी । वैह मध्यम वर्गक जोड़ल पाइ, वैह मध्यमवर्गीय आकांक्षा । बिआह-दानक झमेला । घरक आ बाहरक छोट-मोट वाद-विवाद । बच्चा सभक विश्वसँ प्रतियोगिता करबाक साहस देखि नन्द जेना आर आश्वस्त भऽ गेल छलाह । कारण घरसँ बाहर कहियो हुनकर बच्चा सभ निकलैत नहि रहए । घर अएलाक बाद दोस-महीम सभ सेहो नहि । बाहरक दुनियाँसँ तैयो प्रतियोगिता कए रहल छल । प्रतियोगिता परीक्षाक लिखित परीक्षामे उत्तीर्ण भऽ जाइत छलाह मुदा साक्षात्कारमे भाषा आ प्रान्तक गप आबि जाइत छलन्हि । नन्द बच्चा सभक कहियो ओहि तरहक वातावरणमे पालन नञि कएने छलाह से बच्चो सभ आश्चर्यचकित भऽ जाइत छलाह जे ई कोन नव परिवेश अछि । मुदा फेर नन्दक दुनू पुत्र नोकरीमे लागि गेलाह । आरुणिसँ नन्दकेँ जतेक पैघ पदक आशा छलन्हि से तँ ओ नञि पाबि सकल रहथि मुदा भारत सरकारक बी ग्रुपक नोकरी भेटि गेल छलन्हि हुनका । जमाय सेहो अभियन्ता छलखिन्ह ओ सेहो सरकारी सेवामे लागि गेलाह । दोसर बेटा सेहो बैंकमे अधिकारी बनि गेलन्हि । सिनेमा हॉलमे १० बरखसँ सिनेमा नहि देखने रहथि नन्दक बच्चा सभ । पटनाक पूजाक मेला, पटनदेवी, गोलघर किछु नहि देखने छलाह नन्दक बच्चा सभ । एहि विषयपर पहिने तँ लोक हँसी करन्हि मुदा बादमे सभकेँ लागए जे ईएह तँ नन्दक परिवारक विशिष्टता तँ नहि बनि गेल अछि ? नन्दक घरमे टेलीविजन सेहो नहि छलन्हि ई सेहो लोक सभक लेल आश्चर्यक विषय छल । नन्द आ हुनकर सम्पूर्ण परिवार भारतीय टेलीविजनपर प्रसारित भेल रामायण धारावाहिकक एकोटा एपीसोड नहि देखने छलाह । कारण नन्दक घरमे टेलीविजन छलन्हि नहि आ क्यो गोटे दोसराक घर ओहुना नहि जाइत रहथि,

टी.वी. देखए लेल जएबाक तँ प्रश्ने नहि छलए । नोकरी पकड़लाक बाद आरुणि घरमे एकटा टेलीविजन अनलन्हि । ओतए महाभारतक प्रचार देखि नन्द एक दिन पत्नीकेँ कहलखिन्ह-

"अपन टी.वी.मे महाभारत किएक नहि दैत अछि ?"

"अपना टी.वी.मे खाली डी.डी.१ अछि । ऊपरमे एक गोटे रहैत छथि से कहैत रहथि जे हुनका घरमे बेटा एकटा ३०० टाकामे मशीन अनलन्हि-ए । ओकरा टी.वी.मे लगा देलासँ डी.डी.मेट्रो अबैत छैक । ओहीमे महाभारत अबैत छैक । बेटा तीन हजारमे टी.वी.कीनि देलन्हि । आब तीन सए टाका अहाँ लगा कए ओ मशीन अगिला मासक दरमाहासँ आनि लेबं"।

"जिनकर टी.वी.छन्हि सैह तकर मशीनो अनताहं"।

आरुणिकेँ एहि गपक जखन पता लागलन्हि तँ हुनका हँसी लागि गेलन्हि । अगिले दिन ओहि मशीनकेँ लगबेलन्हि । अगिला रवि पिताजी जखन महाभारत देखलन्हि तँ सभ गोटे बड्ड प्रसन्न भेलाह । ओही मासमे आरुणि आर्म्स आकि हथियारक ट्रेनिंग लेल पटनासँ बाहर गेलाह । एहि एक मासक ट्रेनिंगक बीचमे दुर्गा पूजा पड़ैत रहए । पिताजी पहिल बेर दुर्गापूजामे गाम नहि गेल रहथि। आरुणि सेहो बीचमे शुक्र-शनि-रविक दुर्गापूजाक छुट्टी देखि पटना आबि गेलाह । रवि दिन रहए । महाभारत चलि रहल रहए । आरुणिक एकेटा संगी रहन्हि । ओकरा संगे आरुणि बिन खेने-पीने कोनो काजसँ बाहर गेल छलाह । संगीक संगे घरपर अएलाह। माँ दुनू गोटे लेल खेनाइ अनलखिन्ह ।

"बाबूजी खा लेलथिं"।

"हँ तऽ । तीन बजैत अछि । महाभारत देखलाक बाद खा कए सूतल छथि । अहाँ सभ खाऊ, तावत हम हुनका चाह बना कऽ दैत छियन्हि, तखने निन्न टुटतन्हिं"।

आरुणि दू-तीन कौर खा कऽ उठि गेलाह । हुनकर संगी कारण पुछलखिन्ह-

"की भेल"?

"पता नञि। घबराहटि भऽ रहल अछिं"।

"काल्हि ट्रेनिंगपर जएबाक अछि ने । ताहि द्वारें"।

"पता नञि"।

तावत भीतरसँ अबाज आएल । सभ क्यो दौगलाह।

"की भेल माँ"।

"देखू ने । चाह आनि कऽ देलियन्हि-हँ, मुदा आँखि खोलि कऽ देखिये नञि रहल छथि । आन दिन तँ चाहक नाम सुनिते देरी उठि कए बैसि जाइत छलाह"।

नन्दक शरीर अकड़ि गेल छलन्हि । कन्ना-रोहट सुनि ऊपरमे रहनिहार एकटा डॉक्टर आला लऽ आएल छलाह आ नन्दक मृत्युक घोषणा कए देने रहथि। आरुणि अवाक गुम्म भेल ठाढ़ भऽ गेल रहथि । हुनकर संगी नञि जानि

कोन बाटे अप्न संगी सभकेँ बजा कऽ लऽ अनने छलाह । सभक ड्यूटी लगा देलन्हि । ककरो गेटपर तँ ककरो ड्रॉइंग रूममे । लोकक भीड़ लागए लागल छल । हुनकर संगी सभ समान बिछाओनमे समेटि बिछौना मोड़ि आरुणि लग अएलाह ।

“क्रिया-कर्मक तैयारी करए पड़त आरुणि । बाँसघाट धरि लऽ जएबाक व्यवस्था करए पड़त । हम जाइ छी गाड़ीक व्यवस्था करए”।

“बाबूजीकेँ गामसँ बड्ड लगाव रहन्हि। कहैत रहथि जे अगिला सात जन्म धरि नगर घुमि कए नहि आएब । ओना बा केर दाह संस्कार बाबूजी पटनेमे कएने रहथि । मुदा ओहि समयमे पटनाक ई गंगा-ब्रिज नहि रहए । आब तँ गाड़ीसँ हिनका लऽ गेल जा सकैत अछि, तखन दाह-संस्कार भोरमे गाममे भऽ जएत”।

“हम व्यवस्था करैत छीँ”।

आरुणिक ओ संगी हनुमाने छल । कनी कालमे गाड़ी आबि गेल । रस्तामे पुलिस लाश देखि रोकत से समस्या आएल।

“अहाँ लग वर्दी बला परिचय-पत्र तँ हएत नेँ”।

“हँ, अछि”।

“ओना दिक्कत अएबाक तँ नहि चाही मुदा ज्योँ रस्तामे पुलिस टोकए तँ देखा देबए”।

घर खाली भऽ गेल । ताला लागि गेल । दुनू भाए आ माए मृत पिताक संग शुक्लपक्षक ओहि रातिमे पटना नगरसँ निकलि गेलाह । गंगा-ब्रिजपर गाड़ी ठाढ़ भेल । मृत व्यक्तिक एकटा सूची टाँगल छल, जोन-मजदूरक । ई सभ पुल बनेबामे खसि कऽ मरि गेल छलाह । आरुणि गाड़ीसँ उतरि सूची देखैत छथि ।

उराँव, झा आ आर मारते रास मजदूर। एकटा “झा” उपाधिक मजदूर, बेशी आदिवासी उपाधिक! बहुत रास मूइल छलाह, कताक सैकड़ामे मुदा राता-राति पुलिसक मदतिसँ अभियन्ता-ठिकेदारसभ लहास भसिया दैत छलाह। ३० गोटेक नाम मुदा छल एतए ।

“पायाक ऊपरसँ घुरिया-घुरिया कऽ खसैत मजदूर, कतेक ठाम हम सूचना देने रही, कोनो सुनबाहि नञि भेल । ओकरा सभकेँ न्याय नञि दिआ सकलहुँ तँ लगैत अछि जे दोषी हमहू छीँ”। नन्दक डायरीक ई अंश एक बेर आरुणि पढ़ने छलाह । ओ सोचलन्हि जे चलू घुरि कऽ आएब तखन बाबूजीक डायरी ताकब, कतए छन्हि।

फेर गाड़ी आगाँ बढ़ल । गंगा ब्रिज पाछाँ छुटि गेल । आगाँ गंगा-ब्रिज कॉलोनी आएल । आरुणिक बालकथाक साक्षी । स्कूल, घर आ खेलेबाक मैदान। सटले गंगा ब्रिजक गोडॉन । कताक बेर चोरिक समान ट्रकसँ एतएसँ निकलैत छल, एकाध बेर धरायल छल । बड़का धराएल ट्रक, कतेक चक्का

बला, लोक गुमटीलग मेला जेना देखए पहुँचैत छलए । बच्चा-सभ ट्रकक चक्का गनैत छलाह, १४ चक्का बला अछि वा १६ चक्का बला।

जीवनक प्रतियोगितामे सभटा जेना बिसरि गेल छलाह आरुणि । भ्रष्टाचार, जोन-बोनिहारक मृत्यु, पिताक संघर्ष सभटा सोझाँ आबि रहल अछि मुदा आब।

"फेरसँ सोझाँ आएल ई सभटा, पिताक स्मृति बनि कऽ मुदा पिताक हारि बनि कए तँ नञि । ई नाम आरुणि किएक हमरा लेल चुनने छलाह बाबूजी"।

"की बजलहुँ बेटा"- माँ पुछलखिन्ह।

"नहि । ई कॉलोनी देखि कऽ किछु मोन पड़ि गेल"।

"नहि देखू ई पपियाहा कॉलोनीकेँ"।

गंगा-ब्रिजक चरचा घरमे टैबू बनि गेल रहए । आरुणिकेँ बुझल छन्हि ई । मुदा एकटा आर प्रारम्भ तँ नञि भऽ जएत । आरुणिक प्रश्नसँ माँ भीतरसँ घबरा गेल छलीह ।

आब जे चुप्पी पसरल से गाममे जा कए खतम भेल । रस्तामे एकटा प्रकाश खण्ड टूटि कए खसल सहस्त्रबाढ़नि नहि ओकर न्यून रूप, छाड़नि ।

अग्रज मृत भाएक मुँह पकड़ि कानए लगलाह ।

"एहन भैयारी ककर हेतए । धुर बताह, पैघ भायकेँ क्यो छोड़ि कऽ पहिने चलि जाइत अछि । कहियो नहि कनेने छलह तँ आइ किए कनबा रहल छह"। सौँसे टोल जुटि आएल छल । समाचार सुनलाक बाद ककरो घरमे खेनाइ नहि बनल छलैक । पता नञि के ककरा टेलीफोन कऽ देने रहैक जे समाचार एतए पहुँचि गेल रहए ।

"कलममे बाबूक सारा लग दाह हेतन्हि", अग्रजक एहि इच्छाक बाद लहास ओतए गेल । कान्हपर उठा कए सभ पहुँचलाह कलम-गाछी ।

"देखियौ, केना मूँहपर हँसी छैक, एको रत्ती मूइल लगैत अछि"- नन्दक अग्रज बजलाह।

आरुणिक पैघ भाए जखने अपन आगि लेल हाथ पिताक दिस बढ़ेलन्हि आकि ओ विचलित सन भऽ गेलाह । काका भरोस देलखिन्ह । आगिमे मिलैत गेल ओ मृत शरीर, पुनः घुरि अएबाक कोनो सम्भावनाकेँ खतम करैत ।

सभटा विध-व्यवहार, लगैत रहए जेना ककरो मृत्युक नहि वरन् कोनो पाबनिक इन्तजाम-बात भऽ रहल अछि, धूम-धामसँ । महापात्र आकि कंटाहा ब्राह्मणक निर्देशानुसार होइत श्राद्धकर्म आ साँझक पाठ गरुड़-पुराणक अविश्वसनीय विवरणक । सभ सम्पन्न भऽ गेल ।

परम शांति आ कि घोर कोलाहल । अपन अतीतक पुनर्विश्लेषणमे रत रहबाक घटनाक्रम हुनका मोन पड़ि जाइत छन्हि ।

आरुणि ठाकुर किछु अस्वस्थ रहथि आ कलकत्तामे वुडलैण्ड नर्सिंग होमक समीपस्थ स्थित विशालकाय अपार्टमेंटक अपन फ्लैटमे असगरहि अस्वस्थ स्थितिमे अध्यावसन्नमे लीन । अशांतिक क्षण हुनका रहि-रहि कए अनायासहि मोन पड़ि रहल छन्हि । जखन ओ अपन समस्या सभ अपन हित-संबंधी सभकेँ सुना कए अपन मोनक भार कम करैत रहथि । शनैः-शनैः समस्या सभ बढ़ैते चल गेल एतेक धरि जे आब दोसरकेँ सुनेलापरांत मोन आर उचटि जाइत छलन्हि । ताहि द्वारे आब ओ अपने धरि सीमित रहए लगलाह । हित संबंधी सभ बुझय लगलाह जे आरुणि समस्यासँ रहित भए गेल छथि । बच्चेसँ सपनामे भयावह चीज सभ देखाइ पड़ैत छलन्हि आरुणिकेँ । अखन धरि हुनका मोन छन्हि कोना आध-आध पहर रातिमे ओ घामे-पसीने भऽ जाइत रहथि आ हुनकर माता-पिता चिंतित भऽ बीयनि होकैत रहैत छलखिन्ह । पिताक-पिता आ तकर जन्मदाता के? भगवान ज्योँ सभक पूर्वज तखन हुनकर पूर्वजके ? लोकसभ एहि प्रश्न सभकेँ हँसीमे उड़ा दैत छलाह, किन्तु बादमे जखन आरुणि दर्शनशास्त्र पढ़लन्हि तखन हुनका पता चललन्हि जे एकर उत्तरक हेतु कतेक ऋषि-मुनि सेहो अपन जीवन समर्पित कए चुकल छथि, मुदा ई प्रश्न एखनो अनुत्तरिते अछि । अस्वस्थताक स्थितिमे फेरसँ ई सभ अनुत्तरित प्रश्न हुनका समक्ष स्वप्न बनि आबि गेल छन्हि । कखनोकेँ निन्दमे हुनका लगन्हि जे ओ घरक छत पर छथि आ नहि चाहितो शनैः-शनैः छतक बिना घेरल भाग दिशि गेल जा रहल छथि । गुरुत्वक कोनो शक्ति हुनका खीचि रहल छन्हि सहस्त्रबाढ़नि सन बड़का झोँटाबलाक देहक गुरुत्व शक्ति । तावत धरि जावत ओ नीचाँ नहि खसि पड़ैत छथि । की ई छल कोनो प्रारब्धक दिशानिर्देश आकि कोनो भविष्यक दुर्घटनासँ बचबाक संदेश ? किछु दिन धरि तँ आरुणि सुतबाक सही समयक पता लगबैत रहलाह परंतु शनैः-शनैः हुन्का ई पता लागि गेलन्हि जे स्वप्न आ निन्न एहि जीवनक दूटा एहन रहस्य अछि जे नियम विरुद्ध अछि आ अनुत्तरित अछि । आ आरुणि पैघ भेलथि, फेर हुनकर पढ़ाइ शुरु कएल गेल- अगस्त्यक स्तोत्र- सरस्वति नमस्तुभ्यम वरदे कामरूपिणी, विद्यारम्भम् करिष्यामि सिद्धिर्भवतुमे स्दा । श्रीगणेषजीक अंकुशक संग गौरिशंकरक अभ्यर्थना सिद्धिरस्तु । साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वसिनी, उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिःपतिः,सिद्धिःसाध्ये सतामस्तु प्रसदांतस्य धूर्जटेः, जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला । एहि श्लोककेँ बजैत काल प्रायः आरुणि पशुपतिःपतिःक सामवेदीय तारतम्यक बाद अनायासहि हा हा कऽ कए जोरसँ हँसए लगैत छलाह आ बीचहि मे रुकि जाइत छलाह । पिता सोचलन्हि जे कम वयसमे पढ़ाइ शुरु केलासँ आरुणिक कुर्सी पर बैसि कऽ माथपर हाथ राखि कऽ बैसबाक आदति तँ खतम होएतन्हि । माएक एकटा गप्प हुनका पसिन्न नहि छलन्हि। ओ बिच्चमे गप्प करैत-करैत आरुणिक बातकेँ अनठिया दैत छलथिन्ह। एकबेर माएक कोनो संगी आएल छलीह। आरुणिक कोनो बातपर माए ध्यान नहि दऽ रहल छलीह। आरुणिक हाथमे भरि घरक

चाभीक झाबा छलन्हि तँ ओ कहलखिन्ह जे ज्यौँ हुनकर बात नहि सुनल जएतन्हि तँ ओ झाबाकेँ सोझाँक डबरामे फेकि देताह। माए सोचलन्हि जे हाँ-हाँ केलापर झाबा फेकियेटा देताह तेँ आर अनठिया देलखिन्ह। परिणाम दुनु तरहेँ एके हेबाक छल। चाभी बहुत खोज केलो पर नहि भेटल। एखनो घरक सभ अलमीरा आदिक चाभी डुप्लीकेट अछि। एतेक दिनक बाद ई सभ सोचि आरुणिक मुँहपर अनायासहि मुस्की आबि गेलन्हि।सिद्धांतवादी पिताकेँ नोकरीमे किछु ने किछु दिक्कत होइते रहैत छलन्हि ताहि द्वारे ओ आरुणिकेँ जल्दी सँ जल्दी पैघ देखए चाहैत छलाह। तेसर सँ सोझे पाँचम वर्गमे फनबा देल गेलन्हि।फेर भेल ई जे होलीक छुट्टीमे निअमानुसार सभ गोटे गाम गेल छलाह। होली आ दुर्गापूजामे सभ बेर गाम जएबाक नियम जेकाँ छलैक। पिताजी सभकेँ छोड़ि कए वापिस भए गेलाह। फेर दरमाहा बन्द भऽ गेल छलन्हि प्रायः यैह चिट्ठी गाम आएल छल जे आब सभकेँ गामहि मे रहए पड़तन्हि। माए तँ कानए लगलीह मुदा आरुणि खूब प्रसन्न भेलाह। मुदा सरकारी स्कूलमे ओहि समय वर्गक आगाँमे नवीन- ई लगा कए एक वर्ग कममे लिखबाक गलत परम्परा नवीन शिक्षा नीतिक आलोकमे लेल गेल छलैक कारण नवीन नीतिमे आर किछुओ नवीन नहि छल। पिताजीकेँ जखन एहि बातक पता चललन्हि तँ ओ तमसायलो छलाह आ एकर प्रतिकार स्वरूप पाँचम क्लासक बाद जखन ओ सभ शहर वापस अएलाह तँ आरुणिकेँ फेर एक वर्ग तरपा कए सोझे छठम वर्गक बदलामे सातम वर्गमे नाम लिखवा देलन्हि। छठम वर्गक विज्ञान आ गणितक पढ़ाइ पाँचमे वर्गमे कए लेबाक पिताक निर्देशक उद्देश्यक जानकारी आरुणिकेँ तखन जा कए भेलन्हि जखन प्रवेश-परीक्षामे यैह दुनु विषय पूछल गेल आ आरुणि छट्ठा आ सतमा दुनु वर्गक प्रवेश परीक्षामे बैसलाह आ सफल भेलाह। बहुत दिन बाद धरि जखन क्यो आनो संदर्भमे छठम वर्गक चर्चा करैत छल तँ आरुणिकेँ किछु अनभिज्ञताक बोध होइत छलन्हि।गामक प्रवासमे एकबेर आरुणि पिताकेँ चिट्ठी लिखने छलाह कारण हुनकर जुत्ता शहरेमे छूटि गेल छलन्हि। जुत्तातँ आबिये गेलन्हि संगहि चिट्ठीमे आरुणिक लिखल तीन टा शाब्दिक गलतीक विवरण सेहो आएल आ ईहो मोन पाड़ल गेल जे एकबेर दौगि कए गणितक प्रश्न हल करबाक प्रतियोगितामे तीनक बदला हरबड़ीमे दुइयेटा प्रश्नकेँ हल कऽ कए आरुणि कोना अपन कॉपी जमा कए देने छलाह। हुनकर स्वभावमे क्रोधक प्रवेश कखन भेलन्हि से तँ हुनको नहि बुझाबामे अएलन्हि मुदा पिताजी हुनका "क्रोधक समान कोनो दोसर रिपु नहि" एहि संस्कृत श्लोकक दस बेर पाठ करबाक निर्देश देने छलखिन्ह- से धरि मोन छन्हि। एकटा घटना सेहो भेल छल जाहिमे स्कूलमे एकटा बच्चा झगड़ाक मध्य सिलेटसँ हुनकर माथ फोड़ि देने छलन्हि। आरुणि सेहो सिलेट उठेलथि मुदा ई सोचि जे ओकर माथ फूटि जएतैक हाथ रोकि लेने छलाह। एकर परिणामस्वरूप हुनकर पिता दू गोट काज केलन्हि। एक तँ हुनकर सिलेटकेँ बदलि कए लोहाक बदला लकड़ीक कोरबला सिलेट देलखिन्ह जकर कोनो ने कोनो भागक लकड़ी खुजि जाइत छलैक आ दोसर जे कॉलोनीमे

समकक्ष अधिकारीक बैठक बजा कए कॉलोनी-अहिमे स्कूल खोलि देल गेल जतए आरुणि पढ़ए लगलाह। बादमे क्यो पंडित जखन वाल्मीकि रामायणक सुन्दरकाण्डक पाठ तँ क्यो ज्योतिष कँगुरिया आँगुरमे मोती आ कि मूनस्टोन पहिरबाक सलाह क्रोध कम करबाक लेल देबए लगैत छलाह तँ ओ संस्कृत श्लोक हुनका मोन पड़ि जाइत छलन्हि। बाल संस्कारक अंतर्गत सहायता माँगबामे आ समझौता करबामे अखनो हुनका असहजता अनुभव होइत छन्हि। मुदा हारि आ जीत दुनुकेँ बराबर बूझि युद्ध करबाक विश्वास हुनकामे नहि रहलन्हि। आ विजय हुनकर लक्ष्य बनैत गेलन्हि शनैः-शनैः। जकर ओ जी-जानसँ मदति कएलन्हि सेहो समयपर हुनकर संग देलकन्हि। समय-समय पर कएल गेल समझौता सभ हुनकर संघर्षकेँ कम केलकन्हि। जतेकसँ दोस्तियारी छलन्हि तकरे निभेनाइ मुश्किल भए रहल छलन्हि। फेर तँ नव शहरमे नव संगीक हेतु स्थान नहि बचल। महत्वाकांक्षाक अंत नहि आ जीवन जीबाक कला सभक अद्वितीय अछि। आरुणि ई नाम आब कखनो-कखनो घरमे सुनाइ पड़ैत छल। कलकत्ता शहर प्रतिभाक पूजा करैत अछि। मुदा व्यवसायी होएबामे एकटा बाधा छल - अंग्रेजीक संग बाङलाक ज्ञान जे ओ बाट चलैत सीखि गेलाह। व्यस्त जीवनमे बीमारीक स्थिति-अहिमे हुनका आराम भेटैत छलन्हि। बीमारियेमे सोचबाक आदति मोन पड़ैत छलन्हि। आ ई फ्लैट किनलाक बाद माएकेँ सेहो बजा लेलखिन्ह। ओना हुनका बुझल छलन्हि जे माए एहि सभसँ प्रभावित नहि होएतीह। कारण ओ अधिकारी पत्नी छलीह आ पुत्रकेँ सेहो ओहि रूपमे देखबाक कामना छलन्हि। ई नव शहर हुनक पुत्रक व्यक्तित्वमे सैद्धांतिकताक स्थानपर प्रायोगिकताक प्रतिशतता बढ़ा देने छलन्हि। आब समयाभावक कारण स्वास्थ्य खराब भेलेपरांत सोचबोक समय पुत्रकेँ भेटैत छलन्हि।व्यवसायमे सफलता प्राप्तिक पूर्व आरुणि एकटा कागजक प्रिंटिंग प्रेसमे काज केनाइ शुरु केलन्हि। अपन मित्रवत प्रिंटिंग प्रेस मालिकसँ दरमाहाक बदला पर्सेंटेज पर काज करबाक आग्रह केलन्हि। ऑर्डर आनि बाइंडिंग आ प्रिंटिंग करबाबथि आ आस्ते-आस्ते अपन एकटा प्रिंटिंग प्रेस लगओलथि। किछु गोटे हिनका अहिठामसँ छपाइ करबा कए ग्राहककेँ बेचथि। हुनका जखन एहि बातक पता चललन्हि तँ ओ एकटा चलाकी केलथि जे सभ बंडलमे अपन प्रेसक कैलेंडर धऽ देलखिन्ह। जखन अंतिम उपभोक्ताकेँ पता चललैक जे ओ सभ अनावश्यके दलालक माध्यमसँ समान कीनि रहल छलाह तँ ओ सभ सोझे आरुणि प्रिंटिंग प्रेसकेँ ऑर्डर देबए लागल। आरुणिकेँ घरमे अपन नाम कखनहुँ काले सुनि पड़न्हि। किताबक ऊपर छपल हुनकर नाम तँ कोनो कंपनीक छलैक- आ ओ ओकरासँ निकटता अनुभव नहि कऽ पाबि सकैत छलाह। संसारक कुचालि हुनकर पिताक संघर्षक अंत केने छलन्हि मुदा आरुणि व्यावसायिक युद्ध मस्तिष्कसँ लड़ैत आ जितैत गेलाह।माएक अएलाक बाद आरुणि ई नाम बीसो बेर दिन भरिमे सुनाइ पड़ए लागल। ओकर संगी लोकनि उपरोक्त व्यावसायिक सफलताक घटना सभकेँ जखन आरुणिक माएकेँ सुनबैत रहैत

छलाह, ई सोचि जे ओ अपन मित्रक बड़ाइ कऽ रहल छलाह तँ आरुणि असहजताक अनुभव करए लगैत छलाह आ गप्पकेँ दोसर दिशि मोड़ि दैत छलाह। हुनकर माए तँ जेना हुनक विवाहक हेतु आएल छलीह। माय जखन जिद्द ठानलन्हि तँ हुनका आश्चर्य भेलन्हि कारण घरमे जिद्दक एकाधिकार तँ हुनकेटा छलन्हि। मुदा माए बूझि गेल छलीह जे हुनकर बेटा प्रैक्टिकल भए गेल छन्हि आ जिद्द केनाइ बिसरि गेल छन्हि। आरुणि सोचलन्हि जे छोटमे बड़ड जिद्द पूरा करबओने छथि तँ आब हिनकर जिद्द पूरा करबाक समय आएल अछि। विवाह फेर बच्चा। माए अपन नातिमे पतिक रूप देखलन्हि। पतिक मृत्युक पहिनहि बेटा प्रैक्टिकल बनि गेल छलन्हि। मुदा आब ई नहि होएत। जे काज बेटा नहि कए सकल से आब नैत करत। नातिक नाममे बेटा आ पति दुहुक नामक समावेश केलन्हि- आरुणि नन्द। फेर पढ़ाइ शुरु- सिद्धिरस्तु-श्री गणेशजीक अंकुश आ वैह उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिःपतिः। हुनकर बेटाकेँ पति पढ़ेलखिन्ह ओ तँ घर सम्हारैत छलीह। आब पुतोहु घर सम्हारलन्हि, बेटाकेँ तँ फुरसतिये नहि। आब बा पढेतीह नातिकेँ।

उतपत्स्येत हिमम कोऽपि समानधर्मा कालोह्मम निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।

पृथ्वी विशाल अछि आ काल निस्सीम,अनंत, एहि हेतु विश्वास अछि जे आइ नहि तँ काल्हि क्यो ने क्यो हमर प्रयासकेँ सार्थक बनाएत। आरुणि अपनाकेँ अपन माएसँ दूर अनुभव केलन्हि, किछु अस्वस्थ सेहो छथि आ वुडलैण्ड नर्सिंग होमक समीपस्थ स्थित विशालकाय अपार्टमेंटक अपन फ्लैटमे असगरहि अध्यावसनमे लीन अपन अतीतक पुनर्विश्लेषणमे रत छथि। प्रतियोगिता परीक्षा सभक उमरि बाकी छलन्हिये से दू चारिटा परीक्षामे बैसि गेलाह आ केन्द्र सरकारक ई ग्रुप बी वर्दीबला अधिकारी बनि गेलाह। माँकेँ कनेक संतोख भेलन्हि जे क्लास वन नहि मुदा सरकारी नोकरी तँ केलक, ई बिजनेस-तिजनेस तँ छोड़लक।

“चलह कनेक खा लैह, एना केने काज नहि चलतह”। आरुणिक छोटका मामा प्रेमपूर्वक दबाड़ि कए कहलन्हि। क्रिया-कर्म खतम भऽ गेल छल आब घुरबाक बेर आबि गेल छल, नोकरीक संग पिताक मार्गपर घुरबाक सेहो।

१९९५ क नवम्बरक मास।

केश कटायल मुँहेँ गामसँ दरिभङ्गा आ ओतएसँ पटनाक बस पर चढ़लाह आरुणि। किछु किताब बेचिनहार अएलाह, तुक मिलेने सभ किताबक विशेषता कहि सुनओलन्हि।खिस्सा-पिहानी, उपचार, फूलन-देवी सँ लए मनोहर पोथी धरि

सभ यात्रीगणकेँ एक-एक टा पड़सैत गेलाह।ओहिमे सँ किछु मोल-मोलाइ कएलाक उत्तर बिकएबो कएलन्हि आ सभटा वापस लए जाइत गेलाह। बससँ उतरैत काल कंडक्टरसँ वाद-विवाद सेहो भेलन्हि। फेर नेबोक रस निकालबाक यंत्रक आविष्कारक चढ़लाह, रस निकालि देखओलन्हि, खलासीसँ वाद-विवादक उपरांत ओहो उतरि गेलाह।फेर ककबा बला, पेन बला आ पेचकश बला सभ चढ़ि कए उतरैत गेलाह। पुछलाक उपरांत पता लागलन्हि जे गाड़ी साढ़े दस बजे खुजत, ई गप्प बस बला झुट्ठे बाजल छल। पछुलका बसक सवारीकेँ सीट नहि भेटल छलन्हि, से बेशी अबेरो नहि होएत आ सीटो भेटि जएत, एहि तर्कक संग मार्केटिंगक उपकरणक रूपमे ई शस्त्र छोड़ल गेल छल। गाड़ी खुजबाक समय छल ११ बजे मुदा ११ बाजि कए पाँच मिनट धरि बहस होइत रहल जे घड़ीमे ११ बाजल अछि आकि नहि। पाछाँ एगारह बाजि कए दस मिनट पर जखन बादमे जाएबला बसक कंडक्टर, अशोक मिश्रा आ शाहीक बसक बीचक भिड़ंतक बात कए झगड़ा बजारि देलक -जे एको सेकेंड ज्योँ लेट होएत तँ जे बुझु से भए जएत- तखन ड्राइवर अकस्माते हॉर्न बजाबए लागल। आरुणिक बगलक सीट पर बैसलि एकटा बूढ़ि बेटाकेँ जोरसँ बजाबए लगलीह, पाँच मिनट गरदम गोल होइत रहल। सभ यात्री चढ़ि गेलाह आ दू-चारिटा यात्री जे अखने रिक्शासँ उतरल छलाह, जोर-जोरसँ बाजए लगलाह। पछुलका बस बला हुनकर मोटा-चोटा उठा कए अपना बसमे लऽ जाए चाहैत छलन्हि मुदा ओ लोकनि पढ़ल लिखल छलाह आ अगुलके बससँ जाए चाहैत छलाह। ओ लोकनि दू-चारिटा चौधरी-कुँअरक नाम-गाम गनओलन्हि, तखन ओहि बस बलाकेँ बुझओलैक जे ई सभ फसादी लोक सभ अछि- से कहलक जे टू बाइ टूक बदला ओहि टू बाइ थ्री धक्कागाड़ीमे ठाढ़े जएबाके ज्योँ इच्छा अछि तँ हम की करू- किरायो ओ एको पाइ कम नहि लेत। से दू-चारि गोट बेशी यात्री लेबाक मनसूबा पूरा भेलाक बाद ड्राइवर गाड़ी हाँकि देलक। ओहि रिक्शा-सभ परसँ एक गोट अधवयसू व्यक्ति चढ़ल छलाह ।संयोग ई भेल जे आरुणिक दोसर बगलमे बैसल व्यक्ति गुनधुन करैत छलाह जे फलनाँ बड़ा बूड़ि अछि, एखन धरि नहि आएल। गाड़ी खुजलाक बाद अगिला चौक पर असकसा कए ओ उतरि गेलाह आ तकर बाद ओहि टू बाइ थ्री ग़ाड़ीक तीन सीट बला हीसमे आरुणिक बगलमे ओहि सज्जनकेँ जगह भेटि गेलन्हि।

आरुणिक मोन स्थिर छलन्हि आ बेशी बजबाक इच्छा नहि छलन्हि। मुदा बगलगीर पहिने अप्पन भाग्यकेँ धन्यवाद देलन्हि जकर प्रतापे हुनका सीट भेटलन्हि। पटनामे आवश्यक कार्य छलन्हि तँ लेट जाएबला बससँ गेला उत्तर काजमे भाड्ठ पड़ितन्हि। फेर अप्पन परिचय असिस्टेंट डायरेक्टरक रूपमे देलाक उपरांत ई सूचना देलन्हि जे दरिभङ्गाक संग पटनोमे हुनकर मकान छन्हि। दुनू घर अप्पन पुरुषार्थसँ बनएबाक गप्पक संग, दुनू घरक दुमहला आ मारबल आ ग्रेनाइटसँ युक्त होएबाक बातो कहलन्हि। बजबैका लोक कें सुनिनिहार लोक

बड़ड पसिन्न पड़ैत अछि से ओ आरुणिकेँ पसिन्न करए लगलाह। आ तेँ पुछलन्हि-

"पटनामे अपनेक मकान कोन महल्लामे अछि"।

आरुणि कहलखिन्ह- "अप्पन मकान नहि अछि,किराया पर छी"।

किछु कालक शांतिक पश्चात ओ सज्जन पनबट्टीसँ पान बहार कए आरुणिसँ पुछलन्हि जे-

"पान खाइत छी"।

"नहि"।

एहि उत्तरक पश्चात अप्पन विशेषज्ञता देखबैत ओ कहलन्हि, जे-

"हम तँ अहाँक दाँते देखि कए बुझि गेल छलहुँ"।

पान खेलाक बाद अप्पन बेटी सभक सासुरक चर्चा कएलन्हि। बेटाक आइ.ए.एस. केर तैयारी करबाक गप्प कएलन्हि आ कोनो ग्रुपक चर्चा सेहो कएलन्हि जे विद्यार्थी लोकनिक बीच एहि तैयारीक हेतु तैयार भेल छल आ ओहि ग्रुपमे प्रवेश मात्र प्रतिभावान लोकनिक हेतु सीमित छल। फेर आखिरीमे ईहो कहलन्हि जे ओहि प्रतिभावान ग्रुपक सदस्यता हुनकर पुत्रकेँ सेहो प्राप्त छन्हि।

आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत गाड़ी एकटा लाइन होटल पर ठाढ़ भेल। किछु यात्री एकर विरोध कएलन्हि। एक गोटे कहलन्हि जे ई ड्राइवर-कंडक्टर खेनाइ खएबाक द्वारे एहि घटिया लाइन होटलमे गाड़ी रोकैत अछि। एकर सभक खेनाइ एतए मुफ्तिया छैक आ संगहि सूचना भेटल जे मुफ्तिया की रहतैक ओकर सभक बिल यात्रीगणसँ परोक्ष रूपमे लेल जाइत छैक आ बुझु जे एकर सभक बिल यात्री सभ भरैत छथि। हुनकर ईहो अपील छलन्हि जे क्यो गोटे नहि उतरए आ हारि कऽ बसकेँ स्टार्ट करए पड़तैक। किछु कालक उपरांत एकाएकी सभ गोटे उतरैत गेलाह आ ओ सज्जन सेहो खिसियाएल उतरि फराक भऽ ठाढ़ भए मिथिलांचलक दुर्दशाक कारणक व्याख्यामे हुनकर गप्प नहि मानबाक मनोवृत्तिकेँ सेहो दोषी करारि देलथिन्ह। गाड़ी फेर खुजल आ किछु दूर आगू जा कए धक्काक संग ठाढ़ भए गेल। कंडक्टर कहलक जे सभ उतरैत जाऊ। गाड़ी पंक्चर भए गेल। लाइन होटल पर गाड़ी नहि रोकबाक अपील केनिहार सज्जनक मत छलन्हि जे लाइन होटलपर जे गाड़ी ठाढ़ भेल, तखनेसँ जतरा खराब भए गेल अछि। आब आगू देखू की-की होइत अछि। नीचाँ उतरलाक बाद चारि-चारि, पाँच-पाँच गोटेक गोला बनि गेल। ई जगह प्रायः वैशालीक आसपास छल। एक गोटे खेतक विस्तारक दिशि ध्यान देलन्हि। घर सभक ऐल-फैल होएबाक सेहो चर्चा भेल। संगहि हुनकर सभक गाम दिशि घर पर घर आ चार पर चार चढ़ल रहैत अछि आ से झगड़ाक कारण अछि, अहू पर चर्चा भेल।

आरुणिक बगलमे जे अधवयसू व्यक्ति रहथि से किछु औंघायल सन छलाह किएक तँ एहि व्यवधानसँ हुनका जे कनी-मनी भक्क लागल छलन्हि से टूटि गेल छलन्हि। हुनकर बकार लाइन होटल पर आकि नीचाँ ठाढ़ भेलापर मन्द भऽ गेल

छलन्हि, से आरुणि अनुभव कएलन्हि। फेर बस चलि पड़ल आ ओ सज्जन पुनः शुरू भए गेलाह। हाजीपुर शहर अएलापर तँ हुनक स्मृति आर तीक्ष्ण भऽ गेलन्हि।

किछु काल बस चलल तँ एकटा कॉलोनीक दिशि इशारा कए ओ कहलन्हि-

"ई छी गंगा ब्रिज कॉलोनी, की छल आ आब की भऽ गेल अछि। एक भागमे रहबाक हेतु क्वॉर्टर आ दोसर भागमे गिट्टी-छड़-सीमेंट सभ भरल रहैत छल। आब तँ कॉलोनीक मेंटेनेंसो नहि भए रहल अछि"।

आरुणि चौँकि गेलाह। कहलन्हि-

"एतय एकटा स्कूलो तँ छल"।

ओ सोझाँ इशारा दैत देखेलन्हि-

"देखू, ओतए नामो लिखल अछि। बरखा बुन्नीमे नाम अदहा-छिदहा मेटा गेल अछि"- फेर ओ चौँकि कए पुछलन्हि-

"अहाँकेँ कोना बुझल अछि"।

-हम एहि स्कूलमे पढ़ने छी।

-मुदा एहि कॉलोनीमे तँ गंगा पुल निर्माणक अभियंता लोकनि मात्र रहैत छलाह आ स्कूलमे हुनके बच्चा सभकेँ पढ़बाक हेतु एहि स्कूलक निर्माण भेल छल।

-हम सभ अही कॉलोनीमे रहैत छलहुँ।

-अहाँक पिताक नाम की छी।

-श्री नन्द ठाकुर।

पिताक मृत्यु पंद्रह दिन पहिनहि भेल रहन्हि से स्वर्गीय कहबाक हिस्सक नहि पड़ल छलन्हि।

-अहाँ ठाकुरजीक पुत्र छी।

ई कहि आरुणि दिशि ओ अपनत्वसँ बेशी ममत्वक दृष्टि देलन्हि।

"अहाँक नाम की छी"। आरुणि पुछलखिन्ह।

"आइ.ए.आजम" - ओ उत्तर देलन्हि।

तखन आरुणि हुनकर सभटा बच्चाक नाम गना देलखिन्ह। हुनकर एकटा बेटा नेहाल आजम आरुणिक क्लासमे पढ़ैत छल। आब हुनकर स्वर बदलि गेलन्हि।

-कॉलोनीमे दू गोटे खूब पूजा करैत छलाह। एकटा पाण्डे जी आ दोसर अहाँक पिताजी। पाण्डेजी तँ पूजाक संग पाइयो कमाइत छलाह। मुदा अहाँक पिताजी छलाह पूर्ण ईमान्दार आ दयालु। चंदा कए होम्योपैथिक दवाइ कानपुरसँ अनैत छलाह, आ मुफ्त इलाज कॉलोनी बलाकेँ दैत छलाह। हमर बेटीक माथमे बड़का गूर भए गेल छलैक। कोनो एलोपैथिक बलासँ ठीक नहि भेल छलैक। अहींक पिताजी ओकरा ठीक केने छलखिन्ह। इंजीनियर रहितहुँ होम्योपैथीक डिग्री हुनका रहन्हि।

ड्राइंग रूममे होम्योपैथीक छोट-पैघ, सादा-रंगीन शीशी सभ आरुणिक आँखिक सोझाँ आबि गेल।

-आइ काल्हि कतए पोस्टेड छथि। बहुत दिनसँ सम्पर्के टूटि गेल। एतुक्का बाद कतहु संगे पोस्टिंग सेहो नहि रहल। बुझू भेँट भेना पन्द्रह सालसँ ऊपर भए गेल अछि।

-पन्द्रह दिन पहिने हुनकर मृत्यु भए गेलन्हि।

आरुणिक कटायल केश दिशि देखि ओ कहलन्हि-

-हमरे सँ गल्ती भेल। केश कटेने देखियो कऽ नहि पुछलहुँ। तँ अहाँ भरि रस्ता गुम्म छलहुँ।

फेर कहए लगलाह-

-मजदूरक प्रति बड्ड चिंता रहैत छलन्हि।

तावत बस गंगा पुल पर आबि गेल छल। आगाँ फाटक पर बसकेँ टिकट कटेबाक हेतु ठाढ़ कऽ देल गेलैक। क्यो गोटे संवादो देलक जे आगू वन-वे जेकाँ अछि। एक कातमे रिपेयरिंग चलि रहल अछि। आरुणिक आगाँ दृश्य घूमि गेलन्हि। एहि पुलक निर्माणकालक पाया सभक। कॉलोनीक टूटल देबालक पजेबा सभ। ओ देबाल सभ साल टूटैत छल। पिताजी कहैत छलखिन्ह जे इंजीनियर आ ठेकेदार सभ मिलल अछि। फेर मोन पड़लन्हि सूटकेस भरल रुपैय्या। आरुणिक पिताजी एक लात मारने छलाह आ सूटकेस दूर फेका गेल रहए। एक गोट पितयौत भाए रहैत छलखिन्ह घरमे, से सभटा रुपैय्या ओहि सूटकेसमे राखि ओहि ठिकेदारकेँ देलन्हि। माँ सभकेँ भितरिया कोठली दिशि लऽ गेलीह। एक बेर नन्द पुलक पाया सभक लग आरुणिकेँ स्टीमरसँ लऽ गेल छलखिन्ह आ कहने रहथिन्ह-

-देखू। एहि पायाक निर्माणमे कतेक गोट मजदूर ऊपरसँ घिरनी जेकाँ नाचि कऽ गंगामे खसि पड़ल। सएसँ ऊपर। कतेक हमरा आँखिक सोझाँ। ओहिमेसँ मात्र किछुए परिवारकेँ कंपेन्शेसन देल गेलैक। आन सभक ने लिस्टमे नाम छैक, ने क्यो पता लगेलकैक। तैयो सभ अभियंता लोकनि ठिकेदारसँ मिलल अछि।

भक्क टूटलन्हि आरुणिक। बससँ उतरि ओहि पुलक निर्माणमे शहीद मजदूरक लिस्ट फेर देखलन्हि। बहुत कम लोकक नाम छल-प्रायः बिन कंपेंनसेशन बलाक नाम नहि रहैक। बस शुरू होएबाक सूरसार कएलक तँ आरुणि आ आजम साहब बस पर धड़फड़ा कऽ चढ़लाह।

ओ पुनः बाजए लगलाह।

-पटनामे अहाँ कहलहुँ जे किरायाक मकानमे रहए जाइत छी।

-हँ। पिताक क्रियाकर्मक हेतु गाम गेल छलहुँ, पिताक मृत्युक उपरांत माँ केर मोन ओहि घरमे नहि लगतन्हि, ताहि हेतु ओ गाममे रहि गेल छथि। आब पटना पहुँचि कऽ दोसर डेरा ताकब। ओना हम तँ कलकत्तामे नोकरी करैत छी।

-बुझू। तीस बरख पी.डबल्यु.डी. मे ईमान्दारीसँ कार्य कएलाक उत्तर एकटा घरो नहि बना सकलाह। लोक की-की नहि कए गेल। हमहुँ १९८१ क बाद अहींक पिताजीक लाइन पर चलए लगलहुँ। दू टा घरो जे बनेने छी से नामे-मात्रक दू-महला। अधखिज्जू, ऊपरमे एक-एकटा कोठली अछि। अहाँक पिताकेँ की देलकन्हि सरकार ? आ की भेटलन्हि। रिटायरमेण्टक पहिनहि मृत्यु। ने कोनो सम्मान। पुलक उद्घाटन पर दू-दू हजार सभ अभियंताकेँ सरकार देलक। ओ तँ अल्ला-भगवानक रूप छलाह। सम्मानक लालसाक हेतु काज नहि कएलन्हि। सभ वर्क्स डिवीजनमे जएबाक हेतु पैरवी करए आ ई नन-वर्क्समे जएबाक हेतु पैरवी करथि।

फेर ओ आरुणिसँ पुछलन्हि जे-

-अहाँ की करैत छी।

-पिता,माए आ भाए पटनामे रहैत छलाह, हम कलकत्तामे इंटेलीजेन्स विभागमे छी, कहियो वरदी रहैत अछि कहियो मनाही रहैत अछि।

-दरभंगोमे आ पटनो मे आउ। मायोकेँ अनियन्हु। हमर पत्नीकेँ बड्ड नीक लगतन्हि। नेहाल तँ पटनेमे अछि।

फेर अपन पटना आ दरभंगा दुनू ठामक पता अपन स्नेहिल हाथसँ पकड़बैत पटनाक हार्डिंग पार्क बस स्टैण्ड पर उतरलाह।

बाहरसँ पटना अएलापर होर्डिंगकेँ देखि आरुणि प्रसन्न भए जाइत छलाह। मुदा पिताक छायाक दूर भेलाक बाद आब एहि नगरसँ लगाव नहि प्रतियोगिता करए पड़तन्हि हुनका। ई कोन संयोगपर संयोग भऽ रहल छल। आजम साहेब आइये कोना भेटि गेलाह। पन्द्रह सालसँ किएक क्यो नहि भेटल रहथि आ अकस्मात् नियति की चाहए छन्हि हुनकासँ।

रिक्शा पकड़ि घरक लेल निकललाह। फेर सोचनी लागि गेलन्हि।

एक बेर बाबूजीकेँ कटहरक कोआ खेलाक बाद पेट फूलि गेलन्हि, दू बजे रातिमे। ईहो नहि फुराइत छलन्हि, जे बगलमे श्रवनजीक बाबूकेँ बजा लियन्हि जे कोनो डॉक्टरकेँ बजा देताह। फुरायल तँ छलन्हि मुदा कहियो गप नहि छलन्हि तँ आइ काज पड़ला पर कहितथिन्ह से हियाऊ नहि भेलन्हि। माए केबाड़ पीटि कए पड़ोसीकेँ उठेलन्हि, कनैत खिजैत रहलीह। पड़ोसी डॉक्टरकेँ बजओलक, तखन जा कए बाबूजीक जान बाँचलन्हि। माय श्राप सेहो दैत रहलखिन्ह आ ईहो कहैत रहलखिन्ह जे पाँच वर्षक बेटा रहैत छैक तँ सभ भरोस दैत छैक जे कनैत किएक छी, अहाँकेँ तँ पाँच वर्षक बेटा अछि। आ ई सभ .....जाह, अपने भोगबह हम तँ दुनियासँ चलि जाएब। बहिन कॉलेजमे पढ़ैत छलखिन्ह। कॉलेजक रस्ता पएरे जाए पड़ैत छलन्हि। आ कॉलेजसँ आगाँ स्कूल छलन्हि आरुणि दुनू भाँएक। बहिन कहलखिन्ह जे अहूँ सभ हमर संगे चलू। एक दिन दुनू भाँय संग गेबो कएल रहथि। मुदा गप बिनु केने दुनू भाँय आगू-आगू झटकैत चल गेलाह।

मोनमे ईहो भय छलन्हि जे छौड़ा सभ चीन्हि नहि जाए जे हमरा सभक ई बहिन छथि। आब ई सोचैत छथि जे चिन्हिये जाइत तँ की होइत। अपन व्यक्तित्त्वक विकासमे कमी छलन्हि ई ? बादमे पैघ भेलाह तँ माँ-बापकेँ उकटैत छथि जे घरघुस्सू आ मुँहचुरूक संज्ञा जे देलहुँ अहाँ सभ, कहियो ई सोचलहुँ, जे कोनो पड़ोसीसँ गप्प नहि करबाक, संगी-साथी नहि बनएबाक, घूमब-फिरब नहि करबाक उपदेशक पाछू -जे अहाँ सभ उपदेश देलहुँ- ओकर पाछाँ इच्छा समाजक बुराइसँ दूर करबाक छल, परंतु यैह तँ बनेलक मुँहचुरू आ घरघुस्सू सभकेँ।रातिमे माए-बापक झगड़ाक सीन सपनामे देखैत छलाह आ डरा कए उठि जाइत छलाह। पैघ भाए बहिनसँ अरुणिकेँ खूब झगड़ा होइत छलन्हि मुदा एक बेर माए-बापक झगड़ाक बाद, खूब कानल छलाह, खूब बाजल छलाह। ओहि घटनाक पहिने किछु दिनसँ भाए-बहिनसँ झगड़ाक बाद टोका-टोकी बन्द छलन्हि। सभ बेर वैह लोकनि आगाँ भऽ टोकैत छलाह। मुदा एहि बेर आरुणि कानैत-कानैत बहिनकेँ टोकलन्हि आ फेर कहियो बहिनसँ झगड़ा नहि भेलन्हि। भाए पिठिया छलन्हि, संगे पढ़ैत छलखिन्ह, ताहि हेतु ओकरासँ तँ झगड़ा होइते रहलन्हि, मुदा कम-सम।एहि सभ गपक हेतु माँ पिताजीकेँ दोषी कहथि। माँ सभसँ- पड़ोसी-संबंधी, जान-पहचानसँ गप करबासँ कहियो नहि रोकलन्हि आ कहथिन्ह जे सभटा दोष पिताक छलन्हि।एक बेर ग्लोब किनबाक जिद्द कएलन्हि आरुणि। कएक बेर समय देल गेलन्हि जे आइ अएत- काल्हि अएत। आरुणि पढ़ब छोड़ि देलन्हि। आ तखन जा कए ग्लोब अएलन्हि। बहिन अखनो कहैत छथिन्ह जे ग्लोब अनबाक जिद्दक पूरा भेलाक बाद अरुणिक पढ़ाइक लय टूटि गेलन्हि। वर्गमे स्थान प्रथमसँ नीचाँ आबि गेलन्हि आ पिताजी एकर कारण तंत्र-मंत्रमे ताकए लगलाह। एकटा तांत्रिकसँ भेँट भऽ गेलन्हि।कतेक दिन सभ गाममे रहैत जाइत गेलाह। गंगा ब्रिज कॉलोनीमे एकटा एकाउन्टेंट बाबू छलाह। ओ बाबूजीकेँ कहलखिन्ह जे अहाँ तँ घूस नहि लैत छी मुदा अहाँक पत्नी अहाँक नाम पर घूस लैत छथि। तकर बाद सभ गाम पहुँचा देल गेलाह। सभ ट्रांसफरक बाद बिहार सरकारक नौकरीमे दरमाहा बंद भऽ जाइत छैक। आ ताहि द्वारे सभ ट्रांसफरक बाद नन्द सभकेँ गाम पठा दैत छलाह। एहि क्रममे एक बेर सभ गाममे छलाह। नन्दक चिट्ठी माँक नामसँ गाम आएल छलन्हि। आरुणि पढ़ने रहथि। नन्द आरुणिक माएकेँ लिखने छलाह जे ज्योँ अहाँ घूसक पाइ लेने छी तँ लौटा दियौक। हम विजीलेंसकेँ लिखने छी, छापा पड़त, तखन पाइ निकलत तँ बड्ड बदनामी होएत।

एहि सभ परिस्थितिमे स्कूलमे आरुणि घरक परिस्थितिकेँ बिसरि जएबाक प्रयास करए लगलाह। झुट्ठेकेँ हँसए लगलाह। ई आदति पकड़ि लेलन्हि। घरक बड़ाइ करए लगलाह। लोक सभ नन्दक ईमान्दारीक तँ चर्चा करिते रहए। आरुणि घरक कलहक विषय घरक बाहर अनबासँ परहेज करए लगलाह, लोक बुझत तँ हँसत। आ बुझू जे ईमानदारीक ग्लैमरकेँ जिबैत जाइत गेलाह। सोचबाक आ गुनधुनीक आदति एहन पड़लन्हि जे सुतैत सपनामे आ जगैत

लिखबा-पढ़बा काल धरि ई सहस्त्रबाढ़नि जेकाँ पाछाँ नहि छोड़लकन्हि। दसमामे छमाही परीक्षा किछु दिन पहिने देने रहथि। कॉमर्सक परीक्षामे एकटा प्रश्न बनेलन्हि। मुदा ओ गलत बनि गेलन्हि, फेर दोसर आ तेसर बेर प्रयास केलन्हि। सभटा प्रश्नक उत्तर अबैत छलन्हि मुदा पहिले प्रश्नक उत्तर पूरा नहि भऽ रहल छलन्हि। कॉपीकेँ अंगाक नीचाँमे नुका लेलन्हि। आ पानि पीबाक बहन्ने जे बहरेलाह तँ घर पहुँचि गेलाह। पढ़ैत-पढ़ैत सोचए लगैत छलाह। एक्के पन्ना उनटेने घंटा बीति जाइत छलन्हि। चिड़ियाखाना गेल रहथि एक बेर। किछु गोटे हुनकर सभक सर-संबंधी लोकनि ओतए हुनका सभकेँ भेटि गेलखिन्ह। बड़ड हाइ-फाइ सभ। ओना तँ कहलखिन्ह किछु नहि मुदा हुनकर सभक बगेबानी देखि कए आरुणिमे हीन भावना अएलन्हि। चुप्पे भीड़मे निकलि घरक लेल पहुँचि गेलाह। जेबीमे पाइ नहि रहन्हि से पएरे निकलि गेलाह। ओतए चिड़ियाखानामे सभ डराइत रहल जे कतए हरा गेल। सभ घर पहुँचल तँ सभकेँ फुसियेँ कहलन्हि जे सत्ते भोथला गेल रहथि। सत्त बात ककरो नहि बतेलन्हि।सभ लोक जे भेटथिन्ह यैह कहथिन्ह जे अहाँ फलनाक बेटा छी। बेचारे भगवाने छथि। ऑफिसमे पिताक दरमाहाक लेल पे-स्लिप बनबाबए पड़ैत रहन्हि। एक बेर आरुणि पे-स्लिप बनबए गेल छलाह। किरानी बाबू बाजल- हिनकर पिताक पे-स्लिप बिना पाइ लेने बना दियन्हु। पिताजीसँ नहि तँ सहकर्मी खुश छलन्हि नहिये ठीकेदार सभ। सहकर्मी एहि लऽ कए जे नहि स्वयं कमाइत अछि, नहिये दोसराकेँ कमाय दैत अछि। पैघभायक गिनती बच्चामे बदमाशमे होइत छलन्हि। एक बेर ट्रांसफरक बाद जखन सभ गाम गेलाह, तँ पैघ भाय जे सभक फुलवाड़ीसँ नीक-नीक गाछ उखाड़ि कय अपना घरक आगाँ लगा लैत छलाह, से आब एकहि सालमे दब्बू, सभसँ पाछू बैसनिहार विद्यार्थीक गिनतीमे आबि गेलाह। ओहि बेर ट्रांसफरक बादक गाममे निवास किछु बेशी नमगर भऽ गेल छलन्हि। फेर मुख्यमंत्री पदक दावेदार एकटा नेताजी जखन गाममे वोट मँगबाक लेल अएलाह तखन काका हुनकासँ भेँट कएलन्हि आ कहलखिन्ह जे हमर भाएकेँ वर्क्ससँ नन-वर्क्स मे ट्रांसफर कए दियौक, बच्चा सभ पोसा जएतैक।नेताजी कहलन्हि जे ज्योँ हम जीति गेलहुँ तँ ई काज तँ हम जरूर करब। वर्क्समे जएबाक पैरवी तँ बहुत आएल मुदा नन-वर्क्समे जएबाक हेतु ई पहिले पैरवी छी।संयोग एहन भेल जे ओ नेताजी जीति गेलाह आ मुख्यमंत्री सेहो बनि गेलाह। ओ शपथ ग्रहण केलाक बाद ई काज धरि केलन्हि जे पिताजीक ट्रांसफर कए देलखिन्ह। आ नन्दक परिवार पुनः शहर आबि गेल रहन्हि । गाममे रहथि तँ एक गोटे जे आरुणिक भाएक संगी छलाह, ककरो अनका प्रसंगमे कहने छलाह।हुनकर अनुसार- संगीक माएक स्वभाव तीव्र छलन्हि आ ओ खेनाइ खाइते काल झगड़ा करए लगैत छलीह। मुदा ओहि दिन ककरो अनका ओ आर तीव्र स्वभावक देखने छलाह।खराब आर्थिक स्थितिक उपरांत होअएबला कलहक परिणाम आरुणि देखि रहल छलाह। दू टा घटना हुनका विचलित कए दैत छलन्हि। एकटा तँ इनकम टैक्स कटौतीक मास- मार्च मास।

ई घटना तँ सभ साले होइत छल, मुदा कटौती बढ़ैत-बढ़ैत एक साल आबि कए पूरा मार्च मासक दरमाहा काटि लेलक। माँ कहैत छलखिन्ह जे आब भोजन कोना चलए जयतौह। आब भीख माँगए जइहँ गऽ सभ गोटे। मुदा नन्द एकटा गामक भातिजकेँ पोस्टकार्ड पठेलन्हि आ ओ आठ सय टाका आनि कय दऽ गेलखिन्ह तखन जा कए असुरक्षाक भावना खत्म भेल छल। भीख मँगैत अखनो आरुणि ज्योँ ककरो देखैत छथि तँ मोन कलप्य लगैत छन्हि। दोसर घटना छल जखन हुनकर घरक आँगा एकटा एक्सीडेंट भेल छल आ ओकरा बाद हुनकर भाइ खेनाइ छोड़ि देने छलाह आ कानि-कानि कए आँखि लाल कए लेने छलाह। नन्द जखन बुझबए लगलाह तँ ओ जवाब देलन्हि-

-अहाँकेँ ज्योँ किछु भऽ जएत तखन हमरा सभक की होएत।

पिताजी इंश्योरेंस बेनीफिट, जी.पी.एफ., ग्रेच्युटी आदिक हिसाब लगाय पुत्रकेँ बुझेलन्हि जे ९९००० रुपय्या तँ तुरत भेटत आ फेर महिने-महिने पेंशनो भेटत। लगभग एक घंटा तक बाबूजी पैघ पुत्रकेँ बुझबैत रहलाह। एक बेर आरुणिक ओहिठाम एक गोट पीसा आयल छलाह। आइयो घरमे क्यो अबैत छथि तँ सभ सुरक्षित अनुभव करैत छथि। नन्द पीसाक सार भेलखिन्ह से एहि ओह्दासँ हँसी सेहो चलि रहल छल।ओ कहलन्हि जे नन्दे जेकाँ ईमानदार एकटा बी.डी.ओ. साहेब झंझारपुरमे छलाह। पिताजी हुनकर मलाह छलखिन्ह, कष्ट काटि अफसर भेलाह। मुदा नन्दक जेँका हुनको घरमे खाटे टा छलन्हि। पीसा हुनका कहलखिन्ह जे कथी ले अफसर भेलहुँ, गाममे रहितहुँ आ मचान पर बैसि माछ भात खएतहुँ। माछक कारबारमे फायदा होइत।

आरुणिक बहिनक विवाहक बाद घरमे कखनो काल बहिनोइ अबैत छलखिन्ह। जमायक अबिते देरी आरुणिक माँक झगड़ा पिताजी सँ शुरू भऽ जाइत छलन्हि, किएकतँ घरमे इंतजाम तँ किछुओ रहिते नहि छल। ट्रांसफरक बाद पिताजीक अभियान घूसखोरकेँ सजा देबय पर चलल। आ जखन सरकारी तंत्र परसँ विश्वास खतम भए गेलन्हि तखन ओहि तांत्रिकक फेरमे पड़ि गेलाह। घरमे माता-पिताक बीच कलह बढ़ि गेल। एक दिन पिताजीसँ आरुणिक बहसा-बहसी भए गेलन्हि आ तीनू भाय बहिन गरा लागि कऽ कानय लगलाह। तकरा बादसँ अरुणिक भाय-बहिन सभसँ झगड़ा होयब समाप्त भऽ गेलन्हि।

आरुणि अनेर गुनधुन करैत घरपर पहुँचलथि।

दू-तीन धरि दोसर किरायाक मकान ताकए लेल निकलल करथि आ साँझमे वैह गुनधुनी।

एक बेर घर आबि रहल छलाह स्कूलसँ।

घर अबैत काल मोन कोना दनि कऽ रहल छलन्हि। स्कूलसँ घर आबि रहल छलाह। रस्तामे सभ क्यो एक दोसरा सँ किछु असंभव घटित होएबाक गप कऽ रहल छलाह। आरुणि दुनू भाए सातम कक्षामे पढ़ैत रहथि, संगहि-संग। मुदा आइ पैघ भाएक पेटमे दर्द छलन्हि से ओ टिफीनक बाद छुट्टी लऽ घर चलि गेल छलाह। स्कूलमे सभकेँ हँसैत देखैत रहथि, तँ अपन घरक स्थिति मोन पड़ि जाइत छलन्हि। ईर्ष्या सेहो होइत छलन्हि आन बच्चाक भाग्य पर। फेर मोनमे ईहो होइत छलन्हि जे हुनके सभ जेकाँ परिस्थिति होएतैक एकरो सभक। मुदा झुट्ठे प्रसन्नताक नाटक करैत जाइत अछि। घरमे माए-बापक कलहक बीच डरायल सन रहैत रहथि। लगैत रहैत छलन्हि जे ई सभ परिस्थिति कहियो खत्म नहि होएतैक। नहि तँ दोसरसँ गप्प कए सकैत छथि, नहियें ककरो अपन मोनक गप्पे कहि सकैत छथि। बेर-बखत कहियो अपन सहायताक हेतु सेहो सोर नहि कऽ सकैत छथि। माय ठीके घरघुसका, मुँहदुब्बर आदि विशेषणसँ विभूषित करैत छलखिन्ह। साँझमे घुमनाइ आकि दुर्गापूजाक मेला गेनाइ ई सभ बात हुनका सभक जीवनसँ दूर छलन्हि। एक बेर भूकम्प जेकाँ आयल छल, सभ क्यो ग्रील तोड़ि कय बहरायल, मुदा आरुणि खाट पर पड़ले रहि गेलाह। किछु तँ अकर्मण्यतावश आ किछु ई सोचि कय, जे की होयत घर टूटि देह पर खसत तँ, समस्यासँ मुक्तियो तँ भेटत। ओहि दिन स्कूलसँ घुरैत काल घरक लगमे पहुँचलाह तँ भीड़ देखि मोन हदसि गेलन्हि जे बाबूजीकेँ तँ किछु नहि भऽ गेलन्हि। घरमे पहुँचलाह तँ माँ-बहिनसँ पूछय लगलाह, जे की भेल? सभ बोल भरोस देबए लगलथिन्ह तँ आरो तामस उठए लागलन्हि।जोरसँ कानि कय बाजय लगलाह-

-बाबूजी मरि गेलाह की? कतए छन्हि हुनकर मृत शरीर।

ताहि पर बहिन कहलखिन्ह-

-नहि, हुनका किछु नहि भेलन्हि। अहाँक संगी जे मकान मालिकक बेटा अछि से ओ ओकर छोट भाए, ओकर पिता आ रिक्शाबला, चारू गोटे रिक्शापर जाइत छलाह। बेचारा रिक्शा बला विवाह कऽ कए कनियाँकेँ अन्नहिये छल। एकटा विशाल ट्रक रिक्शाकेँ धक्का मारि देलकैक। ठामहि मरि जाए गेलाह।

आरुणिक कानब खतम भए गेलन्हि। ई जे आफत आएल छलैक से आइ ककरो अनका घरमे । ओना ओ जे मृत भेल छल प्रतिदिन प्रातः आरुणिक संग डेढ़ सालसँ स्कूल जा रहल छल । सभ दिन प्रातः सीढ़ीपर ओ कॉलबेल बजबैत छलाह आ ओ सीढ़ीसँ उतरैत छल आ संगे सभ स्कूल जाइत छलाह। मोन पड़लन्हि जे काल्हि सेहो सभ दिन जेकाँ ओ कॉलबेल बजेने छलाह तँ ओकर बहिन जे चश्मा लगबैत छलि आ झनकाहि छलीह, से ऊपरसँ तमसाकेँ कहलकन्हि जे कतेक जोरसँ आ देरी धरि कॉलबेल बजबैत छी, आ सेहो जे बेर-बेर किएक बजबैत छी, आबि रहल अछि। काल्हि तँ ओ आएल मुदा आरुणि

तखनहि कहि देलखिन्ह जे काल्हिसँ हम कॉलबेल नहि बजायब, अहाँकेँ हमरा संगे जयबाक होअए तँ नीचाँ उतरि कऽ आऊ आ संग चलू। ओ नहि आएल तँ आरुणि किएक कॉलबेल बजबितथि। डेढ़ सालमे पहिल बेर भेल छल जे आरुणि कॉलबेल नहि बजेने छलाह आ ओ डेढ़ सालमे पहिल बेर स्कूल नागा कएने छल। आब आरुणिक मोनमे होमए लगलन्हि जे कतहु ओ बाजि तँ नहि देने होएत जे आरुणि काल्हिसँ कॉलबेल नहि बजओताह। मुदा किंसाइत ओकर कोनो आनो कार्यक्रम होएतैक। किएक तँ छोट भाए आ पिताक संग रिक्शासँ कतहु जा रहल छल। अस्तु आरुणि चिंतित छलाह मुदा दुःखी नहि। मोनक गप कियो बुझए नहि तँ मुँह लटकेने ठाढ़ रहथि। ओ तँ मात्र सोचने रहथि जे काल्हिसँ एकरा संगे स्कूल नहि जएताह, जएत ई असगरे। मुदा ओ तँ असगरे नहि जएत से सत्य कए देखा देलक। अरुणिक माएक आँखिमे नोर छलन्हि मुदा अरुणिक भीतर प्रसन्नता, किएक तँ हुनकर पिताजीक मृत्यु जे टरि गेल छलन्हि।

दोसर किरायाक घर तकलाक बाद दुनू भाँए सभटा समान नवका घरमे राखि माँकेँ गामसँ आनि लेलन्हि।

आरुणि अपन नोकरी पर चलि गेलाह।

"नहि एहन कोनो बात नहि अछि", ई तँ हमर सभक कार्यक अंतर्गत करइए पड़ैत छैक"।

"मुदा अहाँकेँ ई नहि बुझि पड़ैत अछि जे एहि बेर किछु बेशी क्रूर भऽ गेलहुँ अहाँ सभ?"

"क्रूरताक तँ कोनो बात नहि अछि। हमरा सभ तँ कोनो विशेष सूचनाक आधार पर कार्य करैत छी"।

"मानि लिअ जे हमरा ककरोसँ दुश्मनी अछि आ ओहि आधार पर विभागकेँ ओ अपन व्यक्तिगत स्वार्थ आ झगड़ाक हेतु प्रयोग कए सकैत अछि"।

"अहाँकेँ ककरोपर शंका अछि?"

"नहि हम तँ उदाहरण दए रहल छलहुँ"।

"नहि हमरा सभ कोनो सूचनाक आधार पर सोझे बिदा नहि होइत छी। पहिने ओकर गंवेषणा करैत छी आ तकरे बाद एतेक ठाम सर्च करबाक अनुमति भेटैत अछि"।

"मुदा आब अहाँ ई कहियो देब जे अहाँक कोनो गलती नहि अछि तँ की हमर इज्जत लौटि कए अएत"।

''एना तँ हमरा सभकेँ हाथ-पर हाथ दए बैसि जाए पड़त। मुदा अहूँक गप ठीक अछि। अहाँक प्रति ज्योँ द्वेषवश क्यो कार्य करने होएत तँ ओकरा पर कार्यवाही कएल जएत।''

''की कार्यवाही होएत। हमरा पर तँ कार्यवाही भऽ गेल। हमर सभटा बायर टूटि जएत। हम सभ एतेक पुरान छी, तीन पुस्तसँ एहि कार्यमे लागल छी। करबो करब तँ क्लेंडेस्टाइन रिमूवल करब ? सभ बायरपर तँ रेड भऽ गेल, किछु कतहु नहि भेटल से के पतियायत ?''

ओकर बातो ठीक छलैक। ई प्लाइवुडक व्यापारी एक नंबरक काजक हेतु जानल जाइत छल मुदा आरुणिकेँ जे सूचना प्राप्त भेल छलन्हि से ओकर विपरीत छल। मुदा ई रेड तँ खाली गेल। फैक्टरी, घर, डीलर सभ ठामसँ टीम खाली हाथ आएल। मुदा आब ऑफिसरकेँ की जवाब देताह। नामी कंपनी छल, अधिकारीगण डरा कऽ रेडक अनुमति आरुणिक व्यक्तिगत प्रतिष्ठाकेँ देखैत देने छलाह। हेडक्वार्टरसँ फोनपर फोन आरुणिकेँ आबि रहल छलन्हि, भोर तँ रेडमे भइये गेल छल, दस बजे ऑफिसमे रिपोर्ट देबाक हेतु कहल गेल छलन्हि। फैक्टरीक मालिक सेहो एम्हर-ओम्हरक बात लऽ कऽ दस बात सुना देलकन्हि। स्वर्णप्लाइ नाम्ना ई कंपनीक दिल्ली धरि पहुँचि छलैक। अकच्छ भऽ कऽ आरुणि भोरमे डेरा पहुँचि मोबाइल ऑफ कऽ कए ९ बजेक अलार्म लगा कऽ सुतबाक प्रयास करए लगलाह। काल्हि भोरेसँ रेड चलि रहल छल, ई कोना भेल, कोनो क्लेंडेस्टाइन रिमूवलक कच्चा पर्ची किएक नहि भेटल। केस लीक तँ नहि भऽ गेल। मुदा केसक विषयमे आरुणिकक अतिरिक्त डायरेक्टर विजीलेंसकेँ मात्र बुझल छलन्हि। ई सभ बिछौन पर सोचिते रहथि, तावत निन्द तँ नहि लगलन्हि मुदा ९ बजेक अलार्म बाजि उठल।

ऑफिसमे सभ क्यो जेना हिनके बाट ताकि रहल छलाह। कतेक गोटे ईहो सुना देलकन्हि, जे एहि केसक इंटेलिजेंस हुनको सभक लग छलन्हि मुदा एहि तरहक केसमे क्लेंडेसटाइन रिमूवलकेँ सिद्ध केनाइ मुश्किल होइत छैक, ताहि हेतु ओ लोकनि एहिमे हाथ नहि देलन्हि। कानाफूसी होमए लागल जे बड़ड हीरो बनैत छलाह आब ट्रांसफर ऑर्डर लऽ कए निकलताह डायरेक्टरक ऑफिससँ।

आरुणि डायरेक्टरक ऑफिसमे गेलाह आ सोझे किछु दिनक समय माँगि लेलन्हि। की प्लान छन्हि, एहि विषयमे गप-शप घुमा देलथि। एहि बेर कोनो प्रकारक कोनो भ्रम नहि राखए चाहैत छलाह।

आब आरुणि स्वर्ण प्लाइक फैक्टरीसँ आ ओकर डीलरसँ हटि कऽ कार्य करए लगलाह। सभटा दस्तावेजकेँ घोखि गेलाह। किछु जानकारी कागज पर सेहो लिखए लगलाह। फेर अपन प्लानक हिसाबसँ कलकत्तासँ पटना आ ओतएसँ अररियाक हेतु बिदा भऽ गेलाह।

पान तँ खाइत नहि रहथि आ चाह सेहो घरे टा मे पिबैत रहथि। मुदा लोकसँ किछु जनबाक हो तँ बिना चाह आ पानक दोकान गेने कोना काज चलत। से ओ चाह पान शुरू कएलन्हि। बाबुल दादाक गुलकन्द बला पान नीको बड़ड लागन्हि। तकरा बाद बाबुल दादा अररियाक लग पासक सभटा प्लाइवुडक फैक्टरीक लिस्ट दऽ देलकन्हि। मुदा फैक्ट्री सभक पहुँचबाक रोड सभक भगवाने मालिक रहथि। धूल-धक्करमे कहुना जा कए एकटा फैक्टरीक पता चललन्हि जे स्वर्णप्लाइकेँ सप्लाइ दैत छल, ओतुक्का दरबान आरुणिकेँ कहलकन्हि जे मालिक दोसर फैक्टरीमे बैसैत छथि, से दू टा फैक्ट्रीक पता चलि गेलन्हि आरुणिकेँ।

आरुणि थाकल-हारल ओहि फैक्टरीमे पहुँचलाह। एक गोट मारवाड़ी सज्जन बैसल रहथि।

''कतएसँ आएल छीं''।

''आएल तँ पटनासँ छी मुदा घुरब कोना से नहि बुझि पड़ैत अछि''।

''हँ, एक गोट नेताक जेलसँ बाहर गोली मारि कए हत्या कऽ देल गेल अछि। नेताजी रहथि तँ जेलमे मुदा घुमए फिरए पूर्णियाँ जेलसँ बाहर बिना निअमक निकलल रहथि। जेलर की करताह। पिछला मास एक गोट कैदीकेँ पुरनका जेलर घुमए हेतु नहि देने छलथिन्ह तँ भट्टा बजारमे गोली मारि देलकन्हि। एहि बेर जे घुमए देलखिन्ह तँ सरकार सस्पेन्ड कऽ देलकन्हि नवका जेलरकेँ। ताहि हत्याक बाद बन्दक आह्वान अछि। हमरा संगे रहू। एतए हमहू अपन गेस्ट हाउसमे रहैत छी। परिवार सिलीगुड़ीमे रहैत अछि। विवाह नहि भेल अछि। भोरमे हमरा कलकत्ता जएबाक अछि। पहिने सिलिगुड़ी अपन गाड़ीसँ जाएब तँ रूट बदलि कऽ पूर्णियाँ बस स्टैण्डमे अहाँकेँ छोड़ैत जाएब''।

युवा बजक्कर रहथि से आरुणिकेँ नीक लगलन्हि। रातिमे गेस्ट हाउसमे बहुत गप्प भेलन्हि। नेताक रंगदारीक, चन्दा बला सभ जबर्दस्ती रसीद काटि जाइत छलन्हि।

''एनामे तँ बिना क्लेनडेस्टाइन कएने घाटा भऽ जएत, हँ मजबूरी छैक। आ तकर दोषी तँ ई नेता सभ छथि। व्यापारी की करओं''।

आब मारवाड़ी युवा जकर नाम नवल छल कनेक कनछिया कऽ आरुणि दिशि देखलक। आरुणिकेँ भेलन्हि जे ओकरा कोनो शंका तँ नहि भेलैक।

''नहि क्लेंडेस्टाइन नहि करबाक तँ सिद्धांत अछि हमरा सभक। हँ किछु एडजेस्टमेंट करए पड़ैत अछि''।

आरुणिकेँ मोन पडलन्हि जे कोना स्वर्ण प्लाइक मालिको बजैत-बजैत बाजि देने छल जे करबो करब तँ क्लेनडेस्टाइन रिमूवल करब।

तखन करैत की जाइत अछि ई सभ। ओना अररियाक ई फैक्टरी स्वर्ण प्लाइक हेतु जॉब वर्क करैत छल, आ ताहि हेतु सरकारी ड्यूटीक सभ भार

स्वर्ण प्लाइ पर रहैक। ई क्लेनडेस्टाइन करियो कऽ की करत। टैक्स तँ दोसराकेँ देबाक छैक।

तखने एकटा फोन अएलैक। रिंग नमगर रहैक से आरुणिकेँ बुझबामे भांगठ नहि भेलन्हि जे ई बाहरक एस.टी.डी.कॉल अछि। ओहि कॉलक बाद एकाएक ओ युवा आरुणि दिशि ताकि कए चुप्पी लगा गेल।

भनसिया जकरा नवलजी *झा* कहि संबोधित कऽ रहल छ्लाह, खेनाइ बनि जेबाक सूचना देलकन्हि। आरुणि आ नवलक बीच मात्र औपचारिक गप भेल। फेर दुनू गोटे सूति गेलाह। भोरमे अपन वचनक अनुसार ओ युवा आरुणिकेँ पूर्णियाँ बस स्टैण्ड छोड़ि देलकन्हि। उतरबासँ पहिने आरुणि नवलसँ पुछलन्हि।

"कलकत्तामे स्वर्ण प्लाइक ऑफिस छैक। ओतहि जा रहल छी की ?"

ओ युवा हँसल।

"अहाँ विजिलेंससँ छी। हमरा काल्हि जे एस.टी.डी. आएल छल से स्वर्ण-प्लाइक कलकत्ता ऑफिससँ आएल छल। अहाँक विभागेक क्यो गोटे हुनका सभकेँ अहाँक अररिया यात्राक विषयमे सूचना देलखिन्ह। देखू हम कहने छी जे हम मात्र एडजेस्टमेंट करैत छी। आ ताहिसँ हमरा कोन फाएदा होइत अछि? टैक्स तँ हमरा लगैत नहि अछि। हँ, ताहिसँ हमरा काज भेटैत अछि। आ बाहरी छोट-मोट खर्चा, विभागक, पुलिसक, नेताक निकलि जाइत अछि। तखन बेश"।

ई कहि ओ सज्जन आरुणिकेँ हतप्रभ करैत चलि गेलाह।

आब कलकत्ता पहुँचि कए आरुणि जखन ऑफिस पहुँचलाह तँ सभकेँ बुझल रहैक जे आरुणि ताहि फैक्ट्रीक विजिट सरकारी खर्चा पर कएलन्हि अछि जकरा पर सरकार टैक्सक माफी देने छैक।

डायरेक्टरसँ भेँट कएलाक बाद आरुणि पहुँचि गेलाह पटना आ फेरसँ कलकत्ता। पुलिस थानामे घुमैत रहलाह आ पता करैत रहलाह जे स्वर्ण-प्लाइ आकि ओकर कोनो कर्मचारीक विरुद्ध कोनो केस छैक तँ नहि। मुदा ओतए तँ स्वर्ण प्लाइ बड्ड नीक छवि शुरुएसँ बनेने छल। आब आरुणि सोचमे पड़ि गेलाह। इनपुट-आउटपुट केर अनुपातसँ ई कंपनी करोड़ो रुपयाक टैक्सक चोरि कए रहल अछि। मुदा प्रमाण कोनो नहि।

आरुणि थाना सभमे अपन पता आ फोन नंबर छोड़ि देलन्हि जे ज्योँ कोनो केस एहि कंपनी किंवा एकर कर्मचारीक संबंधमे होअए तँ तकर सूचना हुनका देल जाइन्ह।अपन डायरेक्टरसँ कहलखिन्ह जे क्लोजर रिपोर्ट अखन नहि देब। देखैत छी किछु जानकारी कतहुसँ भेटैत अछि आकि नहि।

छह मासक बाद।

भोरमे रिंग भेल।

"हम कलकत्ता, साल्ट लेक थानासँ बाजि रहल छी। एक गोटे एकटा कमप्लेन लिखेने छथि जे स्वर्ण-प्लाइ ऑफिससँ पेमेन्ट लऽ कऽ घुरैत काल

हुनकर सूटकेस ऑटो बला छीनि लेलकन्हि जाहिमे किछु कैश आ चेक छलन्हि''।

''कतेक कैस आ कतेक चेक''।

''१.७९ लाख कैस आ १.८३ लाखक चेक, प्रायः कैसक कोनो इनस्योरेंस रहन्हि, ताहि द्वारे एफ.आइ.आर. करओलन्हि अछि। चेकक तँ पेमेंट स्टॉप भऽ जएत''।

आरुणि टीमक संग ओहि गोटेक घर पर छापा मारलन्हि जकर पाइ आ कैस ऑटो बला छीनि लेने छल।

छापाक बीचमे आरुणिकेँ एकटा डायरी भेटलन्हि। तकरा बाद पटना फोन कऽ अररियाक फैक्टरीसँ नवीनतम रिमूवलक रिटर्न मँगा लेलथि। फेर ओ सज्जन जिनका घरपर छापा पड़ल छल, केँ ऑफिस अनलन्हि। रस्तामे पता चलल जे ओ सज्जन नवलक बहनोइ छलाह आ अररियाक फैक्टरीक एकाउन्टेन्ट होएबाक संगहि स्वर्ण-प्लाइमे लाइजन अधिकारी सेहो छलाह।

आब सभ तथ्य सोँझा छल। जे डायरी भेटल छल ताहिमे कैस आ चेकक कॉलम बनल छल। तिथि सहित विवरण छल। चेकक भुगतानक कॉलम अररिया फैक्टरीक क्लियरेंससँ मिलि गेल छल आ ईहो सिद्ध भऽ गेल जे सभ ट्रांजेक्सनमे लगभग अदहाक पेमेंट स्वर्ण-प्लाइ द्वारा कैसमे देल जाइत छल। आ तकर विवरण नहि तँ स्वर्ण-प्लाइक खातामे रहैत छल आ नहिये अररियाक फैक्टरीमे। स्वर्णप्लाइ टैक्स सेहो मात्र चेक (पकिया) द्वारा गेल अदहा रिमूवलक पेमेंट पर दैत छल। आरुणि ई रिपोर्ट डायरेक्टर केँ दऽ देलन्हि।

एकाउन्टेन्टक अपराध बेलेबल छलैक। कोर्ट ओकरा बेलपर छोड़ि देलकैक।

''नवलक समाचार कहू। बड्ड नीक लोक अछि। मुदा किछु बतेलक नहि''।

''ओकर काल्हि अररियासँ सिल्लीगुड़ी जाइत काल सड़क दुर्घटनामे मृत्यु भऽ गेलैक किंवा करा देल गेलैक। जमाय बाबूक संग एतएसँ सोझे हमरा सभ ओतहि जाएब''। एक गोट उत्तेजित स्वर बला व्यक्ति जे एकाउन्टेन्ट बाबूकेँ लेबाक हेतु आएल छल बाजि उठल ।

''मुदा ई बूझि लिअ जे अहाँक ई सफलता हमर बुरबकीसँ भेटल अछि। ज्योँ हम कैसक इनस्योरेंस क्लेमक लालचमे नहि पड़ितहुँ तँ ई सभ नहि होइत''- जमाय बाबू बाजि उठलाह।

डायरेक्टर स्वर्णप्लाइक विरुद्ध कार्यवाहीक लेल ऑर्डर देलन्हि। स्वर्ण प्लाइक विरुद्ध करोड़ोक रुपैयाक टैक्स घोटालाक शो-कॉज नोटिस सेहो पठा देल गेल। आरुणि चिंतामग्न छलाह।

“ठीके तँ कहलक नवल। एडजेस्टमेंटे तँ कऽ रहल छल। चोरि तँ क्यो आन कऽ रहल छल। ओ तँ मात्र माध्यम छल। हमहू तँ कतहु नहि बनि गेल छी माध्यम, नवलक मृत्युक ?”

आरुणिक व्यवसायिक सफलताक बाद नोकरी मध्य सेहो सफलताक शुरुआत भऽ गेल। माध्यम बनथि वा नहि मुदा पिता जेकाँ हारताह नहि। मोन पड़ैत रहन्हि हुनका सभटा गप बीच-बीचमे ।

“कहलहुँ सुनैत छियैक। बेटी पैघ भऽ रहल अछि। बेटा सभक लेल किछु नहि कएलहुँ। अपन घरो नहि बनल। रिटायर भेलाक बाद कतए रहब ?”

“बेटीक चिन्ता नहि करू। बेटा बला अपने चलि कए अएत। हमरा सभकेँ जतेक सुविधा भेटल छल, ताहिसँ बेशी सुविधा हिनका सभकेँ भेटि रहल छन्हि। तखन पढ़थु वा नहि से ई सभ जानथि। रिटायरमेन्टक बाद गाम जा कए रहब। सात जन्म शहर दिशि घुमि कए नहि आएब”।

“क्यो सर-कुटुम अबैत छथि तँ हुनका सत्कार करबा लेल घरमे इंतजामो नहि रहैत अछि”।

“इंतजाम करबाक की जरूरति अछि। एक पैली बेशी लगा दियौक अदहनमे”।

आरुणि माए-बापक एहि तरहक वार्त्तालाप सुनि पैघ भेलथि। एक बेर हॉस्पीटलमे पिताजीकेँ देखए लेल एक गोट कुटुम्ब आएल रहथि। हुनकर गप सेहो किछु एहने बुझा पड़लन्हि।

“की कऽ लेलहुँ शरीरकेँ। ई बच्चा सभकेँ देखि कए मोहो नहि भेल। कतए पढ़ैत जाइत ई सभ। आ कोनो टा सुविधा, नहियें कोनो टा चिन्ते छल अहाँकेँ। अपनो आ एकरो सभक जिनगी बर्बाद कएलहुँ।”

तखने व्यवधान भेल। पत्नी कहलखिन्ह जे एकटा फोन होल्ड अछि-

“आरुणि। एकटा पैघ राजनीति चलि रहल अछि ऑफिसमे। अहाँक विरुद्ध षड़यंत्र चलि रहल अछि। अहाँकेँ चेतेनाइ हमर काज छल। मुदा अहाँ तँ कोनो तरहक प्रतिक्रिया दैते नहि छी”- फोन पर हुनकर वैह एकमात्र संगी रामभक्त-हनुमानक अबाज सुनि रहल छलाह आरुणि।

“आरुणि। की भऽ गेल। बाबूजी जेकाँ डराएल रहब। किछु दिनुका बाद हारि मानि ऋषि भऽ जाएब। आकि दुष्टक संहार करब। एहि दुनूमे की चुनब अहाँ”।

“चिन्ता नहि करू”- हँसैत बजलाह आरुणि फोन पर आ फोन राखि देलन्हि।

ऑफिसक एकटा लॉबी आरुणिक पाछाँ पड़ि गेल छल। ट्रांसफर-पोस्टिंग केर बाद आरुणिक ऊपर दवाब आबि गेल छल। किछु गोटे हुनकर विरुद्ध बिना-कोनो आधारक किछु कम्प्लेन कए देने छलन्हि। एकटा ऑफिसर शशांक केर हाथ छलैक एहिमे। ओकर खास-खास आदमीक पोस्टिंग मोन-मुताबिक नहि भेल रहए आ ओ प्रोमोशनमे आरुणिकेँ पाछाँ करए चाहैत छल। एहि बीचमे आरुणिक फोन किछु दिन डेड छलन्हि। तकरा बाद हुनकर फोनसँ अबुधाबी आ दुबइ फोन कएल गेल छल। मुदा ओहि समयमे सरकारी फोनमे आइ.एस.डी. केर सुविधाक हेतु टेलीफोन विभागकेँ सूचित करए पड़ैत छल। हुनकर ऑफिसक एकटा प्रशासनिक अधिकारी टेलीफोन विभागकेँ चिट्ठी लिखि कए ई सुविधा आरुणिक जानकारीक बिना करबाए देने छल। विजीलेंसक जाँचमे ओ बयान देने छल जे आरुणि एहि ऑफिसक मुख्य छथि आ हुनकर मौखिक आदेशोक पालन करए पड़ैत छन्हि हुनका। से आइ.एस.डी. केर सुविधाक लेल टेलीफोन विभागकेँ ओ आरुणिक मौखिक आदेश पर चिट्ठी लिखने छलाह। माफिया ओकरा तोड़ि लेने छल आ ओहिमे ओ प्रशासनिक अधिकारी अपनाकेँ सेहो फँसा लेने छल।

सोम दिन फैक्स आएल आ आरुणिक ट्रांसफर भऽ गेल।

“रिप्रेजेंट करू एहि आदेशक विरुद्ध”- वैह चिरपरिचित स्वर, मणीन्द्रक।

“अहूँ कोन झमेलामे पड़ल छी। सभ ठीक भऽ जएत”- बजलाह आरुणि फोन पर।

शशांकक घरपर पार्टी भेल।

“मिस्टर आरुणि रिप्रेसेन्ट तक नहि कएलन्हि। रिलीव भऽ कए चलि गेलाह। बुझू सरेन्डर कए देलन्हि अपनाकेँ”।

“प्रोमोशन बुझू जे दस साल धरि रुकल रहतन्हि। सीनियरिटी मारल जएतन्हि। बदनामी भेलन्हि से अलग। सुनैत छी जे फोनपर दुबइक स्मगलर सभसँ गप करैत छलाह”।

ओम्हर आरुणिकेँ अपन बाबूजीक ट्रांसफर, ईमानदारीक लेल कएल संघर्ष, संघर्षक विफलता आ तकर बाद हुनकर तंत्र-विद्या आ पूजा-पाठक दिशि अपनाकेँ

ओझराएब आ घर-द्वार, ऑफिस आ सांसारिकतासँ विरक्ति मोन पड़ि गेलन्हि। एहि सभ घटनाक्रमक बाद हुनकर मुँहपर एकटा चिन्ताक रेखा आएल छलन्हि। मुदा से बेशी दिन धरि नहि रहलन्हि आरुणिक मोन पर। हारिकेँ जीतमे कतोक बेर बदलने छलाह ओ। नोकरीयोमे आ ओहिसँ पहिने व्यवसायमे सेहो।

"की यौ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि। हमर ट्रांसफर भऽ गेल तँ अहाँ सभ तँ बिसरिये गेलहुँ"।

"हम की, सभ क्यो बिसरि गेल अहाँकेँ एतए"।

"अहाँ की बुझलहुँ। जे हम सेहो बिसरि गेल छी। अहाँकेँ मोन अछि। हम जखन इंटरक बाद बाबूजीक इच्छाक विरुद्ध विज्ञान छोड़ि कए कला विषय लेने छलहुँ। विज्ञानक सभटा किताब ११ बजे रातिमे पोखरिमे फेंकि देने छलियैक। कोनोटा अवशेषो नहि छोड़ने छलहुँ ओहि विषयक अपन घरमे। आ जखन कला विषयमे प्रथम श्रेणी आएल छल तखन गेल छलहुँ गाम। तकरा पहिने कतेक बरियाती छोड़ने छलहुँ, कतेक जन्म-मृत्यु। मुदा गाम नहि गेल छलहुँ"।

"एह भाई। अहाँकेँ तँ सभटा मोन अछि। हमरा तँ भेल जे अहूँ काका जेकाँ भऽ गेलहुँ। ई सभ क्षमाक योग्य नहि अछि। कनेक देखा दियौक। आब हमरा विश्वास भऽ गेल जे किछु होएत"।

"फेर वैह गप। जखन अहाँ नहि बदललहुँ तखन हम कोना बदलब। छोड़ने छलहुँ किछु दिन अपनाकेँ। आब सुनू। जे कहैत छी से टा करू। बेशी बाजब जुनि। जाहि समयक कॉल हमर टेलीफोनसँ बाहरी देश कएल गेल छल ओहि समयमे तँ हमर टेलीफोन खराब छल, ई तँ अहाँकेँ बुझले अछि। घरसँ टेलीफोन विभागकेँ कम्प्लेन सेहो लिखबाओल गेल छल। मुदा से टेलीफोने पर लिखबाओल गेल छल। कोनो लिखित पत्र आ ओकर प्राप्ति रशीद तँ अछि नहि। मुदा ई पता करू जे एहि तरहक कम्प्लेनक कोनो रेकार्ड टेलीफोन विभागक लग रहैत छैक आकि नहि"।

किछु दिनुका बाद मणीन्द्रक फोन आएल जे फोन विभाग एक महीनाक बाद कम्प्लेन नंबर फेरसँ शुरुसँ देब शुरू कए दैत छैक। से ई काज नहि भेल।

"बेश तखन ई पता करू जे हमर नंबरसँ ककरा-ककरा कोन-कोन नंबर पर विदेश फोन कएल गेल छल। आ ओहि विदेशीक फोन कोन-कोन नंबर पर आएल अछि"।

"हँ। एहि गपक तँ हमरा सुरते नहि रहल"।

आब मणीन्द्र जे टेलीफोन नंबरक सूची अनलन्हि, से सभटा टेलीफोन बूथ सभक छल। मुदा कोनो टा कॉल आरुणिक नंबर पर नहि आएल छल।

विजीलेंसक सुनबाहीमे ई सभ वर्णन जखन आरुणि कएलन्हि तखन शशांक हतप्रभ रहि गेल। ई तँ नीक भेल जे शशांकक आदमी सभ बूथ बलासँ संपर्क रखने छल, नहि तँ ओहो सभ फँसैत आ संगहि शशांकोक नाम अबैत एहि सभमे। अस्तु आरुणि जाँचसँ बाहर निकलि गेलाह।

“भाइ। हम मणीन्द्र। ओकरा सभकेँ तँ किछु नहि भेलैक।“

“हमर ट्रांसफर दिल्ली भेल अछि। देखैत छी। अहाँ निश्चिंत रहू”।

“हम तँ ओहि दिन निश्चिंत भऽ गेलहुँ जहिया अहाँ पुरनका गप सभ सुनेलहुँ। काकाक अपमानक बदला अहाँकेँ लेबाक अछि। मात्र व्यक्ति सभ बदलल अछि। चरित्र सभ वैह अछि”।

दिल्लीमे आरुणि विजीलेंस विभागक सूचना-प्रौद्योगिकी शाखामे पदस्थापित भेलाह। एहि विभागकेँ शंटिंग पोस्टिंग मानल जाइत छल। विजीलेंसक एनक्वायरीसँ बाहर निकललाक बादो आरुणि एहि पोस्टिंगके चुनलन्हि से एहिसँ तँ ईएह सिद्ध होइत अछि जे आरुणि थाकि गेलाह। पाँच साल कोनमे बैसल रहताह। शशांकक ग्रुप प्रफुल्ल छल।

एम्हर आरुणि अपन विज्ञानक छोड़ल पाठ फेरसँ शुरू कएलन्हि। भरि दिन कम्प्युटर आ ओकर तकनीकी विशेषज्ञ सभसँ भिड़ल रहथि। ओहो लोकनि बहुत दिनक बाद एहन अधिकारी देखने छलाह जे भिड़ल अछि, काजसँ। दोसर लोकनि तँ कोहुना टर्म पूर्ण कए भागैत छथि।

ओना देखल जाए तँ ई विभाग बड्ड संवेदनशील छल। आब आरुणिक अपन विभागक सभ कर्मचारीसँ बेश निकटता भऽ गेल छलन्हि। सभक आवेदन समयसँ आगू बढ़ैत छल। सभटा ऑफिसक इक्विपमेंट नव आबए लागल। पहिलुका ऑफिसर सभ तँ समय काटि भागए केर फेरमे रहैत छल आ ऑफिसक आवश्यक आवश्यकता सेहो पूर्ण नहि करैत जाइ छल।

ऑफिसमे एकटा इक्विपमेन्ट आएल छल, करप्शन रोकए लेल। एहिमे स्मगलर सभक फोन टेप करबाक सुविधा छल।

किछु दिन समय व्यतीत होइत रहल।

“मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि”।

“हम तँ आब निश्चिन्त छी भाइ”।

“हँ समय आबि गेल अछि। एकटा काज करू, स्मग्लरक संग शशांकक संबंधक संबंधमे एकटा न्यूज निकलबा दियौक अखबारमे। आगाँ सभ चीज तैयार अछि”।

ओम्हर अखबारमे खबरि निकलल आ मंत्रीक जन संपर्क पदाधिकारी जकर काज विभागक खबरिकेँ अखबारसँ काटि कए मंत्री धरि पहुँचायब छल ओहि क्लिपिंगकेँ मंत्रीजी लग पहुँचाए देलन्हि। समय समीचीन छल कारण विभागीय मंत्रीजीपर ढेर आरोप ओहि समय आएल छलन्हि, संसदक सत्र चलि रहल छल से ओ कोनो तरहक रिस्क नहि लेलन्हि। इंक्वायरीक ऑर्डर दए देलन्हि।

विजिलेंस विभागमे केश आएल। ओकर आंतरिक बैठकी होइत छल जाहिमे सूचना-प्रौद्योगिकी विभागकेँ सेहो बजाओल जाइत छल। सभ केशमे मोटा-मोटी प्रौद्योगिकी विभाग अनाधिकार प्रमाण पत्र दए दैत छल। आ केश इंक्वायरीक बाद समाप्त भऽ जाइत छल।

मीटिंगक तिथि तय भेल। मीटिंगमे आरुणि विजिलेंस कमेटीक सदस्यक रूपमे शामिल भेलाह।

"शशांक पर कोनो तरहक कोनो आरोप सिद्ध नहि होइत छन्हि। आरुणि अहाँक विभागकेँ टेलीफोन टैपिंगक उपकरण उपलब्ध करबाओल गेल छल। मुदा अपन ऑफिसमे तँ फैक्स मशीनो ६ मास किनाकए राखल रहलाक बाद लगाओल जाइत अछि, तखन ई मशीन एखनो राखले होएत आकि किछु कंवर्शेशन रेकार्डो भेल अछि"।

"श्रीमान। ई मशीन एहि मासक पहिल तिथिकेँ आएल आ ओहि तिथिसँ एकर उपयोग शुरू भऽ गेल। एहि केशमे जाहि स्मगलरक नाम आएल अछि ओकर नाम ओहि सूचीमे अछि जकर कॉल रेकॉर्ड करबाक आदेश हमरा भेटल छल। शशांकक कंवर्शेशन एहि व्यक्तिसँ नहि केर बराबर अछि। आध-आध मिनटक दू टा कंवर्शेशन। दोसर कंवर्शेशन नौ बजे रातिक छी आ एहि कंवर्शेशनक बाद ओहि स्मगलरक फोन अपन कर्मचारीकेँ जाइत छैक आ ताहूमे मात्र आध मिनट ओ लगबैत अछि"।

"ई कोन तारीखक अछि"।

"पाँच तारीखक"।

"छह तारीखक भोरमे एहि स्मगलरक ओहिठाम रेड भेल छल आ किछु नहि भेटल छल। ई सभ फोनक डिटेल दिअ आरुणि"।

"पहिल कॉलमे शशांक कहैत छथि जे साढ़े आठ बजे घर पर आबि कए भेंट करू। बड्ड जरूरी गप अछि। ओ नौ बजे दोसर कंवर्शेशनमे तमसाइत कहैत छथि जे नौ बाजि गेल आ अहाँ एखन धरि नहि अएलहुँ। एहिमे उत्तर सेहो भेटैत अछि जे ओ स्मगलर शशांकक गेट पर ठाढ़ अछि"।

"तेसर फोनमे की वार्त्तालाप अछि"।

"तेसर फोन ओ स्मगलर अपन ऑफिस स्टाफकेँ साढ़े नौ बजे करैत अछि। ओ कर्मचारीकेँ आदेश दैत अछि जे तुरत ऑफिस आऊ, हमहुँ पहुँचैत छी। बस एकर अतिरिक्त किछु नहि। कोनो एवीडेंस नहि भेटि सकल एहि केसमे। कहू तँ हम नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट दए दिअ"।

"आरुणि। की कहैत छी अहाँ। अहाँक विभाग तँ आइ धरि कोनो काज नहि कएने छल मुदा आइ तँ सभटा कड़ी जोड़ि देलहुँ अहाँ। शशांक फोन कएलक जे भेंट करू। दोसर फोन पर ओ व्यक्ति ओकर गेट पर ठाढ़ छल। तेसर फोनमे ओकर कर्मचारी ऑफिस ओतेक रातिमे की करए जाइत अछि। रेडक खबरि शशांक लीक कएलन्हि। ओ कर्मचारी सभटा कागज हटा देलक आ

हमर विभागक ऑफिसर भोरमे छुच्छ हाथ घुरि कए आबि गेलाह। आब एकटा फोन आर करू। शशांकक नंबर टेप तँ नहि भऽ सकल छल मुदा प्रक्रियाक अनुसार ओकर आवाजक सैंपल मैच करबाक चाही। ओ फोन उठायत तँ गलत नंबर कहि काटि दियौक''।

''सैह होएत''।

तखने ई प्रक्रिया कएल गेल।

''ई तँ ओपन आ शट केस अछि''- विजीलेंस कमेटीक अध्यक्ष महानिदेशककेँ बतओलन्हि। महानिदेशक शशांककेँ बजबओलन्हि आ ओकरा दू टा विकल्प देलन्हि।

''शशांक, एहि सभ घटनाक बाद अहाँ लग दू टा विकल्प अछि। विभागसँ कंपलसरी सेवा निवृत्ति लेबए पडत अहाँकेँ। नहि तँ इंक्वायरी आगाँ बढ़त''।

शशांक कंपलसरी सेवानिवृत्ति लए लेलन्हि। विभाग छोड़ि कए चलि गेलाह।

''भाइ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि''।

''भजार। हम तँ ओहि दिन निश्चिंत भऽ गेल छलहुँ जाहि दिन हमरा बुझबामे आओल जे अहाँकेँ बच्चाबला सभटा गप मोन अछि। काका आ अहाँमे कोनो अंतर नहि। मार्ग मात्र दू तरहक रहल। एहि विजयक मार्ग पर अहाँ चली ताहि हेतु कतेक कहैत छलहुँ अहाँकेँ, से मोन अछि ने। मुदा ओहि दिन जखन हमरा अहाँ बच्चाक गप सभ कहए लगलहुँ तहिये निश्चिन्त भऽ गेल छलहुँ हम''।

आरुणिक पढ़ाइक ग्राफ पिताक मोनक संग बनैत-बिगड़ैत रहैत छलन्हि। मुदा घुरि कए पुनः लक्ष्य प्राप्त करैत छलाह। नोकरीमे रहितहु ई घटना एक बेर फेर भेल छल।

आ फेर एकटा सरकारी यात्राक बाद आरुणिक भेल एक्सीडेन्ट । १५ दिन धरि वेंटीलेटर पर फेर एक साल धरि बैशाखी पर रहलाक बाद पुनः अपन पैर पर ठाढ़ भऽ गेलाह आरुणि । ओ बच्चा जे डायरी लिखैत छल कतए होएत । ओ काल्पनिक कथाकार सभटा सत्ते लिखने छल, आरुणिक भविष्यक वक्तव्य कऽ रहल छल ओ । आरुणिक डायरीमे सेहो यैह अंकित भेल-

''अप्पन माने हम्मर -आरुणिक- विषयमे गप्प करबा लेल हमरा लगमे समयक अभाब रहय लागल । किछु तँ एकर कारण रहल हम्मर अप्पन आदति आ किछु एकर कारण रहल हम्मर एक्सीडेंट, जकर कारणवस हम्मर जीवनक डेढ साल बुझा पड़ल जेना डेढ़ दिन जेकाँ बीति गेल । किछु एहि बातक दिस सेहो हम्मर ध्यान गेल जे डेढ सालमे जतेक समयक नुकसान भेल तकर क्षतिपूर्ति कोना कए होएत । तखन सामजिक संबंधकेँ सीमित करबाक विचार आएल । एहिमे हमरा बिन प्रयासक सफलता भेटि गेल छल । एकर कारण छल हमर नहि खतम

प्रतीत होमएबला बीमारी । एहिमे विभिन्न डॉक्टरक ओपिनियन, किछु गलत ऑपरेशन आ एकर सम्मिलित इम्प्रेसन ई, जे आब हमरा अपाहिजक जीवन जीबए पड़त । आनक बात तँ छोड़ू हमरा अपनो मोनमे ई बात आबए लागल छल । लगैत छल जे डॉक्टर सभ फूसियाहिँक आश्वासन दए रहल अछि । एहि क्रममे फोनसँ लऽ कए हाल समाचार पुछनिहार धरिक संख्या सेहो घटि गेल छल । से जखन अनचोक्के बैशाखी, फेर छड़ीपर अएलाक बाद हम कार चलाबए लगलहुँ तँ बहुत गोटेकेँ फेर सँ हमरा संग सामान्य संबंध बनाबएमे असुविधा होमए लगलन्हि। जे हमरासँ दूर नहि गेल रहथि तनिकासँ तँ हम जबर्दस्तीयो संबंध रखलहुँ मुदा दोसर दिशि गेल लोकसँ हमर व्यवहार निरपेक्ष रहैत छल, से पुनःसंबंध बनेबासँ लोक हतोत्साहित रहए लगलाह । दुर्दिनमे जे हमरापर हँसथि तनिकर प्रति ई व्यवहार सहानभूतिप्रदहि मानल जएत । एहिसँ समयधरि खूब बचए लागल। शुरुमे तँ लागल जेना ऑफिसमे क्यो चिन्हत आकि नहि । मुदा जखन हम ऑफिस पहुँचलहुँ तँ लागल जेना हीरो जेकाँ स्वागत भेल होअए । मुदा एहिमे ई बात संगी-साथी सभ नुका लेलक जे हमर छड़ी सँ चलनाइ हुनका सभक भीतर हाहाकार मचा रहल छलन्हि । सभ मात्र हमर हिम्मतक प्रशंसा करैत रहैत छलाह । जखन हम छड़ी छोड़ि कए चलए लगलहुँ तखन एक गोटे संगी कहलक जे आब अहाँ पुरनका रूपमे घुरि रहल छी । एहि बातकेँ हम घरपर आबि कऽ सोचए लगलहुँ । अपन चलए केर फोटोकेँ पत्नीक मदति सँ हैण्डीकैम द्वारा वीयोडीग्राफी करबएलहुँ । एकबेर तँ सन्न रहि गेलहुँ । चलबाक तरीका आबो नैंगड़ा कए दौगब सन लागल छल । पहिने तँ आर बेशी होएत मुदा संगी सभ एको रत्ती पता धरि नहि चलए देलक । बादमे घरक लोक कहलक जे ई तँ बड़ड कम अछि, पहिने तँ आर बेसी छल । तखन हमरा बुझबामे आएल जे संगीसभ आ ओ सभ जे हमरासँ लगाव अनुभव करैत छलाह, तनिका कतेक खराब लगैत होएतन्हि । तकरा बाद हमरा हुनकर सभक प्रोत्साहन आ हमर हिम्मतिक प्रशंसा करैत रहबाक रहस्यक पता चलल । अपन प्रारम्भिक जीवनक एकाकीपन आ नौकरी-चाकरी पकड़लाक बाद सार्वजनिक जीवनमे अलग-थलग पड़ि जएबाक संदेह, आशा, अपेक्षा किंवा अनुभवक बाद जे एहि तरहक अनुभव भेल से हमर व्यक्तित्वक भिन्न विकासकेँ आर दृढ़ता प्रदान केलक''।

कैकटा ऑपेरेशन भेलन्हि आ अनेस्थिशियासँ बाहर अबैत काल आरुणिकेँ लागन्हि जे ओ झोँटा बला सहस्त्रबाढ़नि झमारि कए एहि विश्वमे फेंकि दैत छन्हि हुनका ।मृत्यु पर विजय कएलन्हि आरुणि। मुदा डेढ़ बरख बाद जखन ऑफिस अएलाह तखन लोककेँ विश्वासे नहि भेलैक। मुख पर वैह चिरपरिचित हँसी। लोक सभ तँ ईहो कहैत छल जे ई एक्सीडेंट भेल नहि छल वरन् करबाओल गेल छल। कारण नवलक एक्सीडेंट जेकाँ छल ई एक्सीडेंट।